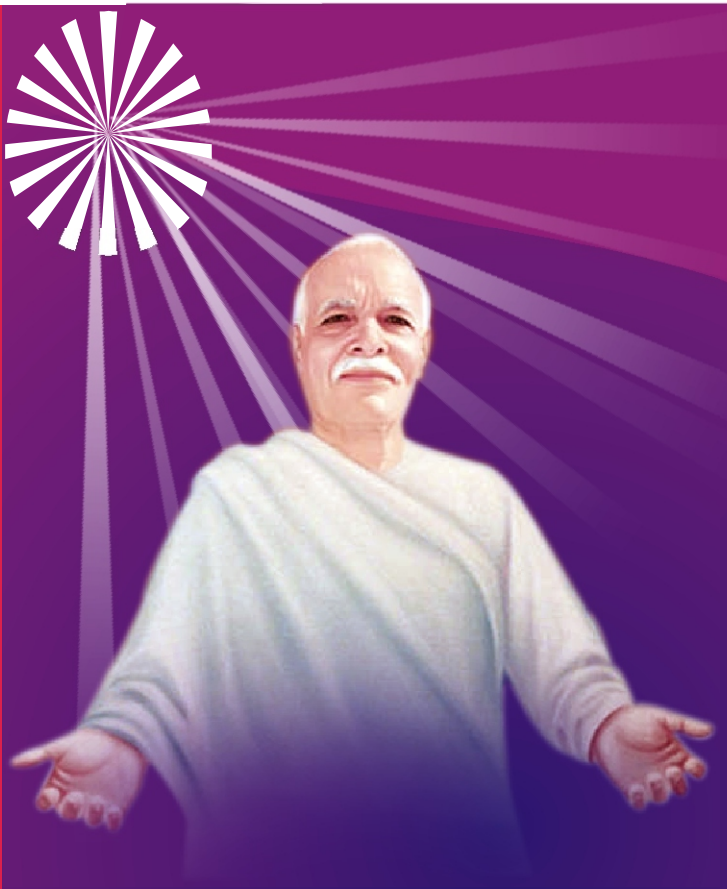

कुमारियों के प्रति प्राण प्यारे

अव्यक्त बापदादा की शुभ आशायें

कुमारी जीवन

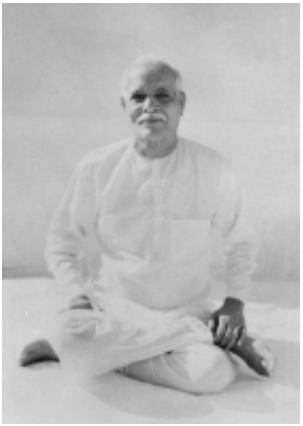

कुमारी जीवन

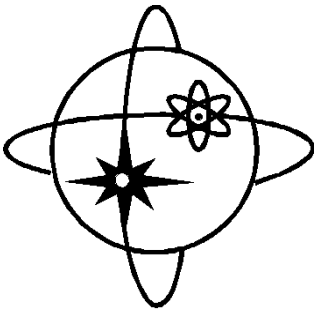

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'कुमारी जीवन'** एक है।

कुमारियों के प्रति प्राण प्यारे अव्यक्त वापदादा के महावाक्य

जो सभी कुमारियाँ आई हुई हैं उन सभी के अन्दर लक्ष्य रखकर आई हो? (कोई ने कहा भट्ठी का अनुभव करने) अनुभव करने का भी लक्ष्य क्या है। क्यों यह अनुभव करने चाहती हो (फिर एक एक ने अपना लक्ष्य बताया) टीचर्स का लक्ष्य क्या है? (टीचर्स ने भी लक्ष्य बताया)

भट्ठी में तो पकेंगे लेकिन भट्ठी में पक कर के क्या बनना है वह लक्ष्य तो क्लीयर जरूर होना चाहिए ना। क्या बनना है। और कैसा बनना है। जैसे साकार रूप में मात-पिता कर्म कर के दिखलाने की एक उदाहरण बने हैं इसी रीति एक शब्द में यही कहेंगे कि 'सम्पूर्ण और श्रेष्ठ टीचर कैसे होना चाहिए।' न सिर्फ टीचर लेकिन जैसे तीन रूप है पिता, शिक्षक, और गुरू। इस ही रीति से जगतमाता, और यज्ञ के प्रति निमित्त टीचर। साथ-साथ सद् गुरू खुद नहीं बन सकते। लेकिन सद्गुरू के साथ पूरा सम्बन्ध जुटाने वाले श्रीमत पर चलकर चलाने वाले बनना है। यह मुख्य बातें जब हर टीचर में आ जाती है तो उस टीचर की रिजल्ट सर्वोत्तम निकलती है। टीचर बनना तो सहज है लेकिन टीचरपने की क्वालीफीकेशन में मुख्य सभी संस्कार जो ज्ञान और योग के भरनी है वह बहुत जरूरी है। और जगतमाता-पने का भी, शिक्षकपने का, दिव्यगुण धारीपन का और साथ-साथ यौद्धेपन का यह सभी संस्कार हरेक जब अपने में ठीक रीति भरेंगे तब दुनिया में नाम बाला होगा। ऐसा लक्ष्य रखा है? कन्या होते हुए भी जगत-माता हो। अगर कन्या समझेंगे तो फिर कुछ न कुछ बातों में सर्वीस करते हुए भी अनासक्त रहेंगे। कन्यापन अर्थात् प्युरिटी। तो कुमारीपने का भी पुरा रखना है। लेकिन कुमारिपने के साथ-साथ बेहद जगत-माता हूँ यह भी समझना है। यह सभी आत्मायें जो तरस रहे हैं, दुःखी हो चिल्ला रहे हैं उन्हों को ज्ञान और योग से पालना करनी है। जब ऐसी अपनी वृत्ति स्मृति और दृष्टि रखेंगे तब दृष्टि में रूहानियत होंगी। जिस्मानीपना निकल जावेंगा। और रूहानी दृष्टि होती जावेंगी। हरेक को यही लक्ष्य रखना है

कि नम्बरवन मैं बन दिखाऊंगी। लेकिन वन नम्बर कैसे बनेंगे? जब अपने सर्व पुराने संस्कारों के ऊपर विन करेंगे। वही वन बनेंगे। इतनी हिम्मत और हुल्लास हरेक को अपने में रखना है। और इतनी ही कुमारियां सम्पूर्ण टीचर बनकर निकले फिर तो विनाश कितना जल्दी होगा! क्योंकि आप सम्पूर्ण बनेंगी तो फिर सृष्टि भी सम्पूर्ण चाहिए। यह असम्पूर्ण सृष्टि जल्दी-जल्दी खत्म हो सम्पूर्ण सृष्टि आ जावेंगी। फिर शक्तियों का नाम कोने-कोने में बाला होगा। सभी को मुख्य यही सोचना चाहिए कि कब भी अपने अन्दर पुराने संस्कारों को प्रगट होने न देंगे। संकल्प से ही उनको खत्म करना है। अगर संकल्प आता भी है तो संकल्प को स्थान देकर उनकी पालना नहीं करना। संकल्प को संकल्प तक ही खत्म करना है। फिर आखरीन यह हो जावेंगा। संकल्प में ही पुराने संस्कार इमर्ज नहीं होंगे। एक दो के स्वभाव भिन्न-भिन्न तो होंगे ही। लेकिन स्वभाव से बचने लिये अपने में क्या धारणा करनी चाहिए? सरलता। जितनी सरल बुद्धि, सरल दृष्टि, सरल वाणी होंगी उतना ही स्वभावों का टक्कर नहीं होंगा। (कुमारियों को) भट्ठी नाम से घबराती तो नहीं हो। यह तो मीठी भट्ठी है। इसमें ही तो सोना बनना है। कोई भी मन में मुश्किलात महसूस हो तो मन की बातें मन में ही न रखना। मन की बातें वाणी में भल ना लाना है लेकिन कहां स्थान देकर लाना है। यह किचड़ा है ना। किचड़े को कहां डाला जाता है, जो स्थान मुकरर होता है। यहां-वहां किचड़े को डाला तो फिर वह वायुमण्डल में फैल जावेंगा। इसलिये कोई भी मन में ऐसा संकल्प आवे जिसको व्यर्थ संकल्प-विकल्प कहे वह निमित्त बने हुए स्थान के सिवाए किसी से न करना। नहीं तो वायुमंडल को बिगाड़ने का निमित्त बनने से पुरूषार्थ में यह बाधा पड़ जाती है। इसलिए जैसा लक्ष्य रखा है तो कोई भी अपने सामने रूकावट डालने की बातें न रखना। मिटाते, हठाते चलते चलो। तब लक्ष्य को पा सकते। हर मुरली में लक्ष्य तो दिया ही है क्या करना है, क्या देखना है, क्या सोचना है। जैसे डायरेक्शन है उस प्रमाण ही चलते चलना है। घर में सिकीलधियां होती है तो बाप उनको श्रृंगारते हैं ना। तो आप कुमारियां कौन सी श्रृंगार करेंगी। गहनें पहने हुए हैं? हर वक्त

अपने गहनों से सजी हुई रहना। उतारना नहीं। जो रायल फैमली वाले होते हैं वह कब गहनें उतारते नहीं हैं। जो गरीब होते हैं वह कब कब पहनते हैं। आप सभी तो किसके बच्चे हो। कौन-से गहनें पहने हुए हैं? तिलक कौन-सा? (राजतिलक) राजतिलक तो आप के सतयुगी माँ-बाप देंगे। संगम युग का नया तिलक कौन सा है? विजयी बनने की विक्ट्री। आज विजयीरत्न बनने की निशानी तिलक रूप में कुमारियों को दे रहे हैं। अच्छा चीन्दी पहनी है? कौन सी चीन्दी पहननी है? चीन्दी है स्वदर्शनचक्र की। यह भी कब भूलनी न है। कुण्डल कौन सी पहननी है? (शंख) शंख ध्वनी होती रहती है। अच्छा कंगण कौन सी पहनेंगी? नियम रूपी कंगण बांधनी है। लेकिन जितनी जो नियम पालन करेंगे उतनी कंगण पड़ेंगी। कोई दस दस कंगण भी पहनते हैं। कोई एक भी पहनते हैं। ज्यादा कंगण जब होते हैं तब शोभनिक होते हैं। जितनी नियमों की पालना करते हैं उतनी ही कंगण पड़ी हुई है। अच्छा घूंघरू कौन सी पहनेंगे? घूंघरू में आवाज़ होता है ना। तो ज्ञान घूंघरू की आवाज़ सभी सुने। कृष्ण के लिये कहते हैं घूंघरू के आवाज़ से गोपिकाएं आती थी। तुम्हारे ज्ञान घूंघरू के आवाज़ से कौन आवेंगे। आप के भक्त और आप की प्रजा। जितना सुरीला आवाज़ होगा वैसे-वैसे आकर्षण होंगी। यह सभी गहनें हर वक्त पहने ही रहना चाहिए। कहां माया उतार न दे। उतारने वाली भी बड़ी तेज़ है। प्यार-प्यार से उतार भी देती है। इसलिए कब उतारने न देना।

कुमारियां है तो उम्मीदवार लेकिन कौन सी परसेन्टेज में उम्मीद पूरी करनी है वह मालूम पड़ जावेंगा। हरेक को यही सोचना है कि हम कोई कमाल कर के दिखाऊंगी। बाप दादा की जो उम्मीद है वह उम्मीद का रास्ता अपने मस्तक की बीच चमका के दिखाना है। कुमारियों का ग्रुप तो अच्छा है। टीचर्स भी अच्छे मिले हैं जहां भी जिसका गुण देखो वह जल्दी से उठाना। क्योंकि हरेक में कोई न कोई विशेष गुण होता है। तो हरेक से गुण उठाते उठाते सर्वगुण सम्पन्न बनना है। अगर अवगुण देखो तो पीठ कर लेना। खिलौना देखा है ना। सीता के सामने रावण करते हैं तो पीठ कर देती है। राम को सामने करते हैं तो सम्मुख हो जाती है। आप भी

सेता तो हो ही। गुण देखो तो धारण करना। अवगुण को देखते हुए न देखना। सुनते हुए न सुनना, न सोचना। सुनना और देखना तो दूसरी स्टेज है। लेकिन सोचना भी नहीं। इसको कहा जाता है पीठ देना।

(फिर बाप दादा ने एक एक कुमारी को विक्ट्री का टीका दिया और ऊपर में बिन्दी देते मुख मीठा कराया) इस टीके को कायम रखने की हिम्मत है ना। आज जैसे मस्तक चमक रहे हैं ऐसे ही अविनाशी चमकते रहे। अच्छा।

इस प्रकार कन्याओं के कन्हैया ने कन्याओं के ट्रैनिंग क्लास का उद्घाटन किया और सभी को हंसाते बहलाते हुए मुख मीठा कराते तथा ज्ञान रत्नों से श्रृंगारित करते करते अपने वतन पधारे। यह रही आज रविवार मार्च की दो तारीख की मधुबन की अनोखी दिनचर्या।

(02-03-1969)

कुमारियों की रिजल्ट कैसी हैं? आप अपनी रिजल्ट क्या समझती हो? विशेष किस बात में उन्नति समझती हो? (हरेक ने अपना सुनाया) याद की यात्रा में कमी है, इसलिए इतनी महसूसता नहीं होती। अमृतवेले याद का इतना अनुभव नहीं होता है। इसलिए जैसे साकार में यहाँ बाहर खुली हवा में सैर भी कराते थे, लक्ष्य भी देते थे, योग का अनुभव भी कराते थे। इसी रीति जो कुमारियों के निमित्त टीचर्स हैं वह उन्हों को आधा घण्टा एकान्त में सैर करावें। जैसे शुरू में तुम अलग-अलग जाकर बैठते थे सागर के किनारे - कोई कहाँ, कोई कहाँ जाकर बैठते थे। ऐसी प्रैक्टिस कराओ। छतें तो यहाँ बहुत बड़ी-बड़ी हैं। फिर शाम के समय भी 7 से 7.30 तक - यह समय विशेष अच्छा होता है। जैसे अमृतवेले का सतोगुणी टाइम होता है वैसे यह शाम का टाइम भी सतोगुणी होता है। सैर पर भी इसी टाइम निकलते हैं। उसी समय संगठन में योग कराओ और बीच-बीच में अव्यक्ति रूप से बोलते रहो - कोई का बुद्धियोग यहाँ वहाँ होगा तो फिर अटेन्शन खिंचेगा। योग की सबजेक्ट में बहुत कमी हैं। भाषण करना, प्रदर्शनी समझाना -

यह तो आजकल के स्कूलों की कुमारियों को एक सप्ताह की ट्रेनिंग दे दो तो बहुत अच्छा समझा लेंगी। लेकिन यह तो जीवन में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना है ना। उस समय ऐसे समझो जैसे कि बापदादा के निमन्त्रण पर जा रहे हैं। जैसे बापदादा सैर करने आते हैं वैसे बुद्धियोग-बल से तुम सैर कर सकती हो। जब याद की यात्रा का अनुभव करेंगे तो अव्यक्ति स्थिति का प्रभाव आपके नयनों से, चलन से प्रत्यक्ष देखने में आयेगा। फिर उन्हों से माला बनवायेंगे। जैसे शुरू में आप खुद माला बनाती थी ना।

इस ग्रुप को उमंग-उत्साह अच्छा है। बाकी एक बात खास ध्यान में रखनी है कि एक-दो के संस्कारों को जानकर के, एक-दो के स्नेह में एक-दो से बिल्कुल मिलजुल कर रहना है। जैसे कोई से विशेष स्नेह होता है तोउनसे कितना मिक्स हो जाते हैं। ऐसे ही सभी को एक-दो में मिक्स होना चाहिए। जब कुमारियाँ ऐसा शो करके दिखायेंगी तब फिर और भी कुमारियाँ सर्विस करने के निमित्त बनेंगी। और जो निमित्त बनता है उनको उसका फल भी मिल जाता है। आप शो-केस हो अनेक कुमारियों को उमंग-उत्साह और उन्नति में लाने की। जितना ही उमंग से साकार, निराकार - दोनों ने मिलकर यह प्रोग्राम बनाया है उतना ही इसका उजूरा दिखाना है। कई कुमारियों की उन्नति के निमित्त बन सकती हो, अपनी हमजिन्स को गिरने से बचा सकती हो। कुमारियों के साथ बापदादा का काफी स्नेह है। क्योंकि बापदादा परम पवित्र हैं और कुमारियाँ भी पवित्र हैं। तो पवित्रता, पवित्रता को खींचती है। वर्तमान समय मुख्य विशेषता यही चाहिए। हरेक महारथी का फर्ज है अपना गुण औरों में भरना। जैसे ज्ञान का दान करते हो इसलिए महारथी कहलाये जाते हो, वैसे गुणों का दान भी बहुत बड़ा दान है। ज्ञान देनाा तो सहज है। गुणों का दान देना, इसमें जरा मेहनत है। गुणों का दान करने में - सभी महारथियों में नम्बरवन कौन है? जनक। यह गुण उसमें विशेष है। तो एक-दो से यह गुण उठाना चाहिए।

(13-01-1969)

आज कुमारियों का इम्तहान लेते हैं। सभी जो पुरुषार्थ कर रहे हैं उसमें मुख्य सात बातें धारण करनी है और सात बातें छोड़नी हैं। वह कौन सी? (हरेक कुमारी ने अपना-अपना सुनाया) छोड़ने का तो सभी को सुनाते हो। 5 विकार और उनके साथ छठा है आलस्य और सातवां है भय। यह भय का भी बड़ा विकार है। शक्तियों का मुख्य गुण ही है निर्भय। इसलिए भय को भी छोड़ना है। अच्छा! अब धारण क्या करना है? अपने स्वरूप को जानना; तो स्वरूप, स्वधर्म, स्वदेश, सुकर्म, स्व-लक्ष्य, स्व-लक्षण और स्वदर्शन चक्रधारी बनना - यह 7 बातें धारण करनी हैं। इनको धारण करने से क्या बनेंगे? शीतला देवी। काली नहीं बनना है। अभी शीतला देवी बनना है। काली बनना है विकारों के ऊपर। असुरों के सामने काली बनना है। लेकिन अपने ब्राह्मण कुल में शीतला बनना है।

(20-03-1969)

अच्छा, आज कुमारियों के सर्विस का तिलक का दिन है। जैसे आप लोगों के म्युजियम में ताजपोशी का चित्र दिखाया है ना। लेकिन आपकी सर्विस के तिलक के दिवस पर देखो कितनी बड़ी सभा इकट्ठी हुई है! इतनी खुशी होती है? लेकिन यह याद रखन - जितने सभी के आगे तिलक लगा रहे हो, इतने सभी आप सभी को देखेंगे। सभी के बीच में तिलक लग रहा हैं, यह नहीं भूलना। इतना हिम्मतवान बनना है। इस तिलक की लाज रखनी है। तिलक की लाज माना ब्राह्मण कुल की लाज। ब्राह्मण कुल की मर्यादा क्या है? सुनाया ना। जो ऐसे पुरुषोत्तम बनने की हिम्मत वाले हैं वह तिलक लगा सकते हैं। यह तिलक साधारण नहीं है। वहाँ भी इतनी सारी सभा देखेगी। आप सभी ब्राह्मण इकट्ठे हुए हो कन्याओं की सर्विस के तिलक पर। सर्विस करने वाले होते हैं, उन्हों को विशेष इस बात पर ध्यान रखना है कि कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन अपनी स्थिति एकरस हो। तब आलराउण्ड सर्विस की सफलता मिलेगी।

(17-05-1969)

आप लोगों को मस्तक की रेखा परखने आती है? ज्योतिषी बने हो वा नहीं? बापदादाजो ज्ञान और योग की ज्योतिष दिखाते हैं उनसे क्या देखते हो? हरेक के मुखड़े से, नयनों से मालूम पड़ता है। इसमें भी विशेष मस्तक और नयनों से मालूम पड़ता है। आप ज्योतिषी बनकर हरेक को परख सकते हो? नयनों में और मस्तक में वह रेखायें जरूर रहती है। किसको परखना - यह भी ज्योतिष विद्या है। तो यह जो विद्या है परखने की - यह कईयों में कम है। ज्ञान और योग सीखते हैं लेकिन यह परखने की ज्योतिष-विद्या भी जाननी है। कोई भी व्यक्ति सामने आए तो आप लोगों को तो एक सेकण्ड में उनके तीनों कालों को परख लेना चाहिए - एक तो पास्ट में उनकी लाइफ क्या थी और वर्तमान समय उनकी वृत्ति-दृष्टि और भविष्य में कहाँ तक यह अपनी प्रालब्ध बना सकते हैं। यह जानने की प्रैक्टिस चाहिए। यह परखने की जो नॉलेज है वह बहुत कम है। यह कमी अभी भरनी चाहिए।

वर्तमान समय जो आने वाला है उसमें, अगर यह गुण नहीं होगा, कमी होगी तो धोखे में आ जायेंगे। कई ऐसी आत्माएं आपके सामने आयेंगी। जो अन्दर एक और बाहर से दूसरी होंगी। परीक्षा के लिए आयेंगी। क्योंकि कई समझते हैं कि यह सिर्फ रटे हुए हैं। तो कई रंग-रूप से, आर्टिफीसयल रूप में भी परखने लिए आयेंगे, भिन्न-भिन्न रूप से। इसलिए यह ध्यान रखना है कि - 'यह किसलिए आया है? उनकी वृत्ति क्या है?' और अशुद्ध आत्माओं की भी बड़ी सम्भाल करनी है। ऐसे-ऐसे केस भी बहुत होंगे। दिन-प्रतिदिन पाप आत्मायें तो बहुत होते हैं। आपदायें, अकाले मृत्यु, पाप कर्म बढ़ते जाते हैं। तो उन्हों की वासनाएं जो रह जाती हैं वह फिर अशुद्ध आत्माओं के रूप में भटकती हैं। इसलिए यह भी बहुत बड़ी सम्भाल रखनी है। कोई में अशुद्ध आत्मा की प्रवेशता होती है तो उनको भगाने के लिएएक तो धूप जलाते हैं और आग में चीज को तपाकर लगाते हैं और लाल मिर्ची भी खिलाते हैं। तो आप सभी को फिर योग की अग्नि से काम लेना है।

हर कर्मेन्द्रिय को योगाग्नि में तपाना है। फिर कोई वार नहीं कर सकेंगे। थोड़ा भी कहाँ ढीलापन हुआ, कोई भी कर्मेन्द्रिय ढीली हुई तो फिर प्रवेशता हो सकती है। वह अशुद्ध आत्माएं भी बड़ी पावरफुल होती है। वह माया की पावर भी कम नहीं होती। यह बहुत ध्यान रखना है। और कई प्राकृतिक आपदाएं भी अपना कर्तव्य करेंगी। उसका सामना करने के लिए अपने में ईश्वरीय शक्ति धारण करनी है। उस समय स्नेह नहीं रखना है, उस समय शक्तिरूप की आवश्यकता है। किस समय स्नेह मूर्त, किस समय शक्तिरूप बनना है - यह भी सोचना है। इन सभी बातों में शक्तिरूप की आवश्यकता है। अगर कोई ऐसा आया और उनको ज्यादा स्नेह दिखाया तो कहाँ नुकसान भी हो सकता है। स्नेह बापदादा और दैवी परिवार से करना है, बाकी सभी से शक्ति रूप से सामना करना है। कई बच्चे गफ़लत करते हैं जो उन्हों के स्नेह में आ जाते हैं। वह स्नेह वृद्धि होकर कमज़ोर कर देता है। इसलिए अब शक्तिरूप की आवश्यकता है।

अन्तिम नारा भी 'भारत माता शक्ति अवतार' का गायन है। गोपी माता थोड़ेही कहते हैं। अब शक्ति रूप का पार्ट है। गोपीकाओं का रूप साकार में था। अब अव्यक्त रूप से शक्ति का पार्ट है। हरेक जब अपने शक्ति रूप में स्थित होंगे तो इतने सभी की शक्ति मिला कर कमाल कर दिखायेगी! यादगार रूप में अन्तिम चित्र कौन-सा दिखाया हुआ है? पहाड़ को भी अंगुली देने का। अंगुली - यह शक्ति की देनी है। इससे ही कलियुगी पहाड़ खत्म होगा। इसमें हरेक की अंगुली की दरकार है। अभी वह अंगुली पूरी रीति नहीं दी है। उठाते जरूर है - परंतु कोई की सीधी, कोई की कभी टेढ़ी हो जाती है। जब पूरी अंगुली होगी तब प्रभाव निकलेगा। एक जैसे अंगुली देनी है। इस कलियुगी पहाड़ को जल्दी अंगुली देकर फिर सतयुगी दुनिया को लाना है। साकार के साथ स्नेह है तो जल्दी-जल्दी इस पुरानी दुनिया से चलने की तैयारी करो। आप कहेंगे - अभी सर्विस कहाँ हुई है। लेकिन सर्विस भी किसके लिए रुकी है? अगर आप हरेक शक्तिरूप में स्थित हो

जाओ तो आपके जो भूले-भटके भक्त हैं, न चाहते भी चक़मक़ (चुम्बक) के आगे आ जायेंगे, देरी नहीं लगेगी।

(18-05-1969)

मुख्य है निर्भयता का गुण, जो पेपर में नहीं दिया था। क्योंकि उसकी बहुत कमी है। एक मास के अन्दर इस निर्भयता के गुण को भी अपने में पूरा भरने की कोशिश करनी है। निर्भयता कैसे आयेगी, उसके लिए मुख्य क्या पुरुषार्थ है? निराकारी बनना। जितना निराकारी अवस्था में होंगे उतना निर्भय होंगे। भय तो शरीर के भान में आने से होता है। यह एक मास का चार्ट पहले बता देते हैं। कुमारियों का ट्रेनिंग क्लास पूरा होगा तो यह भी पूछेंगे कि सहनशक्ति, निर्भय और निश्चय की परख जो बताई - वह कहाँ तक है। इन तीनों बातों का पेपर फिर लेंगे।

कुमारियों से बापदादा का स्नेह विशेष क्यों होता है? कौन-सी खास बात है जो बापदादा का खास स्नेह रहता है? क्योंकि बापदादा समझते हैं - अगर इन्हों को ईश्वरीय स्नेह नहीं मिलेगा तो और किसी के स्नेह में लटक जायेंगी। बाप रहमदिल है ना। तो रहम के कारण स्नेह है, भविष्य बचाव के कारण विशेष स्नेह रहता है। अब देखेंगे - बापदादा के स्नेह का जवाब क्या देती हैं। अपने को बचाना है - यह है बापदादा के स्नेह का रेस्पाण्ड। किन-किन बातों में बचना है, मालूम है? एक तो मन्सा सहित प्योरिटी हो, मन्सा में कोई संशय न आये। और दूसरी बात - आपनी वाचा भी ऐसी रखनी है जो मुख से कोई ऐसा बोल न निकले। वाणी में भी कन्ट्रोल, मन्सा में भी कन्ट्रोल। वाचा ऐसी रखनी है जैसे साकार में बापदादा की थी। कर्म भी ऐसा करना है जैसे साकार तन द्वारा करके दिखाया। आप का कर्म ऐसा हो जो और भी देखर ऐसा करें। यह है कुमारियों के लिए खास। और किससे बचना है? संगदोष से तो बचना ही है, एक और विशेष बात है! अब बहुत रूप से - आत्मा के रूप से, शरीर के रूप से आप सभी को बहकाने वाले बहुत रूप सामने आयेंगे। लेकिन उसमें बहकना नहीं है। बहुत परीक्षायें आयेंगी, लेकिन है कुछ

नहीं। परीक्षाओं में पास कौन हो सकता है? जिसको परख पूरी होगी। परखने की शक्ति जितनी होगी उतना ही परीक्षाओं में पास होंगे। परखने की शक्ति कम रखते हो, परख नहीं सकते हो कि - यह किस प्रकार का विघ्न है, माया किस रूप में आ रही है और क्यों मेरे सामने यह विघ्न आया है। इससे रिजल्ट क्या है? यह परख कम होने के कारण परीक्षाओं में फेल हो जाते हैं। परख अच्छी होगी वह पास हो सकते हैं।

(26-05-1969)

वडे-से-वड़ा त्याग - अवगुणों का त्याग

सभी किस स्वरूप में बैठे हो? स्नेह रूप में बैठे हो या शक्तिरूप में बैठे हो? इस समय कौन सा रूप है? स्नेह में शक्ति रहती है? दोनों इकट्ठी रह सकती हैं? क्यों नहीं कहते हो, दोनों रूप हैं! बापदादा के साथ स्नेह क्यों है? बापदादा से स्नेह इसलिए है कि जो शिवबाबा का मुख्य टाइटिल है उसमें आप समान होना है। मुख्य टाइटिल कौन सा है? (सर्वशक्तिवान) तो सिर्फ स्नेह जो होता है तो वह कभी टूट भी सकता है लेकिन स्नेह और शक्ति दोनों का जहाँ मिलाप होता है, वहाँ आत्मा और परमात्मा का मिलाप भी अविनाशी अमर रहता है। तो अपने इस मिलन को अविनाशी बनाने के लिये क्या साधन करना पड़ेगा? स्नेह और शक्ति- दोनों का मिलाप अपने अन्दर करना पड़ेगा; तब कहेंगे आत्मा और परमात्मा का मिलाप। मेले में तो बैठे हो, लेकिन कई मेले में बैठे हुए भी दोनों के मिलाप को भूल जाते हैं।

आज तो खास कुमारियों के प्रति ही आये हैं। आज कुमारियों का कौन सा दिन है? (मिलन दिन) रिजल्ट भी आप सभी की निकली हैं? अपने रिजल्ट को खुद जान सकती हो? त्रिकालदर्शी बनी हो? इस ग्रुप से नम्बरवन कुमारी कौन निकली है? (चन्द्रिका) नम्बरवन का मुख्य कर्तव्य है - अपने जैसा नम्बरवन बनाना। कुमारियों को तो अभी एक और पेपर देना है। वह पेपर प्रैक्टिकल का, न

कि लिखने का। अभी तो एक मास की ट्रेनिंग की रिजल्ट में नम्बरवन है। लेकिन फाइनल रिजल्ट में भी नम्बरवन आ सकती है। लेकिन उसके लिये कौन सी मुख्य बात बुद्धि में रखनी है? त्याग और सेवा तो है, एक और मुख्य बात है। सभी से बड़ा बलिदान कौन सा है और सभी से बड़ा त्याग कौन सा है? दूसरों के अवगुणों को त्याग करना - यह है बड़ा त्याग। सभी से बड़ी सेवा कौन सी है? जो श्रेष्ठ सेवाधारी होंगे वह मुख्य कौन सी सेवा करेंगे? जो तीव्र पुरुषार्थी होंगे वह तीव्र पुरुषार्थ का सबूत क्या दिखावेंगे? कोई भी सामने आये तो एक सेकेण्ड में उनको मरजीवा बनाना- कहते हैं ना एक धक से मरजीवा बनना, जिसको झाटकू कहते हैं। अधूरा नहीं छोड़ना। श्रेष्ठ सेवा यह है जो उनको झट झटकू बना देना। अभी तो आप तीर मारते हो, बाहर फिर जिन्दा हो जाते हैं। लेकिन ऐसा समय आना है जो एक सेकेण्ड में नज़र से निहाल कर देंग। तब सर्विस की सफलता और प्रभाव निकलेगा। अभी मरजीवा भल बनाते हो, झाटकू नहीं बनाते हो। दो बातों की कमी है। वह बातें आ जायें तो अपना रंग दूसरों को भी चढ़ा सकती हो। आप झाटकू बनी हो? (पुरुषार्थी हैं) कहाँ-कहाँ भूल होती रहे तो उनको पुरुषार्थी कहेंगे? प्रतिज्ञा यह करनी है - 'आज से हम झाटकू बन गये है, फिर जिन्दा नहीं होंगे, पुरानी दुनिया में।' हिम्मतवान को फिर मदद भी मिलती है। हिम्मत के कारण बापदादा का स्नेह रहता है। तो दो बातों की कमी बता रहे थे। एक मुख्य कमी है - एकान्तवासी कम हो। और दूसरी कमी है- एकता में कम रहते हो। एकता और एकान्त में बहुत थोड़ा फर्क है। एकान्त स्थूल भी होती है, सूक्ष्म भी होती है। इसमें दोनों की आवश्यकता है। एकान्त के आनन्द के अनुभवी बन जायें तो फिर बाहरमुखता अच्छी नहीं लगेगीं। अभी बाहरमुखता में सभी का इन्ट्रेन्ट जास्ती जाता है। इन दो बातों की मैजारिटी में कमी है। अव्यक्त स्थिति को बढ़ाने के लिए इसकी बहुत आवश्यकता है। इसलिए ज्यादा एकान्त में रुचि रखनी है। कुमारियों को अब जाना है प्रैक्टिकल कोर्स देने।

अब कुमारियों को तीन सौगात देनी हैं। सौगात है स्नेह की निशानी। तो

तीनों सम्बन्ध से तीन सौगात देते हैं, जो कभी भूलना नहीं है। बापदादा की सौगात सदा अपने साथ रखना। सौगात छिपाकर रखनी होती है ना। तो बाप के रूप में एक शिक्षा की सौगात याद रखना। क्या शिक्षा देते हैं कि-सदैव बापदादा और जो निमित्त बनी हुई बहनें हैं और जो भी दैवी परिवार है - उन सबसे आज्ञाकारी, वफादार बनकर के चलना है। यह है बाप के रूप में शिक्षा की सौगात। और फिर टीचर के रूप में कौन सी शिक्षा की सौगात देते है? शिक्षा को ग्रहण किया जाता है ना। जहाँ भी जाओ - तो टीचर के रूप में एक तो ज्ञान ग्रहण, दूसरा गुण-ग्राहक - यह शिक्षा हमेशा याद रखना और गुरू के रूप से यही शिक्षा है - सदैव एक मत होना है, एकरस और एक के ही याद में रहना। विष्णु को जो अलंकार दिखाये हैं वह अभी शक्तिरूप में धारण करने है। यह अलंकार सदैव अपने सामने रखो। यह है बाप टीचर और गुरू तीनों सम्बन्ध से शिक्षा की सौगात - खास कुमारियों प्रति। अब देखेंगे कौन-कौन इस सौगात को साथ रखते हैं।

वह लोग भी रिफाइन बम्बस बना रहे हैं ना। तुमको भी अब रिफाइन बम्बस गिराने हैं। चींटी मार्ग की सर्विस बहुत की। बम गिराने से झट सफाई हो जाती है। तो विशेष आवाज फैलाने की सर्विस करनी है- उसको बम गिराना कहते हैं। जितना जो रिफाइन होंगे उतना रिफाइन बम फेकेंगे औरों पर। अभी आलराउण्डर बनना है। जितना-जितना बनेंगी उतना-उतना नज़दीक आयेंगी सतयुगी परिवार के। आलराउण्ड चक्र लगाकर अपना शो दिखाना, तब है ट्रेनिंग की रिजल्ट प्रैक्टिकल कोर्स के बाद फिर रिजल्ट देखेंगे। अभी फिर एक मास के बाद मधुबन में आओ तो अकेले नहीं आना है। अभी ट्रेनिंग पूरी नहीं है। प्रैक्टिकल अभी है। अकेला कोई को लौटना नहीं है। कोई न कोई का पण्डा बनकर आना है, यात्री ले आना है। बापदादा की इन कुमारियों में बहुत उम्मीद है। उम्मीदवार रत्नों को बापदादा नयनों में समाते हैं।

(16-06-1969)

तुम गाडली स्टूडेन्ट हो? डबल स्टूडेन्ट बनकर के फिर आगे का लक्ष्य क्या रखा है? ऊंच पद किसको सम-झते हो? लक्ष्मी-नारायण बनेंगे? जैसा लक्ष्य रखा जाता है तो लक्ष्य के साथ फिर और क्या धारणा करनी पड़ती है? लक्षण अर्थात् दैवीगुण। लक्ष्य जो इतना ऊंच रखा है तो इतने ऊंच लक्षण का भी ध्यान रखना है। छोटी कुमारी बहुत बड़ा कार्य कर सकती है। अपने प्रैक्टिकल स्थिति में स्थित हो किसको बैठ सुनाये तो उनका असर बड़ों से भी अधिक हो सकता है। सदैव लक्ष्य यही रखना है कि मुझ छोटी को कर्त्तव्य बहुत बड़ा करके दिखाना है। देह भल छोटी है लेकिन आत्मा की शक्ति बड़ी है। जो जास्ती पुरुषार्थ करने की इच्छा रखते हैं उनको मदद भी मिलती है। सिर्फ अपनी इच्छा को दृढ़ रखना, तो मदद भी दृढ़ मिलेगी। कितना भी कोई हिलाये लेकिन यह संकल्प पक्का रखना। संकल्प पक्का होगा तो फिर सृष्टि भी ऐसी बनेगी। भल जिस्मानी सर्विस भी करते रहो। जिस्मानी सर्विस भी एक साधन है इसी साधन से सर्विस कर सकते हो। ऐसे ही समझो कि इस सर्विस के सम्बन्ध में जो भी आत्माएं आती हैं उनको सन्देश देने का यह साधन है। सर्विस में तो कई आत्माएं कनेक्शन में आती हैं। जैसे यहाँ जो आये उन्हीं को भी सर्विस के लिये सम्बन्धियों के पास भेजा ना। ऐसे ही समझो कि सर्विस के लिये यह स्थूल सर्विस कर रहे हैं। तो फिर मन भी उसमें लगेगा और कमाई भी होगी। लौकिक को भी अलौकिक समझ करो। फिर कोई और वातावरण में नहीं आयेंगे। जैसे-जैसे अव्यक्त स्थिति होती जायेगी वैसे बोलना भी कम होता जायेगा। कम बोलने से ज्यादा लाभ होगा। फिर इस योग की शक्ति से सर्विस करेंगे। योगबल और ज्ञान-बल दोनों इकट्ठा होता है। अभी ज्ञान बल से सर्विस हो रही है। योगबल गुप्त है। लेकिन जितना योगबल और ज्ञानबल दोनों समानता में लायेंगे उतनी-उतनी सफलता होगी। सारे दिन में चेक करो कि योगबल कितना रहा, ज्ञानबल कितना रहा? फिर मालूम पड़ जायेगा कि अन्तर कितना है। सर्विस में बिज़ी हो जायेंगे तो फिर विघ्न आदि भी टल जायेंगे। दृढ़ निश्चय के आगे कोई रूकावट नहीं आ सकती। ठीक चल रहे हैं। अथक और एकरस दोनों ही गुण हैं।

सदैव फालो फादर करना है। जैसे साकार रूप में भी अथक और एकरस, एग्जाम्पुल बनकर दिखाया। वैसे ही औरों के प्रति एग्जाम्पुल बनना है। यही सर्विस है। समय भल न भी मिले सर्विस का, लेकिन चरित्र भी सर्विस दिखला सकता है। चरित्र से भी सर्विस होती है। सिर्फ वाणी से नहीं होती। आप के चरित्र उस विचित्र बाप की याद दिलायें। यह तो सहज सर्विस है ना। जैसे कई लोग अपने गुरू का वा स्त्री अपने पति का फोटो लाकेट में लगा देती है ना। यह एक स्नेह की निशानी है। तो तुम्हारा यह मस्तक जो है यह भी उस विचित्र का चरित्र दिखलाये। यह नयन उस विचित्र का चित्र दिखायें। ऐसा अविनाशी लाकेट पहन लेना है। अपनी स्मृति भी रहेगी और सर्विस भी होगी।

मधुबन में आकर मुख्य कर्त्तव्य क्या किया? जैसे कोई खान पर जाते हैं तो खान के पास जाकर क्या किया जाता है। खान से जितना ले सकते हैं उतना लिया जाता है। सिर्फ थोड़ा-सा नहीं। वैसे ही मधुबन है सर्व प्राप्तियों की खान। तो आप खान पर आये हो ना। बाकी सेवाकेन्द्र हैं इस खान की ब्रान्चेज। खान पर जाने से ख्याल रखा जाता है जितना ले सकें। तो यहाँ भी जितना ले सको ले सकते हो। यहाँ की एक-एक वस्तु एक-एक ब्राह्मण आत्मा बहुत कुछ शिक्षा और शक्ति देने वाली है। बापदादा यही चाहते हैं कि जो भी आते हैं वह थोड़ा बहुत नहीं लेकिन सभी कुछ ले लेवें। बापदादा का बच्चों में स्नेह है तो एक-एक को सम्पन्न बनाने चाहते हैं। जितना यहाँ लेने में सम्पन्न बनेंगे उतना ही भविष्य में राज्य पाने के सम्पन्न होंगे। इसलिए एक सेकेण्ड भी इन अमूल्य दिनों को ऐसे नहीं गंवाना। एक एक सेकेण्ड में पदमों की कमाई कर सकते हो। पदम सौभाग्यशाली तो हो। जो इस भूमि पर पहुँच गये हो। लेकिन इस पदम भाग्य को सदा कायम रखने के लिए पुरुषार्थ सदैव सम्पूर्णता का रखना। जैसा बीज होता है वैसा फल निकलता है। तो आप लोग जैसे बीज हो, नींव जितनी खुद मजबूत होगी उतना ही इमारत भी पक्की होगी। इसलिए सदैव समझना चाहिए कि हम नींव हैं। हमारे ऊपर सारे बिल्डिंग का आधार है।

याद का रेसपाण्ड मिलता है? बापदादा तो अब सभी के साथ हैं ही। क्योंकि साकार में तो एक स्थान पर साथ रह सकते थे। अभी तो सर्व के साथ रह सकते हैं। सदैव यह ध्यान रखो कि एक मत से एक रिजल्ट होगी। इस गुण को परिर्वतन में लाना। कैसी भी परिस्थिति आये, लेकिन अपने को मजबूत रखना है। औरों को अपने गुणों का दान देना है। जैसे दान करने से रिटर्न में भविष्य में मिलता है ना। इस गुण का दान करने से भी बड़ी प्रालब्ध मिलती है जो एक मत होते हैं वही एक को प्यारे लगते हैं। बापदादा दो होते एक हैं ना। वैसे भल कितने भी हो लेकिन एक मत होकर चलना। बाप के घर में आकर विशेष खजाना लिया? बाप के घर में विशेषताएं भरी हुई हैं ना। अपने घर में असली स्वरूप में स्थित होने आये हो अपना असली स्वरूप और असली स्थिति क्या है, वह याद आती है? आत्मा की असली स्थिति क्या है? जैसे पहले आत्मा परमधाम की निवासी, सर्व गुणों का स्वरूप है। वैसे ही यहाँ भी अपनी स्थिति का अनुभव करने के लिये लाये हो। मधुबन में आये हो उस स्थिति की टेस्ट करने। टेस्ट करने के बाद उनको सदा के लिये अपनाना है। इसका नाम ही है मधुबन। मधु अर्थात मधुरता यानि स्नेह और शक्ति दोनों ही वरदान पूर्ण रूप से प्राप्त करना। यहाँ मधुबन में दोनों-चीज वरदान रूप में मिलती हैं। फिर बाहर में जायेंगे तो इन दोनों चीज के लिये अपना पुरुषार्थ करना पड़ेगा। इसलिए यहाँ वरदान रूप में प्राप्त जो हो रहा है उनको ऐसा प्राप्त करना जो अविनाशी रहे। जब वरदान रूप में प्राप्त हो सकते हैं तो पुरुषार्थ करके क्यों लेवें। गुरू वरदान देता है तो क्या करना होता है? अपने को उसके अर्पण करना पड़ता है, तब वरदान प्राप्त होता है। तो यहाँ भी जितना अपने को अर्पण करेंगे, उतना वरदान प्राप्त होगा। वरदान तो सभी को मिलता है, लेकिन जो ज्यादा अपने को अर्पण करता है, उतना ही वरदान का पात्र बनता है। वरदान से ऐसी झोली भर लो, जो भरी हुई झोली कभी खाली न हो। जितना जो भरना चाहे वह भर सकते हैं। ऐसा ही ध्यान रखकर इन थोड़े दिनों में अथक लाभ उठाना है। एक-एक सेकेण्ड सफल करने के यह दिन हैं। अभी का एक सेकेण्ड बहुत फायदे और

बहुत नुकसान का भी है। एक सेकेण्ड में जैसे कई वर्षों की कमाई गंवा भी देते हैं ना। तो यहाँ का एक सेकेण्ड इतना बड़ा है।

त्याग से ही भाग्य बनता है। लेकिन त्याग करने के बाद मन्सा में भी संकल्प उत्पन्न नहीं होना चाहिए। जब कोई बलि चढ़ता है तो उसमें अगर जरा भी चिल्लाया वा आंखों से बूँद निकली तो उनको देवी के आगे स्वीकार नहीं करा-येंगे। झाटकू सुना है ना। एक धक से कोई चीज को खत्म करने और बार बार काटने में फर्क रहता है ना। झाटकू अर्थात् एक धक से खत्म। बापदादा के पास भी कौन से बच्चे स्वीकार होंगे? जिनको मन्सा में भी संकल्प न आये इसको कहा जाता है महाबली। ऐसे महान बलि को ही महान बल की प्राप्ति होती है। सर्वशक्तिवान के बच्चे हो और फिर शक्ति नहीं, बाप की पूरी जायदाद का हकदार बनना है ना। सर्वशक्तिवान बाप की सर्व शक्तियों की जायदाद, जन्म-सिद्ध अधिकार सदैव अपने सामने रखो। सर्वशक्तिवान के आगे कमजोरी ठहर सकती है? आज से कमजोरी खत्म। सिर्फ एक शक्ति नहीं। पाण्डव भी शक्ति रूप है। एक दीप से अनेक जगते हैं।

डबल सर्जरी करते हो? और ही अच्छा चान्स मिलता है दो मार्ग बताने का। शरीर का भी और मन का भी। जैसे स्थूल सर्विस करने से तनखाह मिलती है वैसे ही ईश्वरीय सर्विस करने से क्या तनखाह मिलती है? (स्वर्ग की बादशाही मिलती है) वह तो वहाँ मिलेगी लेकिन यहाँ क्या मिलता है? प्रत्यक्ष फल का अनुभव होता है? भविष्य तो बनता ही है लेकिन भविष्य से भी ज्यादा अभी की प्राप्ति है। अभी जो ईश्वरीय अतीन्द्रिय सुख मिलता है वह भविष्य में नहीं मिल सकता। यह अतीन्द्रिय सुख सारे कल्प में कभी नहीं मिल सकता। ऐसा खजाना अभी बाप द्वारा मिलता है। अनेक जन्म इन्द्रियों का सुख और एक सेकेण्ड में अतीन्द्रिय सुख अनुभव होता है? शिवबाबा को युगल बनाया है? वह देहधारी युगल तो सुख के साथी होते हैं लेकिन यह तो दुख के समय साथी बनता है। ऐसे युगल को तो एक सेकेण्ड भी अलग नहीं करना चाहिए। साथ रखना अर्थात्

शक्ति रूप बनना। यह ब्राह्मण परिवार देखा। इतना बड़ा परिवार कब मिलता है? सिर्फ इस संगम पर ही इतना बड़ा परिवार मिलता है। हम इतने बड़े परिवार के हैं - यह नशा रहता है? जितना कोई बड़े परिवार का होता है उतनी उसको खुशी रहती है। सारी दुनिया में हम थोडों को इतना बड़ा परिवार मिलता है। तो यह निश्चय और नशा होना चाहिए। हरेक को यह नशा होना चाहिए कि कोटों में से कोई हम गायन में आने वाली आत्माएं हैं। कभी सोचा था क्या कि ऐसा सौभाग्य प्राप्त हो सकता है? अचानक लॉटरी मिली है। लाटरी की खुशी होती है ना और फिर यह अविनाशी लॉटरी है। जो कभी खत्म हो न सके। ऐसी लॉटरी हम आत्माओं को मिली है। यह नशा रहता है? कोने-कोने से बापदादा ने देखो किन्हों को चुना है। चुने हुये रत्नों में आप विशेष हैं। यह याद रहता है। बापदादा को कौन-से रत्न अच्छे लगते हैं? साधारण। ऐसी खुशी सदैव अविनाशी रहे। वह कैसे रहेगी? जैसे दीपक होता है वह सदैव जगा रहे इसके लिये ध्यान रखते हैं। घृत और बत्ती इन दो चीजों का ख्याल रखना पड़ता है। तो यहाँ भी खुशी का दीपक सदैव जगा रहे इसके लिये दो बातें ध्यान में रखनी है। ज्ञान घृत और योग है बत्ती। अगर यह दोनों ही ठीक हैं तो खुशी का दीपक अविनाशी रहेगा। कभी बुझेगा नहीं।

15 दिन भी इस संगमयुग के बहुत हैं। ऐसे मत समझना कि हम तो 15 दिन के बच्चे हैं लेकिन संगम का समय ही अभी बहुत कम है। इस कम के हिसाब से यह 15 दिन भी बहुत हैं, इसलिए अब ऐसे ही सोचना कि लास्ट वालों को फास्ट होना है। बिछुड़े हुए जो होते हैं वह आने से ही तीव्र पुरुषार्थ में लग जाते हैं। हिम्मत बच्चे रखते हैं, मदद बाप देते हैं। एक कुमारी 100 ब्राह्मणों से उत्तम गाई जाती है। एक में 100 की शक्ति भरेंगे तो क्या नहीं कर सकते। सिर्फ अपने पांव को पक्का मजबूत बनाओ। कितना भी कोई हिलाये तो हिलना नहीं है। अचलघर भी तुम्हारा यादगार है ना। अचल अर्थात् जिसको कोई हिला न सके। तीन मास में तीन वर्सा लिये हैं? बाप दादा तीन वर्सा कौन सा देते हैं? सुख, शान्ति और शक्ति। जितना अधिकार लेंगे उतना वहाँ राज्य के अधिकारी बनेंगे। सम्पूर्ण अधिकार पाने का

लक्ष्य रखना है। क्योंकि बाप भी सम्पूर्ण है ना।

युगल रहते हुए अकेले रहते हो वा युगल रूप में रहते हो? अकेला रूप कौन सा है? आत्मा अकेली है ना। आते भी अकेले हैं। जाते भी अकेले हैं। तो युगल रूप में पार्ट बजाते भी आत्मिक स्थिति में रहना अर्थात् अकेले बनना है और फिर रूहानी युगल बनना है। तो बाप और बच्चे। वह तो हुआ देह का युगल। आत्मा और परमात्मा यह भी युगल हैं। आत्मा सजनी, सीता कहते हैं ना। परमात्मा है साजन, राम। तो रूहानी युगल मूर्त बनना है। बस। देह के युगल रूप नहीं। देहधारी का युगल रूप खत्म हुआ। अनेक जन्म देहधारियों का युगल रूप देखा। अब आत्मा और परमात्मा का युगल रूप बनना है। ऐसी स्थिति में रहते हो? इस अनोखे युगल रूप के सामने वह युगल तो कुछ नहीं। तो देह की भावना खत्म हो जायेगी। सभी से प्रिय चीज क्या है? प्रिय चीज अच्छी लगती है ना। तो उस प्रिय वस्तु को छोड़ दूसरे को प्रिय कैसे बना सकते हैं। अकेला भी बन जाना है, फिर युगल भी बनना है।

कोई को आने से ही लॉटरी मिल जाती है। कोई को प्रयत्न करने से लॉटरी मिलती। ऐसे उच्च भाग्यशाली अपने को समझते हो? कुमारों के लिये भी सरल मार्ग है। क्योंकि उल्टी सीढ़ी जो चढ़े हुए हैं, उनको उतरनी पड़ती हैं। इसलिए कुमार-कुमारियों के लिए और ही सहज है। जो बन्धन मुक्त होते हैं वह जल्दी दौड़ सकते हैं। तो सभी बातों में निर्बन्धन रहना है। कैसी भी परिस्थिति में अपनी स्थिति ऊंची रखनी है। जो उच्च जीवन का लक्ष्य है उनसे दूर नहीं होना है।

(23-01-1970)

जो गहरी नींद में सोये हुऐ भी जाग उठें। कुमारियां तो बहुत कमाल कर सकती हैं। एक कुमारी में जितनी शक्ति है तो इतनी सर्विस में सफलता दिखानी चाहिए। कुमारियां पुरुषार्थ में, सर्विस में, सभी से तेज जा सकती हैं। शक्तियां सर्विस में आगे हैं वा पाण्डव? अपना यादगार है - हम कल्प पहले वाले पाण्डव हैं।

कितने बार पाण्डव बने हो जो अनगिनत बार होती है वह पक्की याद रहती है ना। यह स्मृति रहेगी तो फिर कभी भी विस्मृति नहीं होगी। कल्प पहले भी हम ही थे अब भी हम ही हैं यह नशा और निश्चय रखना है। हम ही हकदार हैं, किसके? ऊंच ते ऊंच बाप के। यह याद रहने से फिर सदैव एकरस अवस्था रहेगी। एक की याद में रहने से ही एकरस अवस्था होगी।

अव्यक्त में सर्विस कैसे होती है? यह अनुभव होता जाता है? अव्यक्त में सर्विस का साथ कैसे सदैव रहता है। यह भी अनुभव होता है? जो वायदा किया है कि स्नेही आत्माओं के हर सेकेण्ड साथ ही है। ऐसे सदैव साथ का अनुभव होता है? सिर्फ रूप बदला है लेकिन कर्त्तव्य वही चल रहा है। जो भी स्नेही बच्चे हैं उन्हों के ऊपर छत्र रूप में नज़र आता है। छत्रछाया के नीचे सभी कार्य चल रहा है। ऐसी भासना आती है। व्यक्त से अव्यक्त, अव्यक्त से व्यक्त में आना यह सीढ़ी उतरना और चढ़ना जैसे आदत पड़ गई है। अभी-अभी वहाँ, अभी-अभी यहाँ। जिसकी ऐसी स्थिति हो जाती है, अभ्यास हो जाता है उसको यह व्यक्त देश भी जैसे अव्यक्त भासता है। स्मृति और दृष्टि बदल जाती है। सभी एवररेडी बनकर बैठे हुए हो? कोई भी देह के हिसाब किताब से भी हल्का। वतन में शुरू-शुरू में पक्षियों का खेल दिखलाते थे, पक्षियों को उड़ाते थे। वैसे यह आत्मा भी पक्षी है जब चाहे तब उड़ सकती है। वह तब हो सकता है जब अभ्यास हो। जब खुद उड़ता पक्षी बनें तब औरों को भी एक सेकेण्ड में उड़ा सकते हैं। अभी तो समय लगता है। अपरोक्ष रीति से वतन का अनुभव बताया। अपरोक्ष रूप से कितना समय वतन में साथ रहते हो? जैसे इस वक्त जिसके साथ स्नेह होता है, वह कहाँ विदेश में भी है तो उनका मन ज्यादा उस तरफ रहता है। जिस देश में वह होता है उस देश का वासी अपने को समझते हैं। वैसे ही तुमको अब सूक्ष्मवतनवासी बनना है। सूक्ष्मवतन को स्थूलवतन में इमर्ज करते हो वा खुद को सूक्ष्मवतन में साथ समझते हो? क्या अनुभव है? सूक्ष्मवतनवासी बाप को यहाँ इमर्ज करते हो वा अपने को भी सूक्ष्मवतनवासी बनाकर साथ रहते हो? बापदादा तो यही समझते हैं कि स्थूल वतन

में रहते भी सूक्ष्मवतनवासी बन जाते, यहाँ भी जो बुलाते हो यह भी सूक्ष्मवतन के वातावरण में ही सूक्ष्म से सर्विस ले सकते हो। अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर मदद ले सकते हो। व्यक्त रूप में अव्यक्त मदद मिल सकती है। अभी ज्यादा समय अपने को फरिश्ते ही समझो। फरिश्तों की दुनिया में रहने से बहुत ही हल्कापन अनुभव होगा जैसे कि सूक्ष्मवतन को ही स्थूलवतन में बसा दिया है। स्थूल और सूक्ष्म में अन्तर नहीं रहेगा। तब सम्पूर्ण स्थिति में भी अन्तर नहीं रहेगा। यह व्यक्त देश जैसे अव्यक्त देश बन जायेगा। सम्पूर्णता के समीप आ जायेंगे। जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी हैं तो भी अव्यक्त रूप के अव्यक्त देश की अव्यक्ति प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को अनुभव कराने लिए आते हैं। ऐसे आप सभी भी अपने अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ। जब अव्यक्त स्थिति की स्टेज सम्पूर्ण होगी तब ही अपने राज्य में साथ चलना होगा। एक ऑख में अव्यक्त सम्पूर्ण स्थिति दूसरी ऑख में राज्य पद। ऐसे ही स्पष्ट देखने में आयेंगे जैसे साकार रूप में दिखाई पड़ता है। बचपन रूप भी और सम्पूर्ण रूप भी। बस यह बनकर फिर यह बनेंगे। यह स्मृति रहती है। भविष्य की रूपरेखा भी जैसे सम्पूर्ण देखने में आती है। जितना-जितना फरिश्ते लाइफ के नजदीक होंगे उतना-उतना राजपद को भी सामने देखेंगे। दोनों ही सामने। आजकल कई ऐसे होते हैं जिनको अपने पास्ट की पूरी स्मृति रहती है। तो यह भविष्य भी ऐसे ही स्मृति में रहे यह बनना है। वह भविष्य के संस्कार इमर्ज होते रहेंगे। मर्ज नहीं। इमर्ज होंगे। अच्छा -

(24-01-1970)

बापदादा का अपने से साक्षात्कार कराने लिये क्या बनना पड़ेगा? कोई भी चीज का साक्षात्कार किस में होता है? दर्पण में। तो अपने को दर्पण बनाना पड़ेगा। दर्पण तब बनेंगे जब सम्पूर्ण अर्पण होंगे। सम्पूर्ण अर्पण तो श्रेष्ठ दर्पण, जिस दर्पण में स्पष्ट साक्षात्कार होता है। अगर यथायोग्य यथाशक्ति अर्पण है तो दर्पण भी यथायोग्य यथाशक्ति है। सम्पूर्ण अर्पण अर्थात् स्वयं के भान से भी

अर्पण। अपने को क्या समझना है? विशेष कुमारी का कर्तव्य यही है जो सभी बापदादा का साक्षात्कार करायें। सिर्फ वाणी से नहीं लेकिन अपनी सूरत से। जो बाप में विशेषताएं थीं साकार में, वे अपने में लानी हैं। यह है विशेष ग्रुप। इस ग्रुप को जैसे साकार में कहते थे जो ओटे सो अर्जुन समान अल्ला। तो इस ग्रुप को भी समान अल्ला बनना है। ऐसे करके दिखाना जैसे मस्तिष्क में यह तिलक चम-कता है ऐसे सृष्टि में स्वयं को चमकाना है। ऐसा लक्ष्य रखना है। सर्विस में सहयोगी होने के कारण बापदादा का विशेष स्नेह भी है। सहयोग और स्नेह के साथ अभी शक्ति भरनी है। अभी शक्तिरूप बनना है। शक्तियों में विशेष कौन सी शक्ति भरनी है? सहनशक्ति। जिसमें सहन शक्ति कम उसमें सम्पूर्णता भी कम। विशेष इस शक्ति को धारण करके शक्ति स्वरूप बन जाना है। तृप्त आत्मा जो होती है उनका विशेष गुण है निर्भयता और सन्तुष्ट रहना। जो स्वयं संतुष्ट रहता है और दूसरों को सन्तुष्ट रखता है उसमें सर्वगुण आ जाते हैं। जितना-जितना शक्तिस्वरूप होंगे तो कमजोरी सामने रह नहीं सकती। तो शक्तिरूप बनकर जाना। ब्रह्माकुमारी भी नहीं, कुमारी रूप में कहाँ-कहाँ कमजोरी आ जाती है। शक्ति-रूप में संघार की शक्ति है। शक्ति सदैव विजयी है। शक्तियों के गले में सदैव विजय की माला होती है। शक्ति-रूप की विस्मृति से विजय भी दूर हो जाती है इसलिये सदा अपने को शक्ति समझना।

(05-04-1970)

जब फरिश्ता बन गया तो फरिश्ते अर्थात् प्रकाशमय काया। इस देह की स्मृति से भी परे। उनके पांव अर्थात् बुद्धि इस पांच तत्व के आकर्षण से ऊंची अर्थात् परे होती है। ऐसे फरिश्तों को माया व कोई भी मायावी टच नहीं कर सकेंगे। तो ऐसे बनकर जाना जो न कोई मायावी मनुष्य, न माया टच कर सके। कुमारियों की महिमा बहुत गाई हुई है। लेकिन कौन सी कुमारी? ब्रह्माकुमारियों की महिमा गाई हुई है। ब्रह्माकुमारी अर्थात् ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष करने वाली

कुमारी। जो टीचर्स बनती हैं उन्हों को सिर्फ प्वाइन्ट बुद्वि में नहीं रखनी है वा वर्णन करनी है लेकिन प्वाइन्ट रूप बनकर प्वाइन्ट वर्णन करनी है। अगर स्वयं प्वाइन्ट स्थिति में स्थित नहीं होंगे तो प्वाइन्ट का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए प्वाइन्ट इकट्ठी करने के साथ अपना प्वाइन्ट रूप भी याद करते जाना। जब कापियां भरती हों तो कापी को देख यह सब चेक करना कि साकार ब्रह्मा बाप के चरित्रों की कापी बनी हूँ? कापी जो की जाती है वह तो हूबहू होगी ना। ऐसे बाप समान दिखाई पड़ो। सुनाया था ना कि जितनी समानता होगी उतनी सामना करने की शक्ति होगी। समानता लाने से सामना करने की शक्ति स्वत: आ जायेगी। अच्छा।

यह ग्रुप कम नहीं है। इतना बड़ा शक्तिदल जब कोने-कोने में सर्विस पर फैल जायेगा तो क्या होगा? आवाज बुलन्द हो जायेगा - ब्रह्माकुमारियों की जय। अभी तो गालियां देते हैं ना। यहां ही आप लोगों के सामने महिमा के पुष्प चढ़ायेंगे। इसलिए कहा कि ऐसे बनकर के जाना जो देखते ही सभी के मुख से यह आवाज़ बुलन्द हो निकले। इस ग्रुप को यह प्रैक्टिकल पेपर देना है। चारों ओर बापदादा और मददगार बच्चों की जय-जयकार हो जाये। ऐसी शक्ति है? एक के संग में रहने से संगदोष से छूट जायेंगे। सदैव चैकिंग करो कि बुद्वि का संग किसके साथ है? एक के साथ है? अगर एक का संग है तो अनेक संगदोष से छूट जायेंगे। संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देते हैं। इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप दूसरे हम, तीसरा न कोई। जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा। यहाँ का जो यादगार है उसमें योग की निशानी क्या दिखाई है? तीसरा नेत्र। अगर बुद्वि में तीसरा कोई आ गया तो फिर तीसरा नेत्र बन्द हो जायेगा। इसलिए सदैव तीसरा नेत्र खुला रहे, इसके लिए यह याद रखना कि तीसरा न कोई।

(25-03-1971)

दिलवाला मन्दिर है तपस्वी कुमार और तपस्वी कुमारियों का यादगार। और सदैव नशे में स्थित रहने का यादगार कौन-सा है? अचलघर। सदैव उस नशे में रहने से अचल, अड़ोल बन जायेंगे। फिर माया संकल्प रूप में भी हिला नहीं सकती। ऐसे अचल बन जायेंगे। यादगार है ना कि रावण सम्प्रदाय ने पांव हिलाने की कोशिश की लेकिन जरा भी हिला न सके। ऐसा नशा रहता है कि यह हमारा यादगार है या समझते हो कि यह बड़े-बड़े महारथियों का यादगार है? यह मेरा यादगार हैं - ऐसा निश्चय बुद्धि बनने से विजय अवश्य प्राप्त हो जाती है। यह कभी भी नहीं सोचो कि यह कोई और महारथियों का है, हम तो पुरुषार्थी हैं। अगर निश्चय में, स्वरूप की स्मृति में ही कमज़ोरी होगी तो कर्म में भी कमजोरी आ जायेगी। तो सदैव हर संकल्प निश्चयबुद्धि का होना चाहिए। कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हो। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हो तो अब वह रिपीट नहीं करेंगे? वही बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है। इसलिए कहा जाता है कि बना बनाया....। बना हुआ है लेकिन अब फिर से रिपीट कर 'बना बनाया' जो कहावत है उसको पूरा करना है। जब निश्चय हो जाता है कि मैं यह हूँ वा यह मुझे करना ही है, मैं कर सकता हूँ तब वह नशा चढ़ता है। निश्चय नहीं तो नशा भी नहीं चढ़ता और निश्चय है तो नशे की स्थिति के सागर में लहराते रहेंगे। ऐसे स्थिति का अनुभवी मूर्त जब बन जायेंगे तो आपकी मूर्त से सिखलाने वाले की सूरत दिखाई देगी। तो ऐसे अनुभवीमूर्त हो जो बाप और शिक्षक की सूरत आपकी मूर्त से प्रत्यक्ष हो। ऐसे बने हो वा बन रहे हो? सफलता के सितारे हो वा उम्मीदवार सितारे हो। सफलता तो जन्मसिद्ध अधिकार है। क्योंकि जब सर्वशक्तिवान कहते हो; तो असफलता का कारण है शक्तिहीनता। शक्ति की कमी के कारण माया से हार खाते हैं। जब सर्वशक्तिवान बाप की स्मृति में रहते हैं तो सर्वशक्तिवान के बच्चे होने के कारण सफलता तो जन्मसिद्ध अधिकार हो

गया। हर सेकेण्ड में सफलता समाई हुई होनी चाहिए। असफलता के दिन समाप्त। अब सफलता हमारा नारा है - यह स्मृति में रखो।

(24-05-1971)

तीनों लोकों में बापदादा के पास रहने वाले रत्नों की निशानियाँ

यह कौन सा ग्रुप है? इस ग्रुप को सज़ाकर क्या बनाया है? बदलकर और बनकर जा रही हैं ना! तो इन्हों को बदलकर क्या बनाया है? अपना जब साक्षात्कार करेंगी कि हम क्या बने हैं तब तो औरों को बनायेंगी। यह ग्रुप समझता है कि हम रूहानी सेवाधरी बनकर जा रहे हैं? सभी अपने को सेवाधारी समझकर सेवा स्थान पर जा रही हो वा अपने-अपने घर में लौट रही हो? क्या समझ के जाती हो? अगर अपने लौकिक परिवार में जाओ तो उसको क्या समझेंगी? वह भी सेवा-स्थान है वा सिर्फ सेन्टर ही सेवास्थान है? अगर घर को भी सेवास्थान समझेंगी तो स्वत: सेवा होती रहेगी। जो सेवाधारी होते हैं उन्हों के लिए हर स्थान पर सेवा है। कहाँ भी रहें, कहाँ भी जावें लेकिन सेवाधारी को हर समय और हर स्थान पर सेवा ही दिखाई देगी और सेवा में ही लगे रहेंगे। घर को भी सेवा-स्थान समझकर रहेंगे। बुद्धि में सेवा याद रहने से इस स्मृति की शक्ति से कर्मबन्धन भी सहज और शीघ्र खत्म हो जायेगा। इसलिए जबकि सेवाधारी बनके जा रही हो तो हर संकल्प में सेवा करनी है। एक सेकण्ड वा एक संकल्प भी सेवा के सिवाए नहीं जा सकता। इसको कहते हैं सच्चा रूहानी सेवाधारी। रूहानी सेवाधारी तो रूह अथवा आत्मा से भी सेवा कर सकते हैं। जैसे लाईट हाउस एक स्थान पर होते हुए भी चारों ओर अपनी लाईट द्वारा सेवा करते हैं। इसी प्रकार जो सेवाधारी हैं वह भी कोई एक स्थान पर होते हुए भी बेहद सृष्टि के बेहद सर्विस में तत्पर रहते हैं। तो लाईट हाउस और माइट हाउस बनी हो? दोनों ही बनी हो या लाइट हाउस बनी हो और माइट हाउस अभी बनना है? ज्ञान स्वरूप हैं लाईट हाउस और योगयुक्त अवस्था है - माइट हाउस। तो सभी 'ज्ञानी तू आत्मा', 'योगी तू आत्मा' बनकर जा रही हो ना।

कि अभी कुछ रह गया? पूरा श्रृंगार किया? वैसे भी कुमारी अवस्था में स्वच्छता और अपने को ठीक रीति सजाने का रहता ही है। तो यहाँ भट्ठी में भी पूरी तरह ज्ञान गुणों के श्रृंगार से सज़ाया है। सजकर जा रही हैं वा वहाँ जाकर अभी और कुछ करना है? पूरे अस्त्र-शस्त्र से तैयार होकर युद्ध के मैदान में जा रही हैं। जो अस्त्र-शस्त्रधारी होंगे वह सदैव विजयी होंगे। शस्त्र शत्रु को सामने आने नहीं देंगे। तो शस्त्रधारी बनी हो जो शस्त्र दूर से ही देखकर भाग जाये। सभी ऐसे बने हैं? मधुबन-वरदान भूमि के प्रभाव में बोल रही हो वा अविनाशी शस्त्रधारी वा श्रृंगारी अपने को बनाया है? कल नीचे उतरेंगी तो स्टेज वही ऊंची रहेगी? यह भी पक्का कर दो कि कहाँ भी जायेंगे लेकिन जो अपने आप से अथवा मधुबन के संगठन बीच, ईश्वरीय दरबार के बीच जो प्रतिज्ञा की है वह सदा कायम रहेगी। ऐसी अविनाशी छाप हरेक ने अपने आपको लगाई है? निश्चय की विजय अवश्य है और हिम्मत रखने वालों की बापदादा और सर्व ईश्वरीय परिवार की आत्मायें मददगार रहती हैं। कितना भी कोई आपकी हिम्मत को हिलाने की कोशिश करे लेकिन प्रतिज्ञा जो की है उस प्रतिज्ञा की शक्ति से, जरा भी पांव हिलाना नहीं। पाँव कौन से? जिस द्वारा याद की यात्रा करते हो। चाहे सृष्टि क्यों न हिलावे लेकिन आप सारे सृष्टि की आत्माओं से शक्तिशाली हैं। एक तरफ सारी सृष्टि हो, दूसरे तरफ आप एक भी हो - तो भी आपकी शक्ति श्रेष्ठ है। क्योंकि सर्वशक्तिमान बाप आपके साथी हैं। इसलिए गायन है शिव शक्तियाँ। जब शिव और शक्तियाँ दोनों ही साथी हैं तो सृष्टि की आत्मायें उसके आगे क्या हैं? अनेक होते भी एक समान नहीं हैं। इतना निश्चय बुद्धि वा प्रतिज्ञा को पालन करने की हिम्मत रखने वाली बनकर जा रही हो ना। प्रैक्टिकल पेपर होगा। थ्योरी का पेपर तो सहज होता है। किसको सप्ताह कोर्स कराना वा म्युज़ियम या प्रदर्शनी समझाना है थ्योरी का पेपर। लेकिन प्रैक्टिकल पेपर में जो पास होते हैं वही 'पास विद आनर' होते हैं। जो ऐसे पास होते हैं वही बापदादा के पास रहने वाले रत्न बनते हैं। तो पास में रहना पसन्द करती हो वा दूर से देखना पसन्द आता है? 'पास विथ आनर' बनेंगे। यह भी

हिम्मत रखनी है ना। इस हिम्मत को अविनाशी बनाने के लिए एक बात सदैव ध्यान में रखनी है।

कोई भी संगदोष में अपने को लाने के बजाए, बचाते रहना। कई प्रकार के आकर्षण पेपर के रूप में आयेंगे, लेकिन आकर्षित नहीं होना। हर्षितमुख हो पेपर समझ पास होना है। संगदोष कई प्रकार का होता है। माया संकल्पों के रूप में भी अपने संग का रंग लगाने की कोशिश करती है। तो इस व्यर्थ संकल्पों को वा माया की आकर्षण के संकल्पों में कभी फेल नहीं होना। और फिर स्थूल संबंधी का संग, उसमें न सिर्फ परिवार का सम्बन्ध होता है लेकिन परिवार के साथ-साथ और भी कोई सम्बन्ध का संग। सहेली का संग भी सम्बन्ध का संग है। तो कोई भी सम्बन्धी के संग में नहीं आना। कोई के वाणी के संगदोष में भी नहीं आना। वाणी द्वारा भी उल्टा संग का रंग लग जाता है। इससे भी अपने को बचाना और फिर अन्न का संगदोष भी है। अगर कभी भी किसके भी समस्या अनुसार वा कोई सम्बन्धी के स्नेह के वश भी अन्नदोष में आ गई तो यह अन्न भी अपने मन को संग के रंग में लगा देता है। इसलिए इससे भी अपने को बचाते रहना। कर्म का संग भी होता है इसलिए इससे भी अपने को बचाते रहना। तब 'पास विथ आनर' बनेंगी। संगदोष के पेपर में पास हो गई तो समझो समीप आ सकती हो। अगर संगदोष में आ गई तो दूर हो जायेंगी। फिर न निराकारी वतन में, न अभी संगमयुग में, न भविष्य में पास रह सकेंगी।

एक संगदोष तीनों लोकों से दूर हटा देता है। एक संगदोष से बचने से तीनों लोकों में, तीनों कालों में बाप के समीप रहने का भाग्य प्राप्त कर सकती हो। इस ग्रुप को बापदादा हंसों का संगठन कहते हैं। हंसों का कर्त्तव्य वा स्वरूप क्या होता है? हंसों का स्वरूप है प्योरिटी और कर्त्तव्य है सदैव गुणों रूपी मोती ही धारण करेंगे। अवगुण रूपी कंकड कभी भी बुद्धि में स्वीकार नहीं करेंगे। यह है हंसों का कर्त्तव्य। लेकिन इस कर्त्तव्य को पालन करने के लिए बापदादा से सदैव आज्ञा मिलती रहती है। वह कौन सी आज्ञा? जिस आज्ञा का आपका चित्र भी बना हुआ

है। बुरा न देखना, बुरा न सुनना, न बोलना, न सोचना। अगर इस आज्ञा को सदैव स्मृति में रखेंगे तो फिर सच्चा हंस बनकर, बाप जो सर्व गुणों का सागर है, सागर के किनारे पर सदैव बैठे रहेंगे। तो अपनी बुद्धि को सिवाए ज्ञान-सागर बाप के और कहाँ भी ठिकाना न देना क्योंकि हंसों का ठिकाना है ही सागर। तो अपने को हंस समझकर अपनी प्रतिज्ञाओं को पालन करती रहना। समझा? मोती और कंकड़- दोनों को छांटना सीखा है? कंकड़ क्या होता है, रत्न क्या होते हैं? नालेजफुल तो बनी हो ना! अब देखेंगे यह हंस क्या कमाल कर दिखाते हैं। हंसों का संगठन न चाहते हुए भी अपने तरफ आकर्षित करता है। तो संगदोष से बचना है और ईश्वरीय संग में रहना है। अनेक संग छोड़ना, एक संग जोड़ना है। ईश्वरीय संग सिर्फ शरीर से नहीं होता लेकिन बुद्धि द्वारा भी ईश्वरीय संग में रहना है। बुद्धि सदैव ईश्वरीय संग में रहे और स्थूल सम्बन्ध में भी ईश्वरीय संग रहे। इस संग के आधार पर अनेक संगदोष से बच जायेंगे। सिर्फ ट्रांसफर करना है। कोमलता को कमाल में परिवर्तन करना। कोमलता दिखाना नहीं। सिर्फ संस्कारों को परिवर्तन करने में कोमल बनना है। कर्म में कोमल नहीं बनना। इसमें तो शक्ति रूप बनना है। अगर शक्ति-स्वरूप का कवच सदैव धारण नहीं करेंगी तो कोमल को तीर बहुत जल्दी लग जायेगा। तीर भी कोमल स्थान पर ही लगाते हैं। इसलिए अगर शक्ति-स्वरूप का कवच धारण करेंगी तो शक्ति रूप बन जायेंगी। फिर माया का कोई तीर लग नहीं सकेगा। कर्म में कोमल नहीं बनना। सिर्फ मोल्ड होने के लिए रीयल गोल्ड बनना है। चेहरे से, नयन-चैन में कोमलता नहीं लाना। यह सभी बातें स्मृति में रख 'पास विद आनर' बनना है। इस ग्रुप में प्रैक्टिकल सबूत दे सबूत बनने वाले उम्मीदवार रत्न दिखाई देते हैं। हरेक को एक दो से आगे जाना है। दूसरे को आगे जाता देख हर्षित नहीं होना है। सिर्फ दूसरे को देखते रहेंगे तो भक्त हो जायेंगे। भक्त लोग सिर्फ देख-देख उनके गुण गाते खुश होते हैं। तुमको भक्त नहीं बनना है। ज्ञान-स्वरूप और योगयुक्त, 'ज्ञानी तू आत्मा' और 'योगी तू आत्मा' बनना है। अब पेपर की रिज़ल्ट देखेंगे। जो प्रैक्टिकल सबूत देंगे वह फर्स्ट नम्बर आयेंगे। जो

सोचते रहेंगे तो बाप भी राज्य-भाग्य देने के लिए सोंचेंगे। जो स्वयं को स्वयं ही आफर करते हैं उनको बापदादा भी विश्व की राजधानी का राज्य-भाग्य पहले आफर करते हैं। अगर अपने को आफर नहीं करेंगे तो बापदादा भी विश्व का तख्त क्यों आफर करेंगे। अपने को आपे ही आफर करो तो आफारीन कही जायेगी। गैस के गुब्बारे नहीं बनना। वह बहुत तेज उड़ते हैं लेकिन अल्पकाल के लिए। यहाँ अपने में अविनाशी एनर्जी भरना। टैम्प्ररी आक्सीजन का आधार नहीं लेना। अच्छा।

(11-06-1971)

अंतिम सेवा के लिए रमतायोगी बनो

जैसे गवर्मेंट के गुप्त अनुचर नये-नये प्लैन्स बनाते हैं, कहां भी कोई उल्टा कर्तव्य आदि होता है तो उसको चैक करते हैं। वैसे आप भी सभी पाण्डव गवर्मेंट के गुप्त अनुचर हो। आत्माओं को जो धोखे में फंसाने वाले हैं वा उल्टी राह पर चलाने वाले वा मिलावट करने वाले हैं अथवा गिराने के निमित हैं उन्हों के लिए नये-नये प्लैन्स बनाते हो? वह गवर्मेंट भी सदैव नई-नई प्लैन्स बनाती है ना जिससे मिलावट करने वाले उन्हों की नजर से बच नहीं पाते हैं। अभी चारों ओर आवाज़ तो फैला दिया है लेकिन यह विद्वान, आचार्य आदि जो निमित बने हुए हैं यथार्थ ज्ञान के बदली अयथार्थ रीति देने, उन्हों की तरफ अटेन्शन जाता है? एक द्वारा भी अनेकों को आवाज पहुंचता है। वह कौन निमित बन सकता है? साधारण जनता को तो सुनाते रहते हो, उनमें से जो बनने वाले हैं वह अपना यथा शक्ति पुरुषार्थ करते चल रहे ह। लेकिन जो आवाज फैलना है वह किन्हों के द्वारा? शक्तियों का जो अन्तिम गायन है वह क्या इस साधारण जनता के प्रति गायन है? शक्तियों की शक्ति की प्रत्यक्षता इन साधारण जनता द्वारा होगी? जो पोलीटिकल लोग हैं उन्हों के द्वारा इतना आवाज नहीं फैल सकता क्योंकि आजकल जो भी नेता बनते हैं, इन सभी की बुराइयां जनता जानती है। आजकल प्रजा का प्रजा पर राज्य है ना। तो नेताओं की आवाज का प्रभाव नहीं है। तो एक द्वारा अनेकों तक

आवाज करने के निमित कौन बनेगा? इन गुरुओं की जंजीरों में तो सभी फंसे हुए हैं ना। भल अन्दर में क्या भी हो लेकिन उन्हों के शिष्य अन्धश्रद्धा से सत-सत करने के आदती हैं। नेताओं के पीछे सत-सत करने वाले नहीं हैं। तो शक्तियों का जो गायन है वह कब प्रैक्टिकल में आना है? वा उसके लिए अब धरती नहीं बनी है? जैसे गुप्त अनुचर जो होते हैं वह क्या करते हैं? मिलावट वालों को ही घेराव डालते हैं। मिलावट करने वाले बड़े आदमी होते हैं, जिससे गवर्मेट को बहुत प्राप्ति होती है। साधारण के पीछे नहीं पड़ते। उन्हों के नये-नये प्लैन्स बनते रहते हैं कि किस रीति मिलावट को प्रसिद्ध करें। तो ऐसी बुद्धि चलती है कि जो सहज प्रजा बनती है उसमें ही सन्तुष्ट हो? प्रभाव पड़ने का जो मुख्य साधन है वह तो प्रैक्टिकल में करना पड़े ना। वह कब होगा? जब पहले बुद्धि में प्लैन्स चलेंगे, उमंग आयेगा कि हमको आज यह करना है। तो अभी वह संकल्प उठते हैं वा संकल्प ही मर्ज हैं? जैसे सर्विस चलती रहती है ऐसे तो प्रजा बनने का साधन है। लेकिन आवाज फैलने का साधन, जिससे प्रत्यक्षता हो, वह प्रैक्टिकल में लाना है। जब विमुख करने वाले सम्मुख आवें तब है प्रभाव। बाकी विमुख होने वाले सम्मुख आयें तो कोई बड़ी बात नहीं है। इसलिए बाप से भी ज्यादा शक्तियों का, कुमारियों का गायन है। कन्यायें अर्थात् ब्रह्माकुमारियां। इसका मतलब यह नहीं कि कुमारी ही होगी। ब्रह्माकुमार-कुमारियां तो सभी हैं। कन्याओं द्वारा बाण मरवाये हैं। बाप खुद सम्मुख नहीं आये, सम्मुख शक्तियों को रखा। तो जब प्रैक्टिकल में शक्ति सेना निमित है तो शक्तियों का जो विशेष कर्तव्य गाया हुआ है वह उन्हों से ही गाया हुआ है। वह उमंग-उत्साह है? क्या सेमिनार करने में ही खुश हो? यह तो सभी साधन है नम्बरवार प्रजा बनाने के। कुछ-ना-कुछ कनेक्शन में आते हैं और प्रजा बन जाती है लेकिन अब तो इससे भी आगे बढ़ना है। अंतिम सर्विस को प्रैक्टिकल लाने में अभी से तैयारी करो। पहले तो संकल्प रखो, उसका प्लैन बनाओ। फिर प्लैन से प्रैक्टिकल में आओ। उसमें भी समय तो चाहिए ना। शुरु तो अभी से करना पड़े। जैसे शुरु-शुरु में जोश था कि जिन्होंने हमको गिराया है उन्हों को ही संदेश

देना है। बीच में प्रजा के विस्तार में चले गये। लेकिन जो आदि में था वह अंत में भी आना है। जैसे माया की जंजीरों से छुड़ाने के लिए मेहनत करते हैं। वैसे यह भी बड़ी जंजीर है और अब तो दिन-प्रतिदिन यह जंजीरे मोहिनी रुप लेते हुए अपनी तरफ खींचती जा रही हैं वा अल्पकाल की बुद्धि द्वारा प्राप्ति कराते हुए अपनी जंजीर में फंसाते जाते हैं। उन्हों से सभी को कब छुड़ायेंगे? अंतिम प्रभाव का साधन यही है जिसका गायन भी है कि चींटी महारथी को भी गिरा देती है। गायन तो कमालियत का होता है ना। साधरण जनता को सुनाते रहते हो, वह क्या बड़ी बात है। यह तो वह मिलावट वाले भी करते हैं। झूठे लोग भी अपनी तरफ आकर्षित करते हैं। लेकिन जो अपने को महारथी समझते हैं उन्हों के पोल खोल दो। उन्हों को झुकाओ तब कमाल है। ऐसी कमाल दिखाने के लिये कुछ बुद्धि चलती है? असत्य को असत्य सिद्ध करो तब तो सत्य की जय हो। जय-जयकार होगी ही तब। फिर इतनी मेहनत करने की जरुरत नहीं। इसके लिए प्लैन्स चाहिए, तरीका चाहिए और अन्दर में वह नशा चाहिए कि हम गुप्त अनुचर हैं, इन्हों के पोल सिद्ध करना हमारा काम है, हम ही इसके लिए निमित हैं। यह अन्दर से उमंग-उत्साह आवे, तब यह काम हो सकता है। यह प्रोग्राम से नहीं हो सकता। किसी को आप प्रोग्राम दो कि यह-यह करो, ऐसे वो नहीं कर सकेंगे। उसमें सामना करने की इतनी शक्ति नहीं आयेगी। अपने दिल से जोश आवे कि मुझे यह करना है, वह प्रैक्टिकल हो सकता है। संकल्प को रचने से फिर प्रैक्टिकल में आ जायेगा। अभी सभी की नजर कोई कमाल देखने की तरफ है और बिना शक्तियों के यह कार्य पाण्डव अथवा कोई कर नहीं सकता। निमित्त शक्तियों को बनना है। जैसे शुरु-शुरु में रमता योगी माफिक जहां के लिए भी संकल्प आता था, जोश में चल पड़ते थे और यथाशक्ति सफलता भी पा लेते थे। ऐसा ही फिर इस बात के लिए भी रमता योगी चाहिए। प्रजा बनाने में बहुत बिजी हो गये हो और जो रचना रची है उसको पालने में ही समय बीत जाता है।

(14.07.1972)

वह अन्तिम लक्ष्य पुरुषार्थ के लिये कौन-सा है? वह है-अव्यक्त फरिश्ता हो रहना। अव्यक्त-रुप क्या है? फरिश्ता-पन। उसमें भी लाइट-रुप सामने है - अपना लक्ष्य। वह सामने रखने से जैसे लाइट के कार्ब में यह मेरा आकार है। जैसे वतन में भी अव्यक्त-रुप देखते हो, तो अव्यक्त और व्यक्त में क्या अन्तर देखते हो? व्यक्त, पाँच तत्वों के कार्ब में हैं और अव्यक्त, लाइट के कार्ब में हैं। लाइट का रुप तो है, लेकिन आसपास चारों ओर लाइट ही लाइट है, जैसे कि लाइट के कार्ब में यह आकार दिखाई देता है। जैसे सूर्य देखते हो तो चारों ओर फैली सूर्य की किरणों की लाइट के बीच में, सूर्य का रुप दिखाई देता है। सूर्य की लाइट तो है, लेकिन उसके चारों ओर भी सूर्य की लाइट परछाई के रुप में, फैली हुई दिखाई देती है। और लाइट में विशेष लाइट दिखाई देती है। इसी प्रकार से, मैं आत्मा ज्योति रूप हूँ - यह तो लक्ष्य है ही। लेकिन मैं आकार में भी कार्ब में हूँ। चारों ओर अपना स्वरुप लाइट ही लाइट के बीच में स्मृति में रहे और दिखाई भी दे तो ऐसा अनुभव हो। जैसे कि आइने में देखते हो तो स्पष्ट रुप दिखाई देता है, वैसे ही नॉलेज रुपी दर्पण में, अपना यह रुप स्पष्ट दिखाई दे और अनुभव हो। चलते-फिरते और बात करते, ऐसे महसूस हो कि 'मैं लाइट-रुप हूँ, मैं फरिश्ता चल रहा हूँ और मैं फरिश्ता बात कर रहा हूँ।' तो ही आप लोगों की स्मृति और स्थिति का प्रभाव औरों पर पड़ेगा।

कर्तव्य करते हुए भी कि मैं फरिश्ता निमित्त इस कार्य अर्थ पृथ्वी पर पाँव रख रहा हूँ, लेकिन मैं हूँ अव्यक्त देश का वासी, अब इस स्मृति को ज्यादा बढ़ाओ। 'मैं इस कार्य-अर्थ अवतरित हुई हूँ अर्थात् जैसे कि मैं इस कार्य-अर्थ पृथ्वी पर वतन से आई हूँ, कारोबार पूरी हुई, फिर वापस अपने वतन में। जैसे कि बाप आते हैं, तो बाप को स्मृति है ना कि हम वतन से आये हैं, कर्तव्य के निमित्त और फिर हमको वापिस जाना है। ऐसे ही आप सबकी भी यह स्मृति बढ़नी चाहिए कि मैं अवतार हूँ अर्थात् मैं अवतरित हुई हूँ, अभी मैं ब्राह्मण हूँ और फिर मैं देवता बनूंगी - यह भी वास्तव में मोटा रुप है। यह स्टेज भी साकारी है। अभी आप लोगों

की स्टेज आकारी चाहिए, क्योंकि आकारी से फिर निराकारी सहज बनेंगे। जैसे बाप भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे।'

अब आप लोगों को भी अव्यक्त वतनवासी स्टेज तक पहुँचना है, तभी तो आप साथ चल सकेंगे। अभी यह साकार से अव्यक्त रुप का पार्ट क्यों हुआ? - सबको अव्यक्त स्थिति में स्थित कराने क्योंकि अब तक उस स्टेज तक नहीं पहुंचे हैं। अभी अन्तिम पुरुषार्थ यह रह गया है। इसी से ही साक्षात्कार होंगे। साकार स्वरुप के नशे की प्वाइन्ट्स तो बहुत हैं कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ और मैं शक्ति हूँ। इस स्मृति से तो आपको नशे और खुशी का अनुभव होगा। लेकिन जब तक इस अव्यक्त स्वरुप में, लाइट के कार्ब में स्वयं को अनुभव न किया है, तब तक औरों को आपका साक्षात्कार नहीं हो सकेगा। क्योंकि जो दैवी स्वरुप का साक्षात्कार भक्तों को होगा, वह लाइट रुप की कार्ब में चलते-फिरते रहने से ही होगा। साक्षात्कार भी लाइट के बिना नहीं होता है। स्वयं जब लाइट-रुप में स्थित होंगे, आपके लाइट रुप के प्रभाव से ही उनको साक्षात्कार होगा। जिसे शास्त्रों में दिखाते हैं कि कंस ने कुमारी को मारा, तो वह उड़ गई, साक्षात्-रुपधारी हो गई और फिर आकाशवाणी की। वैसे ही आप लोगों का साक्षात्कार हो, तो ऐसा अनुभव होगा कि मानो यह देवी द्वारा आकाशवाणी हो रही है। वह सुनने को इच्छुक होंगे कि यह देवी या शक्ति मेरे प्रति क्या आकाशवाणी करती है। आप में अब यह नवीनता दिखाई दे। साधारण बोल नजर न आयें, ऊपर से आकाशवाणी हो रही है, बस ऐसा अनुभव हो। इसलिये कहा कि अब ज्वालामुखी बनने का समय है। अब आपका गोपीपन का पार्ट समाप्त हुआ। महारथी जो आगे बढ़ते जा रहे हैं, उनका इस रीति सर्विस करने का पार्ट भी ऑटोमेटिकली बदली होता जाता है। पहले आप लोग भाषण आदि करती थीं और कोर्स कराती थीं। अभी चेयरमैन के रुप में थोड़ा बोलती हो, कोर्स आदि आपके जो साथी हैं, वह कराते हैं। अभी इस समय, कोई को आकर्षण करना, हिम्मत और हुल्लास में लाना, यह सर्विस

रह गई है, तो फर्क आ जाता है ना? इससे भी आगे बढ़ कर यह अनुभव होगा जैसे कि आकाशवाणी हो रही है। कहेंगे यह कोई अवतार हैं - और यह कोई साधारण शरीरधारी नहीं हैं। अवतार प्रगट हुए है। जैसे कि साक्षात्कार में अनुभव करते-करते देवी प्रगट हुई है। महावाक्य बोले और प्राय:लोप। अभी की स्टेज व पुरुषार्थ का लक्ष्य यह होना है।

(15-09-1974)

सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्या बनने के लिये धारणायें

सभी कुमारियों ने जो बाप से पहला वायदा किया हुआ है कि 'एक बाप, दूसरा न कोई' - वह निभाती हैं? इसी वायदे को सदा निभाने वाली कुमारी विश्व-कल्याण के अर्थ निमित्त बनती हैं। कुमारियों का पूजन होता है, पूजन का आधार है 'सम्पूर्ण पवित्र।' तो कुमारियों का महत्व पवित्रता के आधार पर है। अगर कुमारी, कुमारी होते हुए भी पवित्र नहीं तो कुमारी जीवन का महत्व नहीं। तो कुमारीपन की जो विशेषता है, उसको सदा साथ-साथ रखना, उसे छोड़ना नहीं। नहीं तो अपनी विशेषता को छोड़ने से वर्तमान जीवन का अति-इन्द्रिय सुख और भविष्य के राज्य का सुख दोनों से वंचित हो जायेंगी। ब्रह्माकुमारी होते हुए भी, सुनेंगी, बोलेंगी कि - अतीन्द्रिय सुख संगम का वर्सा है लेकिन अनुभव नहीं होगा। जब सदा कुमारी जीवन का महत्व स्मृति में रखेंगी तो सफल टीचर व ब्रह्माकुमारी बन सकेंगी। जब ऐसा लक्ष्य है तो कुमारीपन की विशेषता के लक्षण सदा कायम रहे। चाहे माया कितना भी इस विशेषता को हिलाना चाहे तो भी 'अंगद' के समान कायम रहे।

कुमारी निर्बन्धन तो हैं लेकिन डर रहता है कि कहीं कुमारी होते माया के वश नहीं हो जायें। अगर इस कारण को कुमारी मिटा देवें तो देखने की ट्रॉयल करने की ज़रूरत नहीं। दूसरे - परिवर्तन करने की शक्ति चाहिए। कोई भी आत्मा हो, कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन स्वयं को परिवर्तन करने की शक्ति हो, तब ही

सफल टीचर और सेवाधारी बन सकेंगी। सम्पूर्ण पवित्रता और परिवर्तन-शक्ति - इन दोनों विशेषताओं से सेवा, स्नेह और सहयोग में विशेष आत्मा बन सकेंगी। नहीं तो ट्रॉयल की लिस्ट में रहेगी। सरेण्डर की लिस्ट में नहीं आ सकेंगी। इन दोनों विशेषताओं को कायम रखने वाली कुमारी ही गायन-पूजन योग्य होंगी। अल्पकाल का वैराग्य नहीं, लेकिन सदाकाल का वैराग्य। अर्थात् 'त्याग और तपस्या' - तब कहेगे विशेष कुमारी। अभी तो निमित्त को ध्यान रखना पड़ता है। क्योंकि अभी तक विशेषता दिखाई नहीं है। इसलिये सेवा रोकनी पड़ती है। कोई शिकायत किसी द्वारा न सुनी जाये, तब ही कम्पलीट टीचर अथवा सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्या बन सकती हैं।

(28-10-1975)

कुमारियों को देखते हुए :- कुमारियों पर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। एक अनेकों के कल्याण प्रति निमित्त बन सकती है। ब्रह्माकुमारी वह जो विश्व के कल्याण के निमित्त बने। बेहद विश्व के कल्याणकारी न कि हद के। लगन में कमी है तो विघ्न अपना काम करेगा। अगर आग तेज़ है तो किचड़ा भस्म हो जाएगा। लगन है तो विघ्न नहीं रह सकता, कर्मयोग से कर्म भोग भी परिवर्तन हो जाता, परिवर्तन करना अपनी हिम्मत का काम है। कुमारियों में तो सदैव बाप-दादा की उम्मीद है।

(29-11-78)

कुमारियों से:- कुमारियाँ तो हैं ही बाप की सेवा के हैन्डस। सब ब्रह्मा की भुजायें हो ना? सभी तैयार हो? टोकरी वाली हो या ताज वाली? या होगी टोकरी या होगा ताज। दोनों साथ कैसे रखेंगे? सभी सहयोगी हो ना? जब कहें तब तैयार। डायरेक्शन प्रमाण चलने वाली हो ना? अगर तेज़ी से चलना शुरू करेंगी तो मंजिल पर पहुँच जायेंगी। कुमारियाँ तो हैं ही सदा सन्तुष्ट। कुमारियों को माया

आती है? जैसे कुमारियों को और कोई पूँछ नहीं तो माया का पूँछ कहाँ से आया। जैसे और सबसे निर्बन्धन वैसे माया से भी निर्बन्धन। कुमारियाँ अर्थात् निर्बन्धन, कोई भी पूँछ नहीं।

कुमारियाँ हैं ही सदा डबल लाइट, न कर्मो के बन्धन का बोझ और न आत्मा के ऊपर पिछले संस्कारों का बोझ। सभी बोझों से हल्के। ऐसे हो ना? कुमारी अर्थात स्वतन्त्र, सब रीति से। सिर्फ सम्बन्ध की रीति से नहीं, तन से नहीं लेकिन मन से भी स्वतन्त्र। ऐसे हल्के हो ना? जितना याद में स्पीड बढ़ाती जायेंगी उतना हल्की रहेंगी। याद ही साधन है डबल लाइट बनने का। तो सदा अपने को हल्का रखो। कोई भी बात आये - डोन्ट केयर। जम्प दे दो तो बात नीचे रह जायेगी। हल्के बहुत बड़ा जम्प दे सकते हैं।

(30-11-1979)

शक्तियां हो या कुमारी? शक्तियों की विशेषता है - सदा मायाजीत। माया अर्थात वार करने वाले को अपनी सवारी बनाने वाली। ऐसे हो ना।

(15-12-1979)

सदा सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है इतना नशा रहता है? सफलता होगी या नहीं होगी यह क्वेश्चन ही नहीं। सफलता मूर्त हैं ऐसे नशा रहता है? मास्टर शिक्षक हो ना। जैसे बाप शिक्षक की क्वालीफिकेशन है, वैसे मास्टर शिक्षक की भी होगी ना। बाप समान बने हो ना? (हाँ) यह हाँ-हाँ के गीत अच्छा गाती हैं। इससे सिद्ध है कि यह बाप के गुण सभी को सुनाकर डाँस करती कराती हैं। कुमारियों को देख करके बापदादा बहुत खुश होती हैं। क्योंकि कुमार और कुमारियाँ, त्याग कर तपस्वी आकर बने हैं। बच्चों के त्याग की हिम्मत देख, तपस्या का उमंग देख बापदादा खुश होते हैं। बाप की महिमा तो भक्त करते हैं लेकिन बच्चों की महिमा बाप करते हैं। कितने जन्म आपने माला सिमरण की? अभी बाप रिर्टन में बच्चों

की माला सिमरण करते हैं। आप लोग देखते हो किस समय बाप माला सिमरण करते हैं? (अमृतबेले) तो जिस समय बाप माला सिमरण करते उस समय आप सो तो नहीं जाते हो? शक्तियाँ तो सोने वालो को जागने वाली है। खुद कैसे सोयेंगी? रिजल्ट अच्छी है। सर्टीफिकेट मिलना भी लक है। आस्ट्रेलिया वालों को अच्छा सार्टीफिकेट मिला रहा है। अपनी फुलवाड़ी को निश्चय और हिम्मत के जल से सींचते रहने से वृद्धि को पाते रहेंगे। वृद्धि होती रहेगी।

(19-03-1981)

होवनहार टीचर्स कुमारियों के ग्रुप से बापदादा की मुलाकात

यह ग्रुप होवनहार विश्व-कल्याणकारी ग्रुप है ना। यही लक्ष्य रखा है ना? स्व कल्याण कर विश्व कल्याणकारी बनेंगे यही दृढ़ संकल्प किया है ना? बापदादा हर निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं को देख खुश होते हैं कि यह एक एक कुमारी अनेक आत्माओं के कल्याण के प्रति निमित्त बनने वाली है। वैसे कुमारी को 100 ब्राह्मण से उत्तम कहते हैं लेकिन 100 भी हद हो गई। यह तो सब बेहद के विश्व-कल्याणकारी हैं, बेहद की हो ना? हद का संकल्प भी नहीं। फिर सभी एक दो से रेस में आगे हो वा नम्बरवार हो? क्या समझती हो? हरेक में अपनी अपनी विशेषता तो होगी लेकिन यहाँ सर्व विशेषताओं से सम्पन्न हो? जब सब विशेषताएँ धारण करो तब सम्पन्न बनो। तो क्या लक्ष्य रखा है? बात बहुत छोटी है, कोई बड़ी बात नहीं है, संकल्प दृढ है तो प्राप्ति स्वत: हो जाती है। अगर सिर्फ संकल्प है, उसमें दृढ़ता नहीं तो भी अन्तर पड़ जाता है, कभी कहते हैं ना - विचार तो है, करना तो चाहिए इसको दृढ संकल्प नहीं कहेंगे। दृढ़ संकल्प अर्थात् करना ही है, होना ही है। 'तो' शब्द निकल जाता है। बनना तो है, नहीं। लेकिन बनना ही है। यह लक्ष्य रखो तो नम्बरवन हो जायेंगे। सहज जीवन अनुभव होती है? मुश्किल तो नहीं लगता? कालेज का वातावरण प्रभाव तो नहीं ड़ालता, आपका वातावरण उन्हों

पर प्रभाव डालता है? सदा निर्विघ्न रहना। स्व को देखना अर्थात् निर्विघ्न बनना। सुनाया ना - बाप के संस्कार सो अपने संस्कार, फिर जैसे निमित्त मात्र कर रहे हैं लेकिन करावनहार बाप है। करन करावनहार जो गया जाता है वह इस समय का ही प्रैक्टिकल अनुभव है। अच्छा एगजाम्पुल बनी हो। सदा सपूत बन सबूत देते रहना। सपूत उसको ही कहा जाता है जो सबूत दे। कभी आपस में खिट-खिट तो नहीं होती है? नालेजफुल हो जाने से एक दो के संस्कार को भी जानकर संस्कार परिवर्तन की लगन में रहते हैं। यह नहीं सोचते कि यह तो ऐसे हैं ही लेकिन यह ऐसे से ऐसा कैसे बने, यह सोचेंगे। रहमदिल बनेंगे। घृणा दृष्टि नहीं, रहम की दृष्टि - क्योंकि नालेजफुल हो गये ना। सहज जीवन और श्रेष्ठ प्राप्ति, इस जैसा भाग्य और कब मिल सकता है? अच्छे सर्विसएबुल हैन्डस हैं, ऐसे ही हैन्डस निकलते जाएँ तो बहुत अच्छा। हिम्मते बच्चे मददे बापा। शक्तियाँ तो हैं ही विजयी। शक्ति की विजय न हो यह हो नही सकता।

(05-04-81)

कुमारियों से:- 'कुमारियां तो हैं ही उड़ता पंछी। क्योंकि कुमारियां अर्थात् सदा हल्की। कुमारी अर्थात् कोई बोझ नहीं। हल्की चीज ऊपर जायेगी ना। सदा ऊपर जाने वाले माना ऊंची स्टेज पर जाने वाली। तो ऐसी हो? कहां तक पहुँची हो? जो बाप की श्रीमत है उसी प्रमाण, उसी लकीर के अन्दर सदा रहने वाले सदा ऊपर उड़ते रहते हैं। तो लकीर के अन्दर रहने वाली कौन हुई? - सच्ची सीता। तो सभी सच्ची सीताएं हो ना? पक्का? लकीर के बाहर पांव निकाला तो रावण आ जायेगा। रावण इन्तजार में रहता है - कि कहां कोई पांव निकाले और मैं भगाऊं! तो कुमारी अर्थात् सच्ची सीता। यहाँ से बाहर जाकर बदल न जाना। क्योंकि मधुबन में वायुमण्डल के वरदान का प्रभाव रहता, यहाँ एकस्ट्रा लिफ्ट होती है, वहाँ मेहनत से चलना पड़ेगा। कुमारियों को देखकर बापदादा को हजार

गुणा खुशी होती है क्योंकि कसाईयों से बच गई। तो खुशी होगी ना। अच्छा-अभी पक्का वादा करके जाना।'

(08-10-1981)

कुमारियों से:- कुमारियों को देखकर बापदादा बहुत हर्षित होते हैं। क्यों? क्योंकि एक-एक कुमारी अनेको को जगाने के निमित्त बनने वाली है। तो कुमारियों के भविष्य को देख करके हर्षित होते हैं। एक-एक कुमारी विश्व-कल्याणकारी बनेगी। परिवार कल्याण वाली नहीं, विश्व कल्याण करने वाली। अगर कुमारी गृहस्थी हो गई तो परिवार-कल्याणकारी हो गई और ब्रह्माकुमारी बन गई तो विश्व कल्याणकारी हो गई। तो क्या बनने वाली हो? वैसे भी देखो कुमारियों का भक्तिकाल के अन्त में भी पूजन होता है। तो लास्ट तक भी इतनी श्रेष्ठ हो। कुमारी जीवन का बहुत महत्व है। कुमारियों को ब्राह्मण जीवन में लिफ्ट भी है। कुमारियाँ कितना जल्दी सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज बन जाती हैं। कुमारों को देरी से चाँस मिलता है। कुमारी अगर रेस में आगे जाए तो बहुत अपने को आगे बढ़ा सकती है। एक कुमारी अनेक सेवाकेन्द्रों को सम्भाल सकती है। ड्रामा अनुसार यह लिफ्ट गिफ्ट की रीति से मिली हुई है। मेहनत नहीं की है। कुमारियों की विशेषता क्या है? कुमारी जीवन अर्थात् सम्पूर्ण पावन। अगर कुमारी जीवन में यह विशेषता नहीं तो उसका कोई महत्व नहीं। ब्रह्माकुमारी अर्थात् मंसा में भी अपवित्रता का संकल्प न हो। तभी पूज्य है, नहीं तो खण्डित हो जाती है और खण्डित की पूजा नहीं होती। तो इस विशेषता को जानती हो?

इतनी सब कुमारियाँ सेवाधारी बन जाएं तो कितने सेन्टर खुल जाएं! बापदादा किसी को लौकिक सेवा छोड़ने के लिए भी नहीं कहते। लेकिन बैलेंस हो। जितना-जितना इस सेवा में बिज़ी होती जायेंगी तो वह आपेही छूट जायेगी। किसी को कहो नौकरी छोड़ो तो सोच में पड़ जाते। जैसे अज्ञानी को कहो बीड़ी छोड़ो, सिग्रेट छोड़ो, तो छोड़ने से नहीं छूटती, अनुभव से छोड़ देते हैं। ऐसे ही

आप भी जब इस सेवा में बिजी हो जायेंगे तो वह छूट जायेगी। अभी तक गुजरात को दहेज में सेन्टर नहीं मिले हैं, बाम्बे को मिले हैं। गुजरात जो चाहे वह कर सकता है। कमी नहीं है सिर्फ संकल्प और सिस्टम नहीं शुरु हुई है। सभी कुमारियाँ बापदादा के कुल की दीपक हो ना? अपने भाग्य को देखकर सदा हर्षित रहो तो इस जीवन में बाप की बन गई। यही जीवन गिराने वाली भी है और चढ़ाने वाली भी है। तो सभी चढ़ती कला के रास्ते पर पहुंच गई हो।

(29-10-1981)

प्रश्न - कुमारियों को कौन-सी कमाल करके दिखानी चाहिए?

उत्तर - सबसे बड़े ते बड़ी कमाल है, बाप ने कहा और बच्चों ने किया। जैसे चात्रक होता है ना, बूंद आई और धारण की। तो सबसे बड़ी कमाल है बाप का हर बोल करके दिखाना। कर्म से बाप के बोल को प्रत्यक्ष करना। यह है कुमारियों की कमाल। इसीलिए यादगार में भी दिखाते हैं कुमारियों ने बाप को प्रत्यक्ष किया। विजय प्राप्त की ना! तो वह कौन-सी कुमारी थी? हरेक समझें 'मैं'। इसमें हरेक अपने को आगे रखे। पहले मैं। इसको कहा जाता है कुमारियों की कमाल। हरेक बाप को प्रत्यक्ष करने वाली निमित्त आत्मा बन जाए सभी अमूल्य रत्न हो जायेंगे।

(28-11-1981)

मॉरीशियस की कुमारी पार्टी भी बहुत अच्छी है। हरेक कुमारी 100 ब्राह्मणों से उत्तम है। अगर 4 कुमारियाँ भी आई तो 400 ब्राह्मण आ गये। यह सोच रही हैं कि हमारा ग्रुप बहुत छोटा है लेकिन आप में 400 समाये हुए हैं। छोटा नहीं है।

(16-01-1982)

कुमारियों के साथ:– कुमारियों का लक्ष्य क्या है? सेवा करने के लिए पहले स्वयं में सर्व प्राप्ति का अनुभव कर रही हो? क्योंकि जितना खज़ाना अपने पास होगा उतना औरो को दे सकेंगी। तो रोज इस अलौकिक पढ़ाई पर अटेन्शन देती हो? पढ़ने के साथ-साथ सेवा का भी चांस लेती हो? सदा अपने को गॉडली स्टूडेन्ट समझते हुए स्टडी के तरफ अटेन्शन। जितना स्वयं स्टडी के तरफ अटेन्शन रखेंगी उतना औरों को भी अनुभवी बन स्टडी करा सकेंगी। इस समय के हिसाब से गृहस्थी जीवन क्या है, उसको भी देख रही हो ना! गृहस्थी जीवन माना इस बेहद की जेल में फँसना। अभी फ्री हो ना! कितने बन्धनों से मुक्त हो! तो सदा ही ऐसे बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त स्थिति में स्थित रहना। कभी भी यह संकल्प न आये कि गृहस्थी जीवन का भी अनुभव करके देखें। बहुत भाग्यवान हो जो कुमारी जीवन में बाप की बनी हो। तो राइट हैन्ड बनना, लेफ्ट हैन्ड नहीं।

2. सभी कुमारियों ने बाप से पक्का सौदा किया है? क्या सौदा किया है? आपने कहा - बाबा हम आपके और बाप ने कहा बच्चे हमारे, यह पक्का सौदा किया? और सौदा तो नहीं करेंगी ना! दो नांव में पांव रखने वाले का क्या हाल होगा! न यहाँ के न वहाँ के? तो सौदा करने में होशियार हो ना! देखो, देते क्या हो - पुराना शरीर जिसको सुईयों से सिलाई करते रहते, कमजोर मन जिसमें कोई शक्ति नहीं और काला धन... और लेते क्या हो? - 21 जन्म की गैरन्टी का राज्य। ऐसा सौदा तो सारे कल्प में कभी भी नहीं किया? तो पक्का सौदा किया? एग्रीमेंट लिख ली। बापदादा को कुमारियाँ बहुत प्रिय लगती हैं - क्योंकि कुमारी सरेन्डर हुई और टीचर बन गई। कुमार सरेन्डर हुए तो टीचर नहीं कहलायेंगे, सेवाधारी कहलायेंगे। कुमारी को टीचर की सीट मिल जाती है। आज कुमारी कल उसको सब बाप समान निमित्त शिक्षक की नज़र से देखते हैं। तो श्रेष्ठ हो गई ना! कुमारी जीवन में श्रेष्ठ बन जाए तो उल्टी सीढ़ी चढने से बच जाए। आप लोग न चढ़े न उतरने की मेहनत। प्रवृत्ति वालों को मेहनत करनी पड़ती है। तो सदा विश्व कल्याणकारी कुमारी। बापदादा सभी को सफलता स्वरूप समझते हैं - एक दो से

आगे जाओ, रेस करना, रीस नहीं करना। हरेक की विशेषता को देखकर विशेष आत्मा बनना।

3. कुमारी वा सेवाधारी के बजाय अपने को शक्ति स्वरूप समझो:– सदा अपना शिव-शक्ति स्वरूप स्मृति में रहता है? शक्ति स्वरूप समझने से सेवा में भी सदा शक्तिशाली आत्माओं की वृद्धि होती रहेगी। जैसी धरनी होती है वैसा फल निकलता है। तो जितनी अपनी स्वयं की शक्तिशाली स्टेज बनाते, वायुमण्डल को शक्ति स्वरूप बनाते उतना आत्मायें भी ऐसी आती हैं। नहीं तो कमज़ोर आत्मायें आयेंगी और उनके पीछे बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। तो सदा अपना 'शिव-शक्ति स्वरूप', 'स्मृति भव'। कुमारी नहीं, सेवाधारी नहीं - 'शिव शक्ति'। सेवाधारी तो बहुत हैं, यह टाइटल तो आजकल बहुतों को मिल जाता है लेकिन आपकी विशेषता है - 'शिव शक्ति कम्बाइन्ड'। इसी विशेषता को याद रखो। सेवा की वृद्धि में सहज और श्रेष्ठ अनुभव होता रहेगा। सेवा करने के लिफ्ट की गिफ्ट जो मिली है उसका रिटर्न देना है। रिटर्न क्या है? शक्तिशाली - सफलता मूर्त।

(16-04-82)

कुमारियों से :- कुमारियाँ तो अपना भाग्य देख सदा हर्षित होती हैं। कुमारी लौकिक जीवन में भी ऊंची गाई जाती है और ज्ञान में तो कुमारी है ही महान। लौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें और पारलौकिक में भी श्रेष्ठ आत्मायें। ऐसे अपने को महान समझती हो? आप तो 'हाँ' ऐसे कहो जो दुनिया सुने। कुमारियों को तो बापदादा अपने दिल की तिजोरी में रखता है कि किसी की भी नजर न लगे। ऐसे अमूल्य रतन हो। कुमारियाँ सदा पढ़ाई और सेवा इसी में ही बिजी रहती हैं। कुमारी जीवन में बाप मिल गया और चाहिए ही क्या। अनेक सम्बन्धों में भटकना नहीं पड़ा, बच गई। एक में सर्व सम्बन्ध मिल गये। नहीं तो पता है कितने व्यर्थ के सम्बन्ध हो जाते, सासू का, नंनद का, भाभियों का....सबसे बच गई ना।

न जाल में फँसी, न जाल से छुड़ाने का समय ही था। कुमारियाँ तो हैं ही डबल लाइट। कुमारियाँ सदा बाप समान सेवाधारी और बाप समान सर्व धारणाओं स्वरूप। कुमारी जीवन अर्थात् प्युअर जीवन। प्युअर आत्मायें श्रेष्ठ आत्मायें हुई ना। तो बापदादा कुमारियों को महान पूज्य आत्मा के रूप में देखते हैं। पवित्र आत्मायें सर्व की और बाप की प्रिय हैं।

अपने भाग्य को सदा सामने रखते हुए समर्थ आत्मा बन सेवा में समर्थी लाते रहो। यही बड़ा पुण्य है। जो स्वयं को प्राप्ति हुई है वह औरों को भी कराओ। खजानों को बाँटने से खजाना और ही बढ़ेगा - ऐसे शुभ संकल्प रखने वाली कुमारी हो ना। अच्छा -

टीचर्स के साथ :– विश्व के शोकेस में विशेष शोपीस हो ना। सबकी नजर निमित्त बने हुए सेवाधारी कहो, शिक्षक कहो, उन्हीं पर ही रहती है। सदा स्टेज पर हो। कितनी बड़ी स्टेज है। और कितने देखने वाले हैं। सभी आप निमित्त आत्माओं से प्राप्ति की भावना रखते हैं। सदा यह स्मृति में रहता है? सेन्टर पर रहती हो वा स्टेज पर रहती हो? सदा बेहद की अनेक आत्माओं के बीच बड़े ते बड़ी स्टेज पर हो। इसलिए सदा दाता के बच्चे देते रहो और सर्व की भावनायें सर्व की आशायें पूण करते रहो। महादानी और वरदानी बनो, यही आपका स्वरूप है। इस स्मृति से हर संकल्प, बोल और कर्म हीरो पार्ट के समान हो क्योंकि विश्व की आत्मायें देख रही हैं। सदा स्टेज पर ही रहना, नीचे नहीं आना। निमित्त सेवाधारियों को बापदादा अपना फ्रैन्डस समझते हैं। क्योंकि बाप भी शिक्षक है तो बाप समान निमित्त बनने वाले फ्रैन्डस हुए ना। तो इतनी समीप की आत्मायें हो। ऐसे सदा अपने को बाप के साथ वा समीप अनुभव करती हो? जब भी बाबा कहो तो हजार भुजाओं के साथ बाबा आपके साथ है। ऐसे अनुभव होता है? जो निमित्त बने हुए हैं उन्हीं को बापदादा एकस्ट्रा सहयोग देते हैं। इसीलिए बड़े फखुर से बाबा कहो, बुलाओ, तो हाजिर हो जायेंगे। बापदादा तो ओबीडियन्ट हैं ना।

(11-01-1983)

कुमारियों की भट्ठी में प्राण अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य

आज बापदादा सब बच्चो से कहाँ मिलन मना रहे हैं? किस स्थान पर बैठे हो? सागर और नदियों के मिलन स्थान पर मिलन मना रहे हैं। सागर का कण्ठा पसन्द आता है ना! सिर्फ़ सागर नहीं लेकिन अनेक नदियों का सागर के साथ मिलन स्थान कितना श्रेष्ठ होगा। सागर को भी नदियों का मिलन कितना प्यारा लगता है। ऐसा मिलन मेला फिर किसी युग में होगा? इस युग का 'मिलन' सारा कल्प भिन्न-भिन्न रूप और रीति से गाया मनाया जायेगा। ऐसा मेला मनाने के लिए आये हो ना, यहाँ वहाँ से इसलिए भागे हो ना! सागर में समाए, समान मास्टर ज्ञान सागर बनने का अनुभव है ना! जब सागर में समा जाते हो तो नदी से मास्टर ज्ञान सागर बन जाते हो अर्थात् बाप समान बेहद के स्वरूप में स्थित हो जाते हो। ऐसा बेहद का अनुभव करते हो? बेहद की वृत्ति अर्थात् सर्व आत्माओं के प्रति कल्याण की वृत्ति - मास्टर विश्व कल्याणकारी। सिर्फ अपने वा अपने हद के निमित्त बनी हुई आत्माओं के कल्याण अर्थ नहीं, लेकिन सर्व के कल्याण की वृति हो। मैं तो ब्रह्माकुमारी बन गई, पवित्र आत्मा बन गई - अपनी उन्नति में, अपनी प्राप्ति में, अपने प्रति सन्तुष्टता में राजी होकर चल रहे हैं, यह बाप समान बेहद की वृत्ति रखने की स्थिति नहीं है। हद की वृत्ति अर्थात सिर्फ़ स्वयं प्रति सन्तुष्टता की वृत्ति। क्या यहाँ तक ही सिर्फ रहना है वा आगे बढ़ना है? कई बच्चे बेहद की सेवा का समय, बेहद की प्राप्ति का समय, बाप समान बनने का गोल्डन चान्स वा गोल्डन मैडल लेने के बजाए, मैं ठीक चल रही हूँ, कोई गलती नहीं करती, लौकिक, अलौकिक जीवन दोनों अच्छा निभा रही हूँ, कोई खिट-खिट नहीं, कोई संगठन के संस्कारों का टक्कर नहीं, इसी सिल्वर मैडल में ही खुश हो जाते हैं। बाप समान बेहद की वृत्ति तो नहीं रही ना! बाप विश्व-कल्याणकारी और बच्चे - स्व कल्याणकारी, ऐसी जोड़ी अच्छी लगेगी? सुनने में अच्छी नहीं लग रही है। और अब बनकर चलते हो तब अच्छी लगती है? सर्व खज़ानों के मालिक के बालक खज़ानों के महादानी नहीं बने तो उसको क्या कहा जायेगा? किसी से भी पूछो तो बाप के सर्व खज़ानों के

वर्से के अधिकारी हो? तो सब हाँ कहेंगे ना। खज़ाना किसलिए मिला है? सिर्फ स्वयं खाओ पियो और अपनी मौज में रहो, इसलिए मिला है? बाँटो और बढ़ाओ यही डायरेक्शन मिले हैं ना। तो कैसे बाँटेंगे? गीता पाठशाला खोल ली वा जब चांस मिला तब बाँट लिया इसमें ही सन्तुष्ट हो? बेहद के बाप से बेहद की प्राप्ति और बेहद की सेवा के उमंग उत्साह में रहना है। कुमारी जीवन संगमयुग में सर्व श्रेष्ठ वरदानी जीवन है। तो ऐसी वरदानी जीवन ड्रामा अनुसार आप विशेष आत्माओं को स्वत: प्राप्त है। ऐसी वरदानी जीवन सर्व को वरदान, महादान देने में लगा -रहे हो? स्वत: प्राप्त हुए वरदान की लकीर श्रेष्ठ कर्म की कलम द्वारा जितनी बड़ी खींचने चाहो उतनी खींच सकते हो। यह भी इस समय को वरदान है। समय भी वरदानी, कुमारी जीवन भी वरदानी, बाप भी वरदाता। कार्य भी वरदान देने का है तो इसका पूरा पूरा लाभ लिया है? 21 जन्मों तक लम्बी लकीर खींचने का चांस, 21 पीढ़ी सदा सम्पन्न बनने का चान्स जो मिला है वह ले लिया? कुमारी जीवन में जितना चाहो कर सकते हो। स्वतंत्र आत्मा का भाग्य प्राप्त है। अपने से पूछो - स्वतन्त्र हो या पर-तंत्र हो? परतंत्रता के बन्धन अपने ही मन के व्यर्थ कमज़ोर संकल्पों की जाल है। उसी रची हुई जाल में स्वयं को परतंत्र तो नहीं बना रहे हो? क्वेश्चन की जाल है। जो जाल रचते हो उसका चित्र निकालो तो क्वेश्चन का ही रूप होगा। क्वेश्चन क्या उठते हैं, अनुभवी हो ना! क्या होगा, कैसे होगा, ऐसे तो नहीं होगा, यह है जाल। पहले भी सुनाया था - संगमयुगी ब्राह्मणों का एक ही सदा समर्थ संकल्प है कि - 'जो होगा वह कल्याणकारी होगा। जो होगा श्रेष्ठ होगा, अच्छे ते अच्छा होगा।' यह संकल्प है जाल को समाप्त करने का। जबकि बुरे दिन, अकल्याण के दिन समाप्त हो गये। संगमयुग का हर दिन बड़ा दिन है, बुरा दिन नहीं। हर दिन आपका उत्सव है ना। हर दिन मनाने का है। इस समर्थ संकल्प से व्यर्थ संकल्पों की जाल को समाप्त करो।

कुमारियाँ तो बापदादा की, ब्राह्मण कुल की शान हैं। फर्स्ट चान्स कुमारियों को मिलता है। पाण्डव हँसते हैं कि छोटी छोटी कुमारियाँ टीचर बन जातीं, दादी

बन जातीं, दीदी बन जातीं। तो इतना चान्स मिलता है। फिर भी चान्स न लें तो क्या कहेंगें। क्या बोलती हो, पता है? सहयोगी रहेंगे लेकिन समर्पण नहीं होंगे। जो समर्पण नहीं होंगे वह समान कैसे बनेंगे! बाप ने क्या किया? सब कुछ समर्पित किया ना! वा सिर्फ सहयोगी बना? ब्रह्मा बाप ने क्या किया? समर्पण किया वा सिर्फ़ सहयोगी रहा? जगत अम्बा ने क्या किया? वह भी कन्या ही रही ना। तो फ़ालो फ़ादर मदर करना है वा एक दो में सिस्टर्स को फ़ालो करते हो? 'इसका जीवन, जीवन देखकर मुझे भी यही अच्छा लगता है।' तो फ़ालो सिस्टर्स हो गया ना! अब क्या करेंगी? डर सिर्फ अपनी कमजोरी से होता है। और किसी से नहीं होता। अब क्या लेंगी? गोल्डन मैडल लेंगी वा सिलवर ही ठीक है। कमजोरियों को नहीं देखो। वह देखेंगी तो डरेंगी। न स्वयं कमजोर बनो न दूसरों की कमजोरियों को देखो! समझा, क्या करना है!

बापदादा को तो कुमारियाँ देख करके खुशी होती है। लोगों के पास कुमारी आती है तो दुख होता है। और बापदादा के पास जितनी कुमारियाँ आवें उतना ज्यादा से ज्यादा खुशी मनाते हैं। क्योंकि बापदादा जानते हैं कि हर कुमारी विश्वकल्याणकारी, महादानी, वरदानी है। तो समझा, कुमारी जीवन का महत्व कितना है! आज विशेष कुमारियों का दिन है ना। भारत में अष्टमी पर कुमारियों को खास बुलाते हैं। तो बापदादा भी अष्टमी मना रहे हैं। हर कन्या अष्ट शक्ति स्वरूप है।

कुमारियों के अलग-अलग ग्रुप से बापदादा की मुलाकात:-

(1) वरदानी कुमारियां हो ना! धीरे-धीरे चलने वाली हो या उड़ने वाली हो? उड़ने वाली अर्थात् हद की धरनी को छोड़ने वाली। जब धरनी को छोड़ें तब उड़ेंगी ना! नीचे तो नहीं उड़ेंगी। नीचे वाले को शिकारी पकड़ लेते हैं। नीचे आया पिंजरे में फँसा। उड़ने वाला पिंजरे में नहीं आता। तो पिंजरा छोड़ दिया! अभी क्य करेंगी? नौकरी करेंगी? ताज पहनेंगी या टोकरी उठायेंगी? जहाँ ताज होगा वहाँ

टोकरी चलेगी नहीं। ताज उतारेंगी तब टोकरी रख सकेंगी। टोकरी रखेंगी तो ताज गिर जायेगा। तो ताजधारी बनना है या टोकरीधारी। अभी विश्व की सेवा की ज़िम्मेवारी का ताज और भविष्य रत्न जड़ित जाज। अभी विश्व की सेवा का ताज पहनो तो विश्व आपको धन्य आत्मा, महान आत्मा माने। इतना बड़ा ताज पहनने वाले टोकरी क्या उठायेंगे! 63 जन्म तो टोकरी उठाते रहे, अब ताज मिलता है तो ताज पहनना चाहिए ना! क्या समझती हो? दिल नहीं है लेकिन करना पड़ता है! क्या ऐसे सरकमस्टांस हैं? धीरे-धरे लौकिक को सन्तुष्ट करते अपने को निर्बन्धन कर सकती हो। निर्बन्धन होने का प्लैन बनाओ। बेहद सेवा का लक्ष्य रखो तो हद के बन्धन स्वतः टूट जायेंगे। लक्ष्य दो तरफ का होता है तो लौकिक अलौकिक दोनों में सफल नहीं हो सकते। लक्ष्य क्लीयर हो तो लौकिक में भी मदद मिलती है। निमित्त मौत्र लौकिक, लेकिन बुद्धि में अलौकिक सेवा हो तो मज़बूरी भी मुहब्बत के आगे बदल जाती है।

(2) सभी कुमारियों ने अपनी तकदीर का फैसला कर लिया है या करना है? जितना समय अपने जीवन के फैसले में लगाती हो उतना प्राप्ति का समय चलता जाता है। इसलिए फैसला करने में समय नहीं गँवाना चाहिए। सोचा और किया - इसको कहा जाता है नम्बरवन सौदा करने वाले। सेकण्ड में फैसला करने वाले गोल्डन मैडल लेते हैं। सोच-सोचकर फैसला करने वाले सिलवर मैडल लेते और सोचकर भी फैसला नहीं कर पाते वह कापर वाले हो गये। आप सब तो गौल्डन मैडल वाले हो ना! जब गोल्डन एज में जाना है तो गोल्डन मैडल चाहिए ना। राम सीता बनने में कोई हाथ नहीं उठाते। लक्ष्मी नारायण तो गोल्डन एजड हैं ना। तो सभी ने अपने तकदीर की लकीर ऐसी खींच ली है या कभी-कभी हिम्मत नहीं होती। सदा उमंग उत्साह में उड़ने वाली, कुछ भी हो लेकिन अपनी हिम्मत नहीं छोड़ना। दूसरे की कमज़ोरी देखकर स्वयं दिलशिकस्त नही होना। पता नहीं हमारा तो ऐसा नहीं होगा! अगर एक कोई खड्डे में गिरता है तो दूसरा क्या करेगा? खुद गिरेगा या उसको बचाने की कोशिश करेगा? इसलिए कभी भी दिलशिकस्त

नहीं होना। सदा उमंग उत्साह के पंखों से उड़ते रहना। किसी भी आकर्षण में नीचे नहीं आना। शिकारी जब फँसते हैं तो अच्छा-अच्छा दाना डाल देते हैं। माया भी ऐसे करती है। इसलिए सदा उड़ती कला में रहना तो सेफ रहेंगी। पीछे की बात सोचना, कमजोरी की बात सोचना पीछे देखना है, पीछे देखना अर्थात् रावण का आना।

(3) शक्ति सेना हो ना। सबके हाथ में विजय का झण्ड़ा है। विश्व के ऊपर विजय का झण्डा है या सिर्फ स्टेट के ऊपर है? विश्व के अधिकारी बनने वाले विश्व सेवाधारी होंगे। हद के सेवाधारी नहीं। बेहद के सेवाधारी जहाँ भी जाएं वहाँ सेवा करेंगे। तो ऐसे बेहद सेवा के लिए तैयार हो? विश्व की शिक्तियाँ हो तो स्वयं ही आफर करो। 2 मास 6 मास की छुट्टी लेकर ट्रायल करो। एक कदम बढ़ायेंगी तो 10 कदम बढ़ जायेंगे, एक दो मास निकल कर अनुभव करो। जब कोई बढ़िया चीज से दिल लग जाती है तो घटिया स्वतः छुट जाती है, ऐसे ट्रायल करो। संगमयुग आगे बढ़ने का समय है। ब्रह्माकुमारी बन गयी, ज्ञान स्वरूप बन गयी, यह तो बहुत समय हो गया। अब आगे बढ़ो। कुछ तो आगे कदम बढ़ाओ वहाँ ही नहीं ठहरो। कमजोर को नहीं देखो। शक्तियों को देखो, बकरियों को क्यें देखते! बकरियों को देखने से खुद का भी कांध नीचं हो जाता। डर लगता है - पता नहीं क्या होगा? कमजोर को देखने से डरते हो इसलिए उन्हें मत देखो। शक्तियों को देखो तो डर निकल जायेगा।

(4) आप सब कुमारियाँ अपने को विशेष आत्मायें समझती हो ना? विशेष आत्मायें अर्थात् विशेष कार्य के निमित्त। एक-एक विशेष कार्य के निमित्त बनी हुई हो। एक-एक कुमारी 21 कुल तारने वाली हैं। जब भी जहाँ भी आर्डर मिले तो हाजिर। ऐसे निर्विघ्न सेवाधारी हो ना! जिस समय जो भी सेवा मिले, हाजिर। सेवा करना अर्थात् प्रत्यक्ष फल खाना। जब प्रत्यक्षफल मिल जाता है। तो फल खाने से शक्ति आती है। प्रत्यक्षफल खाने से आत्मा शक्तिशाली बन जाती है। जब ऐसी प्राप्ति हो तो करनी चाहिए ना। लौकिक में तो एक मास नौकरी करेंगे फिर पीछे

तनाखा मिलेगी। यहाँ तो प्रतयक्षफल मिलता है। भविष्य तो जमा ही होता है लेकिन वर्तमान में भी मिलता है। तो ऐसे डबल फल मिलने वाला कार्य तो पहले करना चाहिए ना! कइयों को बापदादा, दादी-दीदी डायरेक्शन देते हैं सर्विस करो, श्रीमत पर करने से जिम्मेवार खुद नहीं रहते। अपने मन के लगाव से, कमजोरी से करते तो श्रेष्ठ नहीं बन सकते, ट्रायल में स्वयं भी सन्तुष्ट रहें और दूसरों को भी करें तो सर्टिफिकेट मिल जाता है। अपने को मिलाकर चलने का लक्ष्य हो। मुझे बदलना है। स्वयं को बदलने की भावना वाला सभी बातों में विजयी हो जाता है। दूसरा बदले यह देखने वाला धोखा खा लेते हैं। इसलिए सदैव मुझे बदलना है, मुझे करना है, पहले हर बात में स्वयं को आगे करना है, अभिमान में नहीं - करने में आगे करो तो सफॅलता ही सफलता है।

(5) बाप का बनना अर्थात् उड़ती कला के वरदानी बनना। इसी वरदान को जीवन में लाने से कभी भी किसी कदम में भी पीछे नहीं होंगे। आगे ही बढ़ते रहेंगे। सर्वशक्तिवान बाप का साथ है तो हर कदम में आगे है। स्वयं भी सदा सम्पन्न और दूसरों को भी सम्पन्न बनाने की सेवा करो। किसी प्रकार की कमी अनुभव न हो। सर्व-प्राप्ति स्वरूप। इसको कहा जाता है सम्पन्न किसी भी प्रकार की रुकावट अपने कदमों को रुकाने वाली ना हो। उड़ती कला वाले किसी के बन्धन में नहीं आ सकते। सर्व बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं।

संगठन में सफलता पाने का साधन ही एक है - स्वयं को बदलना है । दूसरे को बदलने का नहीं सोचना लेकिन स्वयं बदलना है। जो मोल्ड होने जाना है वही रीयल गोल्ड बन जाता है। क्या थे और क्या बन गये यह भाग्य देख सदा हर्षित रहो। बाप की बनी आर्थात् महान बनी। अभी अनेक आत्माओं को महान बनाने की सेवा करो।

(27.3.1983)

जो भी आये वह कुमारी नहीं देखे लेकिन तपस्वी कुमारी देखे। जिस

स्थान पर रहते हो वह तपस्या-कुण्ड अनुभव हो। अच्छा स्थान है, पवित्र स्थान है, यह भी ठीक लेकिन 'तपस्या कुण्ड' अनुभव हो। तपस्या कुण्ड में जो भी आयेगा वह स्वयं भी तपस्वी हो जायेगा। तो तपस्या के प्रैक्टिकल स्वरूप में जाओ। तब जयजयकार होगी। तपस्या के आगे झुकेंगे। ब्रह्माकुमार के आगे महिमा करते हैं, तपस्वी कुमार के आगे झुकेंगे। तपस्या कुण्ड बनाओ फिर देखो कितने परवाने आपेही आ जाते हैं। तपस्या भी ज्योति है, ज्योति पर परवाने आपेही आयेंगे। सेवाधारी बनने का भाग्य बन चुका अब तपस्वी कुमारी का नम्बर लो। सदा शान्ति का दान देने वाली महादानी आत्मायें बनो। बापदादा वर्तमान समय मंसा सेवा के ऊपर विशेष अटेन्शन दिलाते हैं। वाचा की सेवा से इतनी शक्तिशाली आत्मायें नहीं निकलती हैं लेकिन मंसा सेवा से शक्तिशाली आत्मायें प्रत्यक्ष होंगी। वाणी तो चलती रहती है लेकिन अभी एडीशन चाहिए - शुद्ध संकल्प के सेवा की। तो स्वरूप बन करके स्वरूप बनाने की सेवा करो, अभी इसी की आवश्यकता है। अभी सबका अटेन्शन इस पाईंट पर हो। इसी से नाम बाला होगा। अनुभवी मूर्त अनुभव करा सकेंगे। इसी पर विशेष अटेन्शन देते रहो। इसी से मेहनत कम सफलता ज़्यादा होगी। मंसा धरनी को परिवर्तन कर देती है। सदा इसी प्रकार से वृद्धि करते रहो। अभी यही विधि है वृद्धि करने की।

(13-04-1983)

कुमारियों से :- कुमारियों ने अपना फैसला कर लिया है? क्योंकि कुमारी जीवन ही फैसले का समय होता है। फैसले के समय पर बाप के पास पहुँच गई, कितनी भाग्यवान हो! अगर थोड़ा भी आगे जीवन चल जाती तो पिंजरे की मैना बन जाती। तो क्या बनना है - पिंजरे की मैना या स्वतन्त्र पंछी? कुमारी तो स्वतन्त्र पंछी है। कुमारियों को नौकरी करने की भी क्या आवश्यकता है! क्या बैंक बैलेन्स करना है? लौकिक बाप के पास रहेंगी तो भी दो रोटी मिल जायेंगी, अलौकिक के पास रहेंगी तो भी कोई कमी नहीं, फिर नौकरी क्यों करती? क्या

सेन्टर पर रहने में डर लगता है! अगर कहते ममता है तो भी दु:ख की लहर आ सकती है। वैसे भी कुमारी घर में नहीं रहती। इसी नशे में रहो - हम हैं बाप के तख्तनशीन। सतयुग का राज्य तख्त भी इस तख्त के आगे कुछ नहीं है। सदा ताज और तिलकधारी हैं, इस स्मृति में रहो। अगर कोई को बैठने के लिए बढ़िया आसन मिल जाए तो छोड़ेगा कैसे! बनना है तो श्रेष्ठ ही बनना है, हाँ तो हाँ। मरना है तो धक से। यही मरना मीठा है। अगर लक्ष्य पक्का है तो कोई भी हिला नहीं सकता। लक्ष्य कच्चा है तो कई बहाने, कई बातें आयेंगी जो रुकावट डालेंगी। इसलिए सदा दृढ़ संकल्प करना।

(02-05-1983)

अहमदावाद, होस्टल में रहने वाली कुमारियों का ग्रुप :- कुमारी जीवन अर्थात् स्वतन्त्र जीवन, इस स्वतन्त्रता से क्या मिलता है और श्रेष्ठ भाग्य बनाने वाले से क्या मिलता है - यह सदा स्मृति में रहता है? या समझती हो कि हम तो कालेज में पढ़ने वाली लड़कियाँ हैं। सदा यह स्मृति में रखो - जैसा बाप वैसी मैं। बाप क्या है? सेवाधारी है। तो सभी सेवा करती हो ना! सभी कुमारियाँ बाप की माला के मणके हो? पक्का? और किसके गले की माला तो नहीं बनेंगी। जो बाप के गले की माला बन गई वह दूसरों के गले की माला नहीं बन सकती। क्या संकल्प किया है? और कहाँ स्वप्न में भी नहीं जा सकती। ऐसे पक्के? एक बाप के बने और सर्व खज़ानों के अधिकारी बन गये। सर्व अधिकार छोड़कर दो पैसों के पीछे जायेंगे क्या! वह दो पैसे भी तब मिलते जब दो चमाट लगाते हैं। पहले दु:ख की, अशान्ति की चमाट लगती फिर दो रोटी खाते। ऐसी जीवन तो पसन्द नहीं है ना? कुमारी जीवन वैसे भी भाग्यवान है और भी डबल भाग्यवान बन गई। अभी सर्व प्रैक्टिकल पेपर देंगी ना! वह कागज़ वाला पेपर नहीं। सदा शिव शक्ति है, कम्बाइन्ड हैं - यह स्मृति सदा रखना। कुमारियों का कहाँ-न-कहाँ जाना तो होता ही है। अगर ऐसा श्रेष्ठ घर मिल जाए तो और क्या चाहिए। कुमारियाँ सोचती हैं

अच्छा घर, भरपूर घर मिले। यह कितना भरपूर घर है जहाँ कोई अप्राप्ति नहीं। ऐसा भाग्य तो सबको मिलना चाहिए। वाह मेरा भाग्य... यही गीत गाओ। जैसे चन्द्रमा की चाँदनी सबको प्रिय लगती है ऐसे ज्ञान की रोशनी देने वाली बनो। ज्ञान चन्द्रमा समान बनो। जैसे स्वयं के भाग्य का सितारा चमका है ऐसे ही सदा औरों के भाग्य का सितारा चमकाओ। तो सभी आपको बार बार आशीर्वाद देंगे।

सभी कुमारियाँ स्कालरशिप लेंगी ना। स्कालरशिप लेना माना - विजय-माला में आना। ऐसा तीव्र पुरूषार्थ हो जो विजयमाला में आ जाओ। इतनी पालना जो ले रहे हो उसका रिटर्न तो देंगी ना। पालना का रिटर्न है - बाप समान बनना, स्कालरशिप लेना। तो सदा यह दृढ़ संकल्प रखो कि विजयी बन विजय माला के मणके बनने वाले हैं। सभी इस जीवन से सन्तुष्ट हो? कभी वह जीवन खाना, पीना, घूमना - यह याद तो नहीं आता? दूसरों को देखकर यह नहीं आता कि हम भी थोड़ा टेस्ट तो करें। वह जीवन गिरने की जीवन है - यह जीवन चढ़ने की जीवन है। चढ़ने से गिरने की तरफ कौन जायेगा! सदा एवररेडी रहो। अपने रीति से सदा तैयार रहो। कोई पढ़ाई की रीति से शौक का बन्धन नहीं। जहाँ कुमारियों का सगंठन है वहाँ सेवा में वृद्धि है ही। जहाँ शुद्ध आत्मायें हैं वहाँ सदा ही शुभ कार्य है। सभी आपस में संस्कार मिलाने की सब्जेक्ट में पास हो ना। कोई खिटखिट नहीं, कहाँ भी दृष्टि वृत्ति नहीं! एक बाप दूसरा न कोई... विशेष कुमारियों को इस बात में सर्टीफिकेट लेना है। जैसे नाम है बाल ब्रह्मचारिणी... वैसे संकल्प भी ऐसा पवित्र हो - इसको कहा जाता है - स्कालरशिप लेना। फिर राइटहैण्ड हो। सदा एक बाप दूसरा न कोई - ऐसी शिव शक्तियाँ हैं। यही याद रखना तो किसी भी प्रकार की माया वार नहीं करेगी।

(09-05-1983)

कुमारियों से :- कुमारियाँ अपने श्रेष्ठ भाग्य को अच्छी तरह से जानती हैं ना? कभी अपने श्रेष्ठ भाग्य को भूलती तो नहीं! सदा भाग्य को स्मृति में रखते

हुए आगे बढ़ती चलो। संगमयुग में विशेष लिफ्ट की गिफ्ट कुमारियों को मिलती है। क्योंकि कुमारी जीवन फिकर से फारिग जीवन है। घर चलाने का, नौकरी टोकरी का कोई फिकर नहीं। कुमारी अर्थात स्वतन्त्र। स्वतन्त्रता सभी को प्रिय लगती है। अज्ञान में भी सबका लक्ष्य यही रहता कि हम स्वतन्त्र रहें। इसीलिए स्वतन्त्र आत्मा हूँ, यह स्वतन्त्रता का वरदान आप सबको प्राप्त है। स्वतन्त्रता के वरदानी और सबको भी यही वरदान देंगी ना। कोई के भी चक्र में फँसने वाली नहीं। जब चक्र से निकल चुकी, स्वतन्त्र हैं तो सेवा करेंगी ना। निमित्त मात्र यह पढ़ाई जो रही है वह करते भी सदा सेवा की स्मृति रहे। पढ़ाई पढ़ते समय भी यह लक्ष्य रहे कि कौनसी ऐसी आत्मा है जिसे बाप का बनायें। पढ़ाई पढ़ते-पढ़ते परखते रहो कि कौन सी आत्मायें योग्य हैं। तो वहाँ भी सेवा हो जायेगी। कुमारियों को भाषण करना अवश्य सीखना चाहिए। सभी पढ़ाई पढ़ते भी तैयार होती जाओ। पढ़ाई पूरी होते ही सेवा में लग जाना।

(11-05-1983)

वच्चियों से :- कुमारी जीवन की क्या महिमा है? कुमारियों को पूजा जाता है, क्यों? पवित्र आत्मायें हैं। तो सभी पवित्र आत्मायें पवित्र याद से औरों को भी पवित्र बनाने की सेवा में रहने वाली हो ना! चाहे छोटी हो चाहे बड़ी हो लेकिन बाप का परिचय तो सभी को दे सकते हो ना। छोटे भी बहुत अच्छा भाषण करते हैं। बापदादा सबसे छोटे से छोटी कुमारी को बड़ी स्टेज पर भाषण करने के लिए कहें तो तैयार हो? संकोच तो नहीं करेंगी। डर तो नहीं जायेंगी! सदा अपने को विश्व की सर्व आत्माओं का कल्याण करने वाली विश्व कल्याणकारी आत्मा समझो। रिवाजी साधारण कुमारियाँ नहीं लेकिन श्रेष्ठ कुमारी। श्रेष्ठ कुमारी श्रेष्ठ काम करेगी ना। सबसे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ कार्य है - बाप का परिचय दे बाप का बनाना। दुनिया वाले भटक रहे हैं, ढूँढ रहे हैं और तुम लोगों ने जान लिया, पा लिया, कितनी तकदीरवान, भाग्यवान हो! भगवान के बन गये इससे बड़ा भाग्य और कुछ

होता है! तो 'सदा भाग्यवान आत्मा हूँ' - इसी खुशी में रहो। यह खुशी अगर गुम हुई तो फिर कभी रोयेंगे, कभी चंचलता करेंगे। सदा आपस में भी प्यार से रहो और लौकिक माता-पिता के भी कहने पर आज्ञाकारी रहो। पारलौकिक बाप की सदा याद में रहो। तब ही श्रेष्ठ कुमारियाँ बन सकेंगी। तो सदा अपने को श्रेष्ठ कुमारी, पूज्य कुमारी समझो। मन्दिरों में जो शक्तियों की पूजा होती है, वही हो ना! एक-एक कुमारी बहुत बड़ा कार्य कर सकती। विश्व परिवर्तन करने के निमित्त बन सकती हो। बापदादा ने विश्व परिवर्तन का कार्य बच्चों को दिया है। तो सदा बाप और सेवा की याद में रहो। विश्व परिवर्तन करने की सेवा के पहले अपना परिवर्तन करो। जो पहले की जीवन थी उससे बिल्कुल बदलकर, बस - श्रेष्ठ आत्मा हूँ, पवित्र आत्मा हूँ, महान आत्मा हूँ, भाग्यवान आत्मा हूँ, इसी याद में रहो। यह याद स्कूल या कालेज में जाकर भूलती तो नहीं हो ना! संग का रंग तो नहीं लगता! कभी खाने पीने की तरफ कहाँ आकर्षण तो नहीं जाती। थोड़ा बिस्कुट या आइस्क्रीम खा लें, ऐसी इच्छा तो नहीं होती! सदैव याद में रहकर बनाया हुआ भोजन - 'ब्रह्मा भोजन' खाने वाली - ऐसे पक्के! देखना, वहाँ जाकर संग में नहीं आ जाना। कुमारियाँ जितना भाग्य बनाने चाहो बना सकती हो। छोटे-पन से लेकर सेवा के शौक में रहो। पढ़ाई भी पढ़ो और पढ़ाना भी सीखो। छोटेपन में होशियार हो जायेंगे तो बड़े होकर चारों ओर की सेवा में निमित्त बन जायेंगे। स्थापना के समय भी छोटे-छोटे थे वह अब कितनी सेवा कर रहे हैं, आप लोग उनसे भी होशियार बनना। कल की तकदीर हो। कल भारत स्वर्ग बन जायेगा तो कल की तकदीर आप हो। कोई भी आपको देखे तो अनुभव करे कि यह साधारण नहीं, विशेष कुमारियाँ हैं।

वह पढ़ाई पढ़ते भी मन की लगन ज्ञान की पढ़ाई में रहनी चाहिए। पढ़ने के बाद भी क्या लक्ष्य है? श्रेष्ठ आत्मा बन श्रेष्ठ कार्य करने का है। नौकरी की टोकरी उठाने का तो नहीं है ना! अगर कोई कारण होता है तो वह दूसरी बात है। माँ-बाप के पास कमाई का दूसरा कोई साधन नहीं है, तो वह हुई मज़बूरी। लेकिन

अपना वर्तमान और भविष्य सदा याद रखो। काम में क्या आयेगा? यह ज्ञान की पढ़ाई ही 21 जन्म काम आयेगी। इसलिए निमित्त मात्र अगर लौकिक कार्य करना भी पड़ता तो भी मन की लगन बाप और सेवा में रहे। तो सभी राइट हैण्ड्स बनना, लेफ्ट हैण्ड नहीं। अगर इतने सब राइट हैण्ड हो जाएँ तो विनाश हुआ कि हुआ। इतनी शक्तियाँ विजय का झण्डा लेकर आ जाएं तो रावण राज्य का समय समाप्त हो जाए। जब ब्रह्माकुमारी बनना है तो फिर डिग्री क्या करेंगी? यह तो निमित्त मात्र जनरल नालेज से बुद्धि विशाल बने उसके लिए यह पढ़ाई पढ़ी जाती। मन की लगन से नहीं, ऐसे नहीं बाकी एक साल में यह डिग्री लें, फिर दूसरे साल में यह डिग्री लें... ऐसे करते-करते काल आ जाए तो... इसलिए जो निमित्त हैं उनसे राय लेते रहो। आगे पढें या न पढ़े? कई हैं जो पढ़ाई की शौक में अपना वर्तमान और भविष्य छोड़ देती हैं। धोखा खा लेती हैं। अपने जीवन का फैसला स्वयं खुद को करना है। माँ बाप कहें, नहीं। स्वयं जज बनो। आप शिव शक्तियाँ हो, आपको कोई बन्धन में बाँध नहीं सकता। बकरियों को बन्धन में बांध सकते हैं, शक्तियों को नहीं। शक्तियों की सवारी शेर पर है, शेर खुले में रहता है, बन्धन में नहीं, तो सदा हम बाप की राइट हैण्ड हैं - यह याद रखना।

(17-05-1983)

प्रश्नः- सेवाकेन्द्र पर अगर कोई प्रवेशता वाली आत्मायें ज्ञान सुनने के लिए आती हैं तो क्या करना चाहिए?

उत्तरः- अगर ज्ञान सुनने से उसमें थोड़ा-सा भी अन्तर आता है या सेकण्ड के लिए भी अनुभव करती है तो उसको उल्लास में लाना चाहिए। कई बार आत्मायें थोड़ा-सा ठिकाना न मिलने के कारण भी आपके पास आती हैं, बदलने के लिए आया है या वैसे ही पागलपन में जहाँ रास्ता मिला, आ गया है यह परखना चाहिए। क्योंकि कई बार ऐसे पागल होते हैं जो जहाँ भी देखेंगे दरवाजा खुला है वहाँ जायेंगे। होश में नहीं होते हैं। तो ऐसे भी कई आयेंगे लेकिन उसको पहले

परखना है। नहीं तो उसमें टाइम वेस्ट हो जायेगा। बाकी कोई अच्छे लक्ष्य से आया है, परवश है तो उसको शक्ति देना अपना काम है। लेकिन ऐसी आत्माओं की कभी भी अकेले में अटेन्ड नहीं करना। कुमारी कोई ऐसी आत्मा को अकेले में अटेन्ड न करें क्योंकि कुमारी को अकेला देख पागल का पागलपन और निकलता है। इसलिए ऐसी आत्माये अगर समझते हो योग्य हैं तो उन्हें ऐसा टाइम दो जिस टाइम दो-तीन और हों या कोई जिम्मेवार, कोई बुजुर्ग ऐसा हो तो उस समय उसको बुलाकर बिठाना चाहिए। क्योंकि जमाना बहुत गन्दा है और बहुत बुरे संकल्प वाले लोग हैं। इसलिए थोड़ा अटेन्शन रखना भी जरुरी है। इसमें बहुत क्लीयर बुद्धि चाहिए। क्लीयर बुद्धि होगी तो हरेक के वायब्रेशन से कैच कर सकेंगे कि यह किस एम से आया है।

(24-02-1984)

कुमारियों के अलग-अलग ग्रुप से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

1. सदा रुहानी याद में रहने वाली रुहानी कुमारियाँ हो ना! देह अभिमान वाली कुमारियाँ तो बहुत हैं लेकिन आप रुहानी कुमारियॉ हो। सदा रुह अर्थात् आत्म की स्मृति में रहने वाली। आत्मा बन आत्मा को देखने वाली इसको कहते हैं-रुहानी कुमारियाँ। तो कौन-सी कुमारियाँ हो? कभी देह अभिमान में आने वाली नहीं। देह अभिमान में आना अर्थात् माया की तरफ गिरना। और रुहानी स्मृति में रहना अर्थात् बाप के समीप आना। गिरने वाले नहीं, बाप के साथ रहने वाले। बाप के साथ कौन रहेंगे? रुहानी कुमारियाँ ही बाप के साथ रह सकती। जैसे बाप सुप्रीम है, कब देह अभिमान में नहीं आता, ऐसे देह-अभिमान में आने वाले नहीं। जिनका बाप से प्यार है, वह रोज प्यार से याद करते हैं, प्यार से ज्ञान की पढ़ाई पढ़ते हैं। जो प्यार से कार्य किया जात है उसमें सफलता होती है। कहने से करते तो थोड़ा समय सफलता होती। प्यार से, अपने मन से चलने वाले सदा चलते। जब एक बार अनुभव कर लिया कि बाप क्या और माया क्या! तो एक बार के

अनुभवी कभी भी धोखे में नही आ सकते। माया भिन्न-भिन्न रुप में आती है। कपड़ों के रुप में आयेगी, माँ-बाप के मोह के रुप में आयेगी, सिनेमा के रुप में आयेगी। घूमने-फिरने के रुप में आयेगी। माया कहेगी यह कुमारियाँ हमारी बनें, बाप कहेंगे हमारी बनें। तो क्या करेगी?

माया को भगाने में होशियार हो? घबराने वाली कमजोर तो नहीं हो? ऐसे तो नहीं सहेलियों के संग में सिनेमा में चली जाओगी! संग के रंग में कभी नहीं आना। सदा बहादुर, सदा अमर, सदा अविनाशी रहना। सदा अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना। गटर में नहीं गिरना। गटर शब्द ही कैसा है। बाप सागर है, सागर में सदा लहराते रहना। कुमारी जीवन में ज्ञान मिल गया, रास्ता मिल गया, मंजिल मिल गई, यह देख खुशी हाती है! बहुत भाग्यवान हो। आज के संसार की हालत देखो। दु:ख दर्द के बिना और कोई बात नहीं। गटर में गिरते हुए चोट के ऊपर चोट खाते रहते। आज का यह संसार है। सुनते हो ना - आज शादी की, कल जल मरी। आज शादी की कल घर आ गई। एक तो गटर में गिरी फिर और चोट पर चोट खाई। तो ऐसी चोट खानी है क्या? इसलिए सदा अपने को भाग्यवान आत्मा समझो। जो बाप ने बचा लिया। बच गये, बाप के बन गये, ऐसे खुशी होती है ना! बापदादा को भी खुशी होती है क्योंकि गिरने से ठोकर खाने से बच गई। तो सदा ऐसे अविनाशी रहना।

2. सभी श्रेष्ठ कुमारियाँ हो ना? साधारण कुमारी से श्रेष्ठ कुमारी हो गई। श्रेष्ठ कुमारी सदा श्रेष्ठ कर्तव्य करने के निमित्त। ऐसे सदा अपने को अनुभव करती हो कि हम श्रेष्ठ कार्य के निमित्त हैं! श्रेष्ठ कार्य क्या है? विश्व कल्याण। तो विश्व कल्याण करने वाली, विश्व कल्याणकारी कुमारियाँ हो। घर में रहने वाली कुमारियाँ नहीं। टोकरी उठाने वाली कुमारियाँ नहीं लेकिन विश्व कल्याणकारी कुमारियाँ। कुमारियाँ वह जो कहते हैं कुल का कल्याण करें। सारा विश्व आपका कुल है। बेहद का कुल हो गया। साधारण कुमारियाँ अपने हद के कुल का कल्याण करती हैं। और श्रेष्ठ कुमारियाँ विश्व के कुल का कल्याण करेंगी। ऐसी

हो ना! कमजोर तो नहीं! डरने वाली तो नहीं! सदा बाप साथ है। जब बाप साथ है तो कोई डर की बात नहीं। अच्छा है, कुमारी जीवन में बच गई यह बहुत बड़ा भाग्य है। रास्ते उल्टे पर जाकर फिर लौटना, यह भी समय वेस्ट हुआ ना! तो समय, शक्तियाँ सब बच गई। भटकने की मेहनत से छूट गई। कितना फायदा हुआ। बस वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य यह देखकर सदा हर्षित रहो। किसी भी कमजोरी से अपनी श्रेष्ठ सेवा से वंचित नहीं होना।

3. कुमारी अर्थात् महान। पवित्र आत्मा को सदा महान आत्मा कहा जाता है। आजकल में महात्मायें भी महात्मा कैसे बनते हैं? पवित्र बनते हैं। पवित्रता के कारण ही महान आत्मा कहे जाते हैं। लेकिन आप महान आत्माओं के आगे वह कुछ भी नहीं हैं। आपकी महानता ज्ञान सहित अविनाशी महानता है। वह एक जन्म में महान बनेंगे फिर दूसरे जन्म में फिर से बनना पड़ेगा। आप जन्म-जन्म की महान आत्मायें हो। अभी की महानता से जन्म-जन्म के लिए महान हो जायेंगी। 21 जन्म महान रहेंगी। कुछ भी हो जाए लेकिन बाप के बने तो सदा बाप के ही रहेंगे। ऐसी पक्की हो ना? कच्ची बनेंगी तो माया खा जायेगी। कच्चे को माया खाती, पक्के को नहीं। देखना - यहाँ सभी का फोटो निकल रहा है। पक्की रहना। घबराने वाली नहीं। जितना पक्का उतना खुशी का अनुभव, सर्व प्राप्तियों का अनुभव करेंगे। पक्के नहीं तो सदा की खुशी नहीं। सदा अपने को महान आत्मा समझो। महान आत्मा से कोई ऐसा साधारण कार्य हो नहीं सकता। महान आत्मा कभी किसी के आगे झुक नहीं सकती। तो माया की तरफ कभी झुकने वाली नहीं। कुमारी माना हैन्डस। कुमारियों का शक्ति बनना अर्थात् सेवा में वृद्धि होना। बाप को खुशी है कि यह होवनहार विश्व सेवाधारी विश्व का कल्याण करने वाली विशेष आत्मायें हैं।

4. कुमारियाँ चाहे छोटी हैं, चाहे बड़ी हैं लेकिन सभी सौ ब्राह्मणों से उत्तम कुमारियाँ हैं - ऐसे समझती हो? सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्या क्यों गाया जाता है? हर एक कन्या कम से कम सौ ब्राह्मण तो जरुर तैयार करेगी। इसलिए सौ ब्राह्मणों से

उत्तम कन्या कहा जाता है। सौ तो कुछ भी नहीं है, आप तो विश्व की सेवा करेंगी। सभी सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्यायें हो। सर्व आत्माओं को श्रेष्ठ बनाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। एसा नशा रहता है? कालेज की, सकूल की कुमारियाँ नहीं। ईश्वरीय विश्व विद्यालय की कुमारियाँ हो। कोई पूछे कौन-सी कुमारियाँ हो? तो बोले हम ईश्वरीय विश्व विद्यालय की कुमारियाँ हैं। यह एक-एक कुमारियाँ सेवाधारी कुमारियाँ बनेंगी। कितने सेन्टर खुलेंगे। कुमारियों को देख बाप को यही खुशी रहती है कि यह सब इतने हैण्ड तैयार हो रहे हैं। राइट हैण्ड हो ना! लेफ्ट हैण्ड नहीं। लेफ्ट हैण्ड से जो काम करते हैं वह थोड़ा नीचे ऊपर हो सकता है। राइट हैण्ड से काम जल्दी और अच्छा होता है। तो इतनी सब कुमारियाँ तैयार हो जाएं तो कितने सेन्टर खुल जायेंगे, जहाँ भेजे वहाँ जायेंगी ना! जहाँ बिठायेंगे वहाँ बैठेंगी ना! कुमारियाँ सब महान हो। सदा महान रहना। संग में नहीं आना। अगर काई आपके ऊपर अपना रंग लगाने चाले तो आप उस पर अपना रंग लगा देना। माँ-बाप भी बन्धन डालने चाहें तो भी बन्धन में बंधने वाली नहीं। सदा निर्बन्धन। सदा भाग्यवान। कुमारी जीवन पूज्य जीवन है। पूज्य कभी पुजारी बन नहीं कती। सदा इसी नशे में रहने वाली।

5. **कुमारियों से:-** सभी देवियाँ हो ना! कुमारी अर्थात् देवी। जो उल्टे रास्ते में जाती वह दासी बन जाती और जो महान आत्मा बनती वह देवियाँ हैं! दासी झुकती है। तो आप सब देवियाँ हो, दासी बनने वाली नहीं। देवियाँ को कितना पूजन होता है। तो यह पूजन आपका है ना! छोटी हो या बड़ी सब देवियाँ हो। बस यही सदा याद रखो कि हम महान आत्मायें पवित्र आत्मायें हैं बाप का बनना यह कम बात नहीं है, कहने में सहज बात हो गई है। लेकिन किसके बने हो? कितने ऊंचे बने हो? कितनी विशेष आत्मायें बने हो? यह चलते-फिरते याद रहता है कि हम कितनी महान कितनी ऊंची आत्मायें हैं। भाग्यवान आत्माओं को सदा अपना भाग्य याद रहे। कौन हो? देवी! देवी सदा मुस्कराती रहती है। देवी कभी रोती नहीं। देवियों के चित्रों के आगे जाओ तो क्या दिखाई देता? सदा मुस्कराती रहती

है! दृष्टि से, हाथों से सदा देने वाली देवी। देवता या देवी का अर्थ ही है देने वाला। क्या देने वाली हो? सभी को सुख शान्ति आनन्द, प्रेम सर्व खजाने देने वाली देवियाँ हो। सभी राइट हैण्ड हो। राइट हैण्ड अर्थात् श्रेष्ठ कर्म करने वाली।

(09-05-1984)

कुमारियों से अव्यक्त वापदादा की मुलाकात

सभी अपने को श्रेष्ठ कुमारियाँ अनुभव करती हो? साधारण कुमारियाँ या तो नौकरी की टोकरी उठाती या तो दासी बन जाती हैं। लेकिन श्रेष्ठ कुमारियाँ विश्व-कल्याणकारी बन जाती हैं। ऐसी श्रेष्ठ कुमारियाँ हो ना! जीवन का श्रेष्ठ लक्ष्य क्या है? संगदोष के या संबंध के बंधन से मुक्त होना यही लक्ष्य है ना? बन्धन में बंधने वाली नहीं। क्या करें बंधन है, क्या करें नौकरी करनी है, इसको कहा जाता है बंधन वाली। तो न संबंध का बंधन, न नौकरी टोकरी का बंधन। दोनों बंधन से न्यारे वही बाप के प्यारे बनते हैं। ऐसी निर्बन्धन हो? दोनों ही जीवन सामने हैं। साधारण कुमारियों का भविष्य और विशेष कुमारियों का भविष्य, दोनों सामने हैं। तो दोनों को देख स्वयं ही जज कर सकती हो। जैसे कहेंगे वैसे करेंगे यह नहीं। अपना फैसला स्वयं जज होकर करो। श्रीमत तो है विश्व-कल्याणकारी बनो। वह तो ठीक लेकिन श्रीमत के साथ-साथ अपने मन के उमंग से जो आगे बढ़ते हैं वह सदा सहज आगे बढ़ते हैं। अगर कोई के कहने से या थोड़ा-सा शर्म के कारण दूसरे क्या कहेंगे, नहीं बनूँगी तो सब मुझे ऐसे देखेंगे कि यह कमज़ोर है। ऐसे अगर कोई के फोर्स से बनते भी हैं तो परीक्षाओं को पास करने में मेहनत लगती है। और स्व के उमंग वालों को कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो वह सहज अनुभव होती है क्योंकि मन का उमंग है ना। अपना उमंग उत्साह पंख बन जाते हैं। कितना भी पहाड़ हो लेकिन उड़ने वाला पंछी सहज पार कर लेगा और चलने वाला या चढ़ने वाला कितनी मुश्किल से कितने समय में पार करेंगे? तो यह मन का उमंग पंख हैं इन पंखों से उड़ने वाले को सदा सहज होता है। समझा। तो श्रेष्ठ मत है - 'विश्व-

कल्याणकारी बनो' लेकिन फिर भी स्वयं अपना जज बनकर अपनी जीवन का फैसला करो। बाप ने तो फैसला दे ही दिया है, वह नई बात नहीं हैं। अभी अपना फैसला करो तो सदा सफल रहेंगी। समझदार वह जो सोच-समझकर हर कदम उठाये। सोचते ही न रहें लेकिन सोचा-समझा और किया। इसको कहते हैं समझदार। संगमयुग पर कुमारी बनना यह पहला भाग्य है। यह भाग्य तो ड्रामा अनुसार मिला हुआ है। अभी भाग्य में भाग्य बनाते जाओ। इसी भाग्य को कार्य में लगाया तो भाग्य बढ़ता जायेगा। और इसी पहले भाग्य को गंवाया तो सदा के सर्व भाग्य को गंवाया। इसलिए भाग्यवान हो। भाग्यवान बन अभी और सेवाधारी का भाग्य बनाओ। समझा!

(03-01-1985)

कुमारियों के साथ :- कुमारियाँ सदा ही पवित्र मानी जाती हैं। कुमारियों के पवित्रता की महिमा 100 ब्राह्मणों से भी ज्यादा है। ऐसी श्रेष्ठ कुमारियाँ हो ना! देखो आज लास्ट जन्म में भी कुमारियों की पूजा होती रहती है। कुमारियों की पूजा देखी है? भारत में बहुत पूजा करते हैं कुमारी की। जब तक कुमारी है तब तक उसके पाँव पड़ते हैं और जब कुमारी शादी करती है तो उसी दिन उनके पाँव पड़ने लगती हैं। कितनों के पाँव पड़ना पड़ता है! नहीं तो कुमारी को कभी पाँव पड़ने नहीं देते। तो ऐसी पवित्र कुमारी हो ना! एक बार जो राखी बांधता है वह बदल नहीं सकता। अगर कोई बदल जाए तो बापदादा उसको क्या कहेंगे? उसको कहते हैं - कायर, कमज़ोर। तो आप सब ऐसे तो नहीं हो ना! बापदादा का बच्चों में पूरा निश्चय है। सच्ची फ्रैण्ड हो ना! बाप ऐसा फ्रैण्ड मिला है जो कोई भी बात करो लेकिन दिलाराम तक ही रहेगी। सदा स्नेह में समाई हुई हो ना! सारे विश्व में आकर्षण करने वाला बाप ही अनुभव होता है ना! और कोई तो नहीं दिखाई पड़ता है? कोई ऐसी चीज़ अट्रैक्ट तो नहीं करती है? कोई टी.वी. तो नहीं देखती हो? फिल्म तो नहीं देखती? अगर वह फिल्म देखी तो यह फिल्म खत्म। अच्छा -

कुमारी जीवन में श्रेष्ठ जीवन बनाना यह बहुत बड़ा भाग्य है, यह गृहस्थी जीवन के झंझट बाहर से दिखाई नहीं देते हैं लेकिन अन्दर बहुत बंधन हैं। बाहर से ऐसे दिखाई देते हैं जैसे यह बहुत खुश रहते हैं लेकिन अन्दर बहुत बंधन हैं। इसलिए कुमारियाँ ऐसे बंधनों से बच गई। इसलिए खुशी में खूब नाचो। बापदादा को बहुत खुशी होती है कि यह कुमारियाँ इस कुमारी जीवन में बच गई।

(21-03-1985)

कुमारियों से:- सभी कुमारियाँ अपने को विश्व-कल्याणकारी समझ आगे बढ़ती रहती हो? यह स्मृति सदा समर्थ बनाती है। कुमारी जीवन समर्थ जीवन है। कुमारियाँ स्वयं समर्थ बन औरों को समर्थ बनाने वाली हैं। व्यर्थ को सदा के लिए विदाई देने वाली। कुमारी जीवन के भाग्य को स्मृति में रख आगे बढ़ते चलो। यह भी संगम में बड़ा भाग्य है जो कुमारी बनी, कुमारी अपने जीवन द्वारा औरों की जीवन बनाने वाली, बाप के साथ रहने वाली। सदा स्वयं को शक्तिशाली अनुभव कर औरों को भी शक्तिशाली बनाने वाली। सदा श्रेष्ठ संकल्प द्वारा वायुमण्डल को बदल नाम बाला करने वाली। सदा एक बाप दूसरा न कोई - ऐसे नशे में हर कदम आगे बढ़ाने वाली! तो ऐसी कुमारियाँ हो ना!

(27-11-1985)

कुमारियों से :- यह लश्कर क्या करेगा? लश्कर वा सेना सदा विजय प्राप्त करती है। सेना विजय के लिए होती है। दुश्मन से लड़ने के लिए सेना रखते हैं। तो माया दुश्मन पर विजय पाना यही आप सबका कर्त्तव्य है। सदा अपने इस कर्त्तव्य को जान जल्दी से जल्दी आगे बढ़ते जाओ। क्योंकि समय तेज़ रफ़्तार से आगे जा रहा है। समय की रफ़्तार तेज़ हो और अपनी कमज़ोर हो तो समय पर पहुँच नहीं सकेंगे। इसलिए रफ़्तार को तेज़ करो। जो ढीले होते हैं वह स्वयं ही शिकार हो जाते हैं। शक्तिशाली सदा विजयी होते हैं। तो आज सब विजयी हो?

सदा यही लक्ष्य रखो कि सर्विसएबुल बन सेवा में सदा आगे बढ़ते रहना। क्योंकि कुमारियों को कोई भी बन्धन नहीं हैं। जितना सेवा करने चाहें कर सकती हैं। सदा अपने को बाप की हूँ और बाप के लिए हूँ ऐसा समझकर आगे बढ़ते चलो। जो सेवा में निमित्त बनते हैं उन्हें खुशी और शक्ति की प्राप्ति स्वत: होती है। सेवा का भाग्य कोटों में कोई को ही मिलता है। कुमारियाँ सदा पूज्य आत्मायें हैं। अपने पूज्य स्वरूप को स्मृति में रखते हुए हर कर्म करो। और हर कर्म के पहले चेक करो कि यह कार्य पूज्य आत्मा के प्रमाण है? अगर नहीं है तो परिवर्तन कर लो। पूज्य आत्मायें कभी साधारण नहीं होती, महान होती हैं। 100 ब्राह्मणों से उत्तम कुमारियाँ हो। 100, एक-एक कुमारी को तैयार करने हैं। उनकी सेवा करनी है। कुमारियों ने क्या कमाल का प्लैन सोचा है? किसी भी आत्मा का कल्याण हो इससे बड़ी बात और क्या है? अपनी मौज में रहने वाली हो ना। कभी ज्ञान के मौज में, कभी याद की मौज में। कभी प्रेम की मौज में। मौजें ही मौजें हैं। संगमयुग है ही मौजों का युग। अच्छा - कुमारियों के ऊपर बापदादा की सदा ही नजर रहती है। कुमारियाँ स्वयं को क्या बनाती हैं यह उनके ऊपर है लेकिन बापदादा तो सभी को विश्व का मालिक बनाने आये हैं। सदा विश्व के मालिकपन की खुशी और नशा रहे। सदा अथक सेवा में आगे बढ़ते रहो।

(09-12-1985)

कुमारियों से :- कुमारियों को सेवा में आगे बढ़ने की लिफ्ट मिली हुई है। यह लिफ्ट ही श्रेष्ठ गिफ्ट है। इस गिफ्ट को यूज करना आता है ना! जितना स्वयं को शक्तिशाली बनायेंगी उतना सेवा भी शक्तिशाली करेंगी। अगर स्वयं ही किसी बात में कमजोर होंगी तो सेवा भी कमजोर होगी। इसलिए शक्तिशाली बन शक्तिशाली सेवाधारी बन जाओ। ऐसी तैयारी करती चलो। जो समय आने पर सफ़लता पूर्वक सेवा में लग जाओ और नम्बर आगे ले लो। अभी तो पढ़ाई में टाइम देना पड़ता है फिर तो एक ही काम होगा। इसलिए जहाँ भी हो ट्रेनिंग करते

रहो। निमित्त बनी हुई आत्माओं के संग से तैयारी करती रहो। तो योग्य सेवाधारी बन जायेंगी। जितना आगे बढ़ेगी उतना अपना ही फायदा है।

(15-01-1986)

'चैरिटी बिगन्स एट होम' का काम ज़्यादा किया है। हमजिन्स को जगाया है। कुमार-कुमारियों का अच्छा कल्याण हो रहा है। इस जीवन में अपने जीवन का श्रेष्ठ फैसला करना होता है। अपनी जीवन बना ली तो सदा के लिए श्रेष्ठ बन गये। उल्टी सीढ़ी चढ़ने से बच गये। बापदादा खुश होते हैं कि एक दो से अनेक दीपक जग 'दीपमाला' बना रहे हैं। उमंग-उत्साह अच्छा है। सेवा में बिजी रहने से उन्नति अच्छी कर रहे हैं।

(01-03-1986)

कुमारियाँ तो हैं ही श्रेष्ठ भाग्य के सितारे वाली। सभी के मस्तक पर भाग्य का सितारा चमक गया। कुमारियाँ अर्थात् तकदीर बनाकर के आई। कुमारियों की महिमा बाप गाते हैं क्योंकि यह एक-एक कुमारी सेवाधारी है। दुनिया वाले कहते - एक कुमारी 21 कुल तारने वाली है, बाप कहते - एक-एक कुमारी विश्व-कल्याणी है, विश्व का उद्धार करने वाली है। तो विश्व-सेवा के कॉन्ट्रैक्टर बन गई। कितना अच्छा जॉब (काम) है!

(कुमारियों के साथ) :- एक-एक कुमारी विश्व-कल्याणकारी है ना। दुनिया में तो कहते हैं - एक-एक कुमारी जाकर अपना घर बसायेगी। यहाँ बाप कहते हैं - एक-एक कुमारी सेवाकेन्द्र खोल अनेकों का कल्याण करेगी, ऐसी कुमारियाँ हो? लौकिक माँ-बाप घर बनाकर देते हैं, उससे तो गिरती कला होती है और अलौकिक बाप, पारलौकिक बाप सेन्टर खोलकर देते हैं जिससे स्व-उन्नति भी और अन्य आत्माओं की भी उन्नति हो। तो ऐसी कुमारियों को कहते हैं पूजनीय कुमारियाँ। इसलिए, अभी तक भी लास्ट जन्म में भी कुमारियों की पूजा

करते हैं। ऐसी कुमारियाँ विश्व के आगे कितनी महान् गाई जाती हैं। तो सदा स्वयं को विश्व-कल्याणकारी समझ सेवा में आगे बढ़ती चलो। कुमारियों को देख बापदादा बहुत खुश होते हैं - जितनी कुमारियाँ हैं, उतने सेन्टर खुलेंगे! हिम्मत वाली हो ना? घबराने वाली तो नहीं? पूज्य कुमारियाँ हो। कुमारी शब्द ही पवित्रता का सूचक है। पवित्र का ही पूजन है। सदा स्वयं भी पावन रहेंगी और दूसरों को भी पवित्रता की शक्ति देने का श्रेष्ठ कार्य करती रहेंगी। पवित्रता की शक्ति जमा है ना? तो जो जमा होता है वह दूसरों को दिया जाता है। तो सदैव अपने को पवित्रता की देवियाँ समझो।

(20-03-1987)

कुमारियों से:- कन्यायें 100 ब्राह्मणों से उत्तम गाई हुई है यह महिमा क्यों हैं? क्योंकि जितना स्वयं श्रेष्ठ होंगे, उतना ही औरों को भी श्रेष्ठ बना सकेंगे। तो श्रेष्ठ आत्मायें हैं - यह खुशी रहती है? तो कुमारियाँ सेवाधारी बन सेवा में आगे बढ़ते चलो। क्योंकि यह संगमयुग है ही थोड़े समय का युग, इसमें जितना जो करने चाहे, उतना कर सकता है। तो श्रेष्ठ लक्ष्य और श्रेष्ठ लक्षण वाली हो ना? जहाँ लक्ष्य और लक्षण श्रेष्ठ हैं, वहाँ प्राप्ति भी सदा श्रेष्ठ अनुभव होती है। तो सदा इस ईश्वरीय जीवन का फल 'खुशी' और 'शक्ति' दोनों अनुभव करती हो? दुनिया में खुशी के लिए खर्चा करते, तो भी प्राप्त नहीं होती। अगर होती भी है तो अल्पकाल की और खुशी के साथ-साथ दु:ख भी होगा। लेकिन आप लोगों की जीवन सदा खुशी की हो गई। दुनिया वाले खुशी के लिए तड़पते हैं और आपको खुशी प्रत्यक्षफल के रूप में मिल रही है। खुशी ही आपके जीवन की विशेषता है! अगर खुशी नहीं तो जीवन नही। तो सदा अपनी उन्नति करते हुए आगे बढ़ रही हो ना? बापदादा खुश होते हैं कि कुमारियाँ समय पर बच गई, नहीं तो उल्टी सीढ़ी चढ़कर फिर उतरनी पड़ती। चढ़ो और उतरो - मेहनत है ना। देखो, कोई भी प्रवृत्ति वाले हैं, तो भी कहलाना तो ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारी पड़ता, ब्रह्मा अधरकुमार तो

नहीं कहते। फिर भी कुमार/कुमारी बने ना। तो सीढ़ी उतरे और आपको उतरना नहीं पड़ा बहुत भाग्यवान हो, समय पर बाप मिल गया। कुमारी ही पूजी जाती है। कुमारी जब गृहस्थी बन जाती है तो बकरी बन सबके आगे सिर झुकाती रहती है। तो बच गई ना। तो सदा अपने को ऐसे भाग्यवान समझ आगे बढ़ते चलो।

(22-01-1988)

सदा बाप का हाथ और साथ है, ऐसा भाग्यवान समझते हो? जहाँ बाप का हाथ और साथ है, वहाँ सदा ही मौजों की जीवन होती है। मूँझने वाले नहीं होंगे, मौज में रहेंगे। कोई भी परिस्थिति अपने तरफ आकर्षित नहीं करेगी, सदा बाप की तरफ आकर्षित होंगे। सबसे बड़ा और सबसे बढ़िया बाप है, तो बाप के सिवाए और कोई चीज या व्यक्ति आकर्षित नहीं कर सकता। जो बाप के हाथ और साथ में पलने वाले हैं, उनका मन और कहीं जा नही सकता। तो ऐसे सभी हो या माया की पालना में चले जाते हो? वह रास्ता बन्द है ना। तो सदा बाप के साथ की मौज में रहो। बाप मिला सब कुछ मिला, कोई अप्राप्ति नहीं। कितना भी कोई हाथ, साथ छुड़ाये लेकिन छोड़ने वाले नहीं। और छोड़कर जायेंगे भी कहाँ? इससे बड़ा और कोई भाग्य हो नहीं सकता! कुमारियाँ तो हैं ही सदा भाग्यवान। डबल भाग्य है। एक - कुमारी जीवन का भाग्य, दूसरा - बाप का बनने का भाग्य। कुमारी जीवन पूजी जाती है। जब कुमारी जीवन खत्म होती है तो सबके आगे झुकना पड़ता। गृहस्थी जीवन है ही बकरी समान जीवन, कुमारी जीवन है पूज्य जीवन। अगर कोई एक बार भी गिरा तो गिरने से हड्डी टूट जाती है ना। फिर कितना भी प्लास्टर करो, ठीक करो लेकिन हड्डी कमजोर हो जाती है। तो समझदार बनो। टेस्ट करके फिर समझदार नहीं बनना।

(26-01-1988)

कुमारियाँ भी आई हैं। कुमारियाँ अर्थात् होवनहार टीचर्स। तब तो कहेंगे ब्रह्माकुमारियाँ हैं। अगर होवनहार सेवाधारी नहीं तो पाई पैसे वाली कुमारी है। कुमारियाँ क्या करती हैं? नौकरी की टोकरी उठाती हैं ना पाई पैसे के पीछे। बापदादा को हँसी आती है कुमारियों के ऊपर - टोकरी का बोझ उठाने के लिए तैयार हो जाती हैं लेकिन भगवान के घर में अर्थात् सेवा-स्थानों में रहने की हिम्मत नहीं रखती हैं। ऐसी कमज़ोर कुमारियाँ तो नहीं हो ना! चाहे पढ़ भी रही हैं, तो भी लक्ष्य तो पहले से रखा जाता है कि नौकरी करनी है या विश्व-सेवा करनी है। नौकरी करना अर्थात् अपने को पालना। बाल-बच्चे तो हैं नहीं, जिसको पालना पड़े। नौकरी इसलिए करते हैं कि आराम से अपने को पालते रहें, चलते रहें, विश्व की आत्माओं को बाप की पालना दें - यह लक्ष्य रखो। जब अनेक आत्माओं के निमित्त बन सकते हैं, तो सिर्फ अपनी आत्मा को पालना - उसके आगे क्या हुआ? अनेकों की दुआयें लेना - यह कमाई कितनी बड़ी है! उस कमाई में पाँच हज़ार, पाँच लाख भी हो जाए, लेकिन यह अनेक आत्माओं की दुआयें - यह कितनी बड़ी कमाई है! और यह साथ जायेंगी अनेक जन्मों के लिए। वह पाँच लाख कहाँ जायेंगे? या घर में या बैंक में रह जायेंगे। लक्ष्य सदैव ऊँचा रखा जाता है, साधारण नहीं। संगमयुग पर इस एक अभी के जन्म में इतना गोल्डन चांस मिलता है - बेहद की सेवा में निमित्त बनने का! सतयुग में भी ऑफ़र नहीं मिलेगी। नौकरी के लिए भी अखबार देखते रहते हैं ना कि कोई ऑफ़र मिले। बाप स्वयं सेवा की ऑफ़र कर रहे हैं। तो योग्य राइट हैण्ड बनो। साधारण ब्रह्माकुमारी भी नहीं बनना। योग्य सेवाधारी नहीं बनते तो सेवा करने के बजाय सेवा लेते रहते हैं। योग्य सेवाधारी बनना कोई मुश्किल नहीं। जब योग्य सेवाधारी नहीं बनते हो तब डरते हो - कैसे होगा, चल सकेंगे वा नहीं। योग्यता नहीं होती है तो डर लगता है। जो योग्य होता वह 'बेपरवाह बादशाह' होता है। चाहे स्थूल योग्यता, चाहे ज्ञान की योग्यता मनुष्य को वैल्यूबल बनाती है। योग्यता नहीं तो वैल्यू नहीं रहती। सेवा की योग्यता सबसे

बड़ी है। ऐसी योग्य आत्मा को कोई बात रोक नहीं सकती। योग्य बनना माना मेरा तो एक बाबा। बस, और कोई बात नहीं। सुना कुमारियों ने!

(27-11-1989)

मोदीनगर हॉस्टल की कुमारियों से :- हॉस्टल की कुमारियां क्या कमाल कर रही हो? स्कूल या कॉलेज में जहाँ पढ़ती हो, वो समझते हैं कि ये न्यारी कुमारियां हैं? कि जैसे वो वैसे आप? क्योंकि ब्रह्माकुमारियां अर्थात् न्यारी कुमारी। कुमारियां तो सभी हैं लेकिन आप ब्रह्माकुमारियां हो। ब्रह्माकुमारियां कमाल करने वाली हो। जहाँ भी जाये, वहाँ विशेष आत्मा अनुभव हो। तो बाप से पूरा ही प्यार है ना? पक्का, कोई व्यक्ति के तरफ़ नहीं, वैभव के तरफ़ नहीं? जब एक बाप से प्यार होगा तो सेफ़ रहेंगे। बाप से कम होगा तो फिर कहीं न कहीं फंस जायेंगे। तो कहाँ फंसने वाली तो नहीं हो? देखना, सर्टीफिकेट मिलेगा! अच्छा, हिम्मत रखी है तो हिम्मत और मदद से आगे बढ़ते रहो।

(23-12-1993)

इन्दौर, हॉस्टल की कुमारियों से :- हॉस्टल की कुमारियाँ हो या हाइएस्ट, होलिएस्ट कुमारियाँ हो? हाइएस्ट भी हो, होलिएस्ट भी। ऊंचे ते ऊंचे भी हो और महान् पवित्र आत्मायें भी हो। क्योंकि कुमारी जीवन का अर्थ ही है महान् पवित्र। इसीलिये कुमारियों को पूजते हैं। और कुमारी से माता बनी तो सबके पांव छूने पड़ेंगे। अगर बहु बनकर घर में आई तो क्या करेंगे? सबके पांव छुयेंगे और कुमारियों के पांव पूजे जाते हैं। तो कुमारी जीवन अर्थात् महान् पवित्र जीवन। ऐसी कुमारियाँ हो ना कि कभी-कभी जोश आ जाता है? आपस में एक-दो में जोश आता है कि नहीं आता? क्योंकि क्रोध भी अपवित्रता है। सिर्फ काम विकार नहीं, लेकिन उसके और भी साथी हैं। तो महान् पवित्र अर्थात् अपवित्रता का नाम-निशान नहीं। इसको कहा जाता है होलीएस्ट, हाइएस्ट कुमारियाँ। तो ऐसी हो या

थोड़ा-थोड़ा कभी माया को छुट्टी दे देते हो? माया प्यारी लगती है ना तो आती है! लेकिन माया कभी भी न आये इसका सहज साधन है कि सदा गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ में रहो, स्टडी, स्टडी, स्टडी। और कोई बातों में नहीं जाना। अगर कर्मणा सेवा भी करते हो तो वो भी स्टडी की सब्जेक्ट है। खाना बनाना भी स्टडी है। कर्मयोगी का पाठ है, तो पढ़ाई हुई ना? तो कुमारी जीवन में सफलता का आधार है स्टूडेण्ट लाइफ। और बातों में जाना ही नहीं है, रास्ता बन्द। ऐसे है या कभी-कभी गलत गली में चली जाती हो? नहीं। अच्छा है, अपना भाग्य तो बना लिया। अभी भाग्य की लकीर को जितना लम्बा बनाने चाहो, उतना बना सकती हो। तो छोटी लकीर नहीं खींचना, लम्बी खींचना। बापदादा भी खुश होते हैं कि कुमारी जीवन में बच गई। भाग्यवान बन गयी। और भी कुछ स्थानों से कुमारियाँ आई हैं। ट्रेनिंग वाली कुमारियां हाथ उठाओ। ट्रेनिंग करना माना सेवा की ट्रेन में चढ़ना। तो सेवा की ट्रेन में चढ़ गये कि अभी फैसला कर रहे हैं? सेवा में लग गये? अच्छा है, आदि से निःस्वार्थ सेवाधारी। सेवाधारी सभी हैं लेकिन निःस्वार्थ सेवाधारी, वो कोई-कोई हैं। आप किस लाइन में हो? निःस्वार्थ सेवाधारी या थोड़ा-थोड़ा स्वार्थ तो रखना ही पड़ेगा! नहीं। फाउण्डेशन ही ऐसा मज़बूत रखना, क्योंकि सेवा में स्वार्थ मिक्स करने से सफलता भी मिक्स मिलती है। तो अच्छा है, बापदादा खुश होते हैं, जो कुमारियाँ हिम्मत रखकर सेवा में आगे बढ़ती हैं। आगे बढ़ने की मुबारक।

(05-12-1994)

(हॉस्टल की कुमारियों से) अच्छा है, हॉस्टल की रिजल्ट तब कहेंगे जब जितने हॉस्टल में हैं इतने टीचर्स बनकर निकले। तब कहेंगे हॉस्टल नम्बरवन है। ऐसे नहीं, दो तो निकली हैं, चार चली गई। जितने हॉस्टल में आये, कुमारी बनकर आये और टीचर बनकर निकले तब कहेंगे हॉस्टल की रिजल्ट सबसे आगे। तो इतनी हिम्मत है कि माया आयेगी तो कहेंगे क्या करें! बापदादा तो खुश

होते हैं क्योंकि देखो स्थापना का फाउण्डेशन ही ओम् निवास में छोटी-छोटी कुमारियों से शुरू हुआ। तो बापदादा को भी पहले स्थापना में क्या पसन्द आया? छोटे बच्चे ही पसन्द आये ना। आज वो छोटे ही विश्व कल्याणकारी बन गये। तो आप भी ऐसे ही बनना। ये अच्छा है, सेफ तो रहे हुए हैं ना। माया के प्रभाव से बचे हुए हैं।

(07-03-1995)

कुमारियों से:- कुमारियाँ क्या करेंगी? कुमारियों का तो बहुत-बहुत बड़ा भाग्य है। कुमार 25 वर्ष का होगा लेकिन उनको कोई दादा नहीं कहेगा, लेकिन कुमारियों को दादी कहेंगे, दीदी कहेंगे। कुमारियाँ अगर टीचर बन जाती हैं तो दादी, दीदी का टाइटल मिल जाता है। दीदी कहने वाले तो बहुत अच्छे हैं और बनने वाले भी अच्छे हैं। लेकिन दीदी माना बड़ी। तो दीदी बनना अर्थात् बड़े दिल से स्व का पुरुषार्थ और औरों को पुरुषार्थ कराना। सिर्फ दीदी नाम से नहीं खुश हो जाना। काम भी करना है। कुमार और कुमारियों से देखा जाता है कि माया का कुछ एक्स्ट्रा प्यार है। लेकिन ये प्यार नहीं है, धोखा है। पहले माया बहुत प्यार करती है लेकिन समाया हुआ धोखा होता है। अभी कोई कुमार और कुमारी की माया के प्रति रिपोर्ट नहीं आनी चाहिये। अभी रिपोर्ट आती है। कई खेल करते हैं कुमार भी, कुमारियाँ भी। अभी खेल नहीं करना। अभी विश्व परिवर्तक बन, सभी एक-दो के सहयोगी बन आगे उड़ना। ठीक है ना।

(31-03-1995)

कुमारियों से :- कुमारियाँ क्या कमाल करेंगी! कुमारियाँ टीचर बनेंगी? कुमारियाँ सभी अपने चेहरे से, चलन से, पवित्रता की परिभाषा का भाषण करेंगी। मुख से भाषण तो सभी करते हैं लेकिन आपके सम्बन्ध में जो भी सामने आये वो चेहरे और चलन से अनुभव करे कि पवित्रता की श्रेष्ठता क्या है? कभी भी कोई

कुमारी किसके भी सामने जाये तो साधारण कुमारी नहीं दिखाई दे। पवित्रता की देवी अनुभव हो। देखो शुरु-शुरु में जब तपस्या के बाद सेवा पर निकले तो आप सबको किस रूप में देखते थे? देवियाँ समझते थे ना! उन्हों को साधारण स्वरूप नहीं दिखाई देता था, देवी रूप दिखाई देता था। देवियाँ आई हैं, कुमारियाँ नहीं। तो हर कुमारी अपने को देवी स्वरूप अनुभव करे और दूसरों को भी अनुभव कराये। देवी रूप के ऊपर कभी भी कोई की व्यर्थ नज़र नहीं जा सकती। औरों को भी बचा लेंगे और स्वयं भी बच जायेंगे। ऐसे नहीं कह सकते कि इसकी बुरी दृष्टि थी ना, मैं तो पवित्र हूँ लेकिन दूसरे की बुरी दृष्टि थी। अगर आपकी पॉवरफुल पवित्र दृष्टि है तो जैसे सूर्य अन्धकार को रहने नहीं देता, समाप्त हो जाता है, अन्धकार रोशनी में बदल जाता है, वैसे ही आपकी पवित्र दृष्टि, देवी स्वरूप आसुरी संस्कार को समाप्त कर देगी। तो कुमारियाँ क्या हैं? पवित्र देवियाँ। तो कुमारियाँ ऐसे समझती हैं? हाँ कहते हो तो हाथ उठाओ, अगर ना तो हाथ नहीं उठाओ। पवित्र कुमारियाँ हैं।

(06-04-1995)

कुमारियाँ:- कुमारियाँ हाथ उठाओ। कुमारियाँ क्या करेंगी? कुमारियों को अपने जीवन का स्वयं, स्वयं का मित्र बन निर्बन्धन बनाने में नम्बरवन जाना चाहिए। इन कुमारियों की लिस्ट इकट्ठी करो फिर देखेंगे कि सचमुच कितनी निर्बन्धन बनती है? कुमारियाँ अगर समझती हो कि हम निर्बन्धन होकर सेवा में निमित्त बनेंगी तो हाथ उठाओ। इन्हों की ट्रेनिंग रखेंगे। अभी तो ज्ञान सरोवर में भी रखते हैं। तो कुमारियाँ क्या बनेंगी? निर्बन्धन। न मन का बन्धन, न सम्बन्ध का बन्धन। डबल बन्धन से मुक्त।

(16-11-1995)

कुमारियों से:- कुमारियाँ क्या कमाल करेंगी? कमाल करनी चाहिए

ना! जो सब करते हैं अगर वही किया तो कमाल क्या हुई? तो ये कुमारियों का ग्रुप क्या करेगा? अगर आप नहीं बतायेंगे तो जो बापदादा बतायेगा वो करना पड़ेगा। नहीं तो आप लोग बता दो। इस डायमण्ड जुबली में कुमारियाँ क्या करेंगी? क्योंकि आप लोगों को तो अभी डायमण्ड जुबली का चांस है। फिर बाद में तो मिलेगा नहीं। तो कुमारियाँ क्या करेंगी, डायमण्ड जुबली को सामने रख करके फिर सोचो। पहले तो वे हाथ उठाओ जिनका लक्ष्य है कि हम सेवा में लगेंगी। खड़ी हो जाओ। अच्छा, इन्हों का फोटो निकालो। ये तो बहुत हैं। तो कुमारियों को क्या करना है? आप लोगों ने तो हाथ उठाया, खड़े भी हो गये और फोटो भी आपका निकल गया तो आप सभी को तो सेवा में लगना चाहिये, ये तो पक्का है ना! कि घर जाकर टीचर को कहेंगी कि नहीं, मैं तो नौकरी करुँगी। ऐसी तो नहीं हो? जिन्हों ने हाथ उठाया वो पक्की हो ना? कि नौकरी करने वाली! सेवा करेंगी ना? अच्छा, जो निर्बन्धन है, सिर्फ पढ़ाई का एक साल है या थोड़ा सा है वो हाथ उठाओ, जो निर्बन्धन हो सकती है? अच्छा। क्योंकि बापदादा ने कहा है कि अभी समाप्ति का समय समीप आ रहा है। डेट नहीं बतायेंगे। लेकिन समीप आ रहा है उसी प्रमाण सेवा में वृद्धि तो होनी है ना। तो जो भी कुमारियाँ उठी थी, वो अगर खुद निर्बन्धन नहीं हो सकती, कोई कारण है तो अपने कोई न कोई हमजिन्स कुमारी को तैयार जरूर करो। मानो आपको घर का बन्धन है। स्वयं अगर निर्बन्धन नहीं हो सकती तो कोई एक को तैयार जरूर करो। यह कर सकती हो? एक साल है, एक साल में एक को आप समान नहीं बना सकते? बनाना पड़ेगा ना। तो हर एक कुमारी जो स्वयं सेवा में लगनी है वो लगेंगी लेकिन अगर कोई स्वयं नहीं लग सकती है तो अपने हमजिन्स को तैयार करो। पसन्द है कुमारियों को? हाँ या ना बोलो? सोच रही हैं। अच्छा, पंजाब की कुमारियाँ हाथ उठाओ। पंजाब वाले सब मिलकर बोलो कि ये सेवा करेंगी? पंजाब का शेर कहाँ गया? क्यों आतंकवादियों से घबरा गये क्या? पंजाब को शेर कहते हैं तो शेर तो आगे आना चाहिये ना, घर में थोड़ेही बैठना चाहिए। तो कुमारियों को अपने हमजिन्स को

तैयार करना है। क्योंकि देखो भाई सभी हंसते हैं कि कुमारियाँ तीन साल की ट्रायल वाली भी होगी, और कुमार 40 साल के पुराने होंगे, तो सेन्टर पर रहने वाली कुमारी को दीदी-दादी कहना शुरु कर देते और कुमारों को दादा कोई नहीं कहते। कुमारों की ये रिपोर्ट है ना, उलहना है। अच्छा, कुमार हाथ उठाओ।

(25-11-1995)

कुमारियों से:- कुमारियों की तो महिमा सदा बापदादा करते हैं। क्योंकि कुमारी साधारण कुमारी से विश्व की सेवाधारी कुमारी बन गई। कहाँ घर की चार दीवारों में रहने वाली और कहाँ विश्व के सेवाधारी बन गये या बन रहे हैं। तो कुमारियाँ अपने को ऐसे योग्य समझती हो? ऐसे योग्य हो या टोकरी उठाने वाली हो? टोकरी उठाते-उठाते तो सिरदर्द करता है। अभी कुमारियों को टोकरी वाली बनना है या ताज वाली बनना है? टोकरी छोड़ देंगी? कि टोकरी उठाना ज़रूरी है? कुमारियां क्या समझती हैं? जो समझती हैं कि नौकरी करनी ही पड़ेगी, मजबूरी है, वो हाथ उठाओ। मजबूरी वाली कोई नहीं है। तो घरों में क्यों बैठे हो? जब नौकरी की आवश्यकता नहीं तो क्यों बैठे हो? क्यों नहीं आते हो मैदान में? घर अच्छा लगता है? छोटा सा घर है, कोई खिटखिट नहीं है, माँ-बाप का प्यार मिल रहा है, ठीक है। सेवाकेन्द्र पर पता नहीं क्या-क्या होगा, कैसे चलेंगे, चल सकेंगे या नहीं सकेंगे, इसीलिए चार दीवार ठीक है... ऐसे समझती हो? कुमारियों पर तो सब युगों में से संगमयुग पर विशेष परमात्म कृपा है। अगर संगम पर परमात्म कृपा के अधिकारी नहीं बने तो सारे कल्प में नहीं बनेंगे। तो कुमारियों को परमात्म वरदान है या परमात्म कृपा है, वो कभी भी छोड़नी नहीं चाहिये, लेनी चाहिये। समझा कुमारियों ने? डरो नहीं। आजकल समाचार सुना है, कई कुमारियाँ डरती हैं - पता नहीं, पता नहीं, पता नहीं! लेकिन सभी सेवाकेन्द्र एक जैसे नहीं होते हैं। अगर कोई बात है भी तो बड़ों को दे सकते हैं। उसके लिए कोई को मना नहीं है। अगर टीचर मना भी करती है तो बापदादा की छुट्टी है कि कहाँ से भी पत्र डाल

सकते हो। सिर्फ क्या होता है - बापदादा पत्र के लिए तो कहते हैं लेकिन लम्बा बहुत लिख देते हैं। थोड़े में ही समझ में आ जाता है, लेकिन लम्बी कहानी होगी तो जो चार्ज वाली देखेगी ना, वो भी किनारे रख देगी। जब टाइम मिलेगा तब पढ़ेगी। और बड़ों तक भी नहीं जायेगा। उन्हों को भी टाइम मिले ना, तब तो आपका रामायण पढ़ेंगे। इसलिए लम्बा नहीं लिखो। शॉर्टकट में लिखो कि ये तकलीफ है और इसकी ये सैलवेशन चाहिये। फिर स्पष्टीकरण लेना होगा तो बड़े आपको आपेही बुलायेंगे। और ही मधुबन में आने का चांस मिलेगा। तो लम्बा नहीं लिखना। बाकी सबको छुट्टी है, अगर कोई ऐसी अयथार्थ बात है तो सुना सकते हैं। डरो नहीं। डरने के कारण अपनी परमात्म कृपा का भाग्य नहीं गँवाओ। समझा कुमारियों ने? न अपने को तंग करो, न दूसरे को तंग करो। भाग्य अच्छा है। कुमारियाँ हिम्मत रखती हैं तभी सेन्टर खुल सकते हैं। अगर कुमारियाँ हिम्मत नहीं रखती तो सेन्टर भी नहीं खुलते। तो लक्की तो हो ना। सभी दीदी जी, दादी जी तो कहते हैं। यहीं टाइटल मिल जाता है।

(04-12-1995)

कुमारियों से:- सबसे ज्यादा कुमारियाँ कहाँ से आई हैं? कुमारियाँ तो हल्की हैं ना, उठकर खड़ी हो जाओ। अच्छा, जहाँ से भी आयी हो लेकिन कुमारियों के लिए गाया हुआ है कि कुमारी वो जो अपने दो परिवार का कल्याण करे। तो आपको तो एक ही परिवार है। दूसरा तो है नहीं। तो कुमारियाँ अपने ग्रुप में से, जैसे युवा को कहा वैसे फीमेल्स की भी ऐसी एसोसिएशन्स हैं, और जहाँ-तहाँ हैं, तो जहाँ भी रहते हो वहाँ बिगड़ी हुई आत्माओं को परिवर्तन करके दिखाओ। आप भी ग्रुप बनाओ। तो डायमण्ड जुबली में गवर्नमेन्ट को दिखायें कि देखो मातायें भी बदल सकती और युवा भी बदल सकते हैं।

(13-12-1995)

कुमारियों से – कुमारियाँ क्या करेंगी? कुमारी का अर्थ ही है कमाल करने वाली। तो कमाल करनी है। क्या कमाल करेंगी? बापदादा सदा जब भी कुमारियों को देखते हैं तो उसी नज़र से देखते हैं कि ये कमाल करने वाली कुमारी है। चाहे कुमारी अपना क्या भी करे लेकिन बापदादा हर कुमारी में कमाल करने वाली शुभ भावना शुभ कामना रखते हैं। तो कुमारियाँ क्या करेंगी? क्योंकि कुमारियाँ बहुत बन्धनों से फ्री हैं। अगर कुमारी पुरुषार्थ में अच्छी है तो उसको सेन्टर मिल जाता है। एक तो सेन्टर की सेवाधारी का भाग्य मिलता है और सेन्टर पर अकेले नहीं लेकिन साथी भी मिल जाते हैं। कुमारों को तो अकेला-अकेला खाना बनाना पड़ता है और कुमारियों को चाहे टर्न-बाइ-टर्न बनाओ लेकिन एक-दो में मददगार तो होते हैं ना! और दूसरा कमाने की कोई चिन्ता नहीं। अगर कोई कुमार आपके पास (दादी के पास) जाता है तो आप नौकरी छुड़ायेंगी? कहेंगे नौकरी करो। तो कुमारियों का तो लक है, कहते हैं नौकरी छोड़कर आ जाओ। खुद कुमारी का लगाव होता है पढ़ने में या नौकरी में। तो ये तो उसका भाग्य हुआ। लेकिन कुमारियों को चांस तो अच्छा है। और फिर सेवा का चांस कितना मिलता है? जितना करना चाहो उतना कर सकते हो।

ब्रह्मा बाप पुराने बच्चों के प्रति ये बोल रहे हैं कि अगर कोई कहता है कि सेवा है ही नहीं, बहुत करते हैं लेकिन सेवा दिखाई नहीं देती है, कोई सेवा के लिए मिलता नहीं है तो ब्रह्मा बाप क्या कहता था कि जंगल पड़ा हुआ है और शिकारी कहे कि शिकार नहीं मिलता, ये हो सकता है! शिकारी को परखने की शक्ति नहीं है, देखने की वो जो तेज़ आंख चाहिये, वो नहीं है। बाकी जंगल में शिकार न हो ये हो ही नहीं सकता। कितनी संख्या बढ़ रही है। चाहे छोटा गांव है, चाहे बड़ा शहर है सब जगह संख्या बढ़ रही है। तो संख्या बढ़ रही है और सेवा नहीं हो ये कैसे हो सकता है! करने की विधि नहीं आती। तो कुमारियों को अपने आपको निर्बन्धन बनाने की विशेष सेवा करनी है। पहले अपने को निर्बन्धन बनाओ। क्या है कुमारियाँ डरती हैं सेन्टर पर रहने से और कुमार चाहते हैं सेन्टर पर रहना। कारण

क्या है? कमज़ोर आत्मायें हैं, नम्बरवार तो होना ही है ना। तो कमजोर आत्माओं की कमजोरी को देख घबरा जाते हैं। अच्छों को नहीं देखते, जो कमजोर है, उसको फालो करते हैं। इसीलिए बापदादा ने कहा भी है - सी फादर-मदर। फालो फादर-मदर। न कि कमज़ोर को फालो करो। तो कुमारियों को तो दिल में उछल आनी चाहिये। कि बस, सेवा करें और सेवा के सफलता का सितारा बनें, कमज़ोर नहीं।

(09-01-1996)

कुमारियों से:- कुमारियां बहुत हैं। (करीब 2000 कुमारियां आई हैं) अच्छा है कुमारियों ने हिम्मत रखी है। कुमारियों के लिए तो बापदादा सदा ही लक्की कुमारी जीवन कहते हैं। देखो कुमार कहते हैं कि कुमारी अगर टीचर बनती हैं, सेन्टर पर जाती हैं तो कुमारी जाते ही दीदी-दीदी कहलाती हैं और कुमार कितने भी पुराने हैं तो दादा-दादा कोई नहीं कहता। कुमारियों के लिए तो ट्रेनिंग होती है निकालें, और कुमार सेन्टर सम्भालने के लिए आफर करते हैं तो दादियाँ सोचती हैं। तो कुमारियों का भाग्य बहुत सहज बना हुआ है। कुमारी ने ट्रेनिंग की, योग्य बनी तो दहेज में सेन्टर मिल जाता है। तो कुमारी जीवन कितनी श्रेष्ठ है, कितने गोल्डन चांस हैं, वह सोचो। अगर अभी से सेवाधारी नहीं बनेंगे तो भविष्य में भी क्या बनेंगे? सेवाधारी किसे मिलेंगे? जो सेवा करेंगे उन्हें मिलेंगे। इसलिए कुमारियों को अपना फैसला जल्दी से जल्दी करना चाहिए। लेकिन बापदादा कुमारियों के लिए एक बात सदा कहते हैं - सच्ची सेवाधारी कुमारी वह है जो शक्ति रूप कुमारी है। अगर निमित्त सेवाधारी शक्तिशाली नहीं है तो औरों को शक्तिशाली नहीं बना सकती। अगर कुमारी शक्तिशाली नहीं है, कोमल है, एक होती है कोमल और दूसरी होती है किसी के प्रभाव में आने वाली। ज्ञान का प्रभाव डालने वाली नहीं लेकिन कोई के प्रभाव में प्रभावित होने वाली। कुमारियों में दादियों को सदा इसी एक बात का डर लगता है। निमित्त बनी बाप के ऊपर

प्रभावित करने के लिए लेकिन स्वयं प्रभावित हो जाए तो क्या रिजल्ट निकलेगी? तो बापदादा कहते हैं कुमारियां हाँ तो करती हैं, हाँ जायेंगे, निकलेंगे लेकिन अभी समय के हिसाब से ऐसी कुमारियां चाहिए जो जिस सेन्टर पर जाएं उस सेवाकेन्द्र को निर्विघ्न बनाकर रखें। निर्विघ्न का सर्टीफिकेट स्वयं को भी देवें और साथियों से भी लेवें। तो ऐसी कुमारियां हो या थोड़ी सी वस्तु पर, कोई व्यक्ति पर प्रभावित होने वाली हो? क्या हो? क्या सोचती हो? बापदादा को ऐसी कुमारियां चाहिए जो निर्विघ्न कुमारी, विघ्न-विनाशक कुमारी, कमजोर को शक्तिशाली बनाने वाली कुमारी हो, ऐसे नहीं बापदादा वा दादियां हैण्डस करके भेजें और हैण्डस के बजाए हेडक बन जाएं। तो ऐसी कुमारियां नहीं चाहिए। तो क्या समझती हो? ऐसी कुमारियां तैयार हैं, हिम्मत है कि हम विघ्न-विनाशक बनकर रहेंगे? जो ऐसा बनेंगी वह हाथ उठाओ। दिल से उठा रही हो; संगठन में शर्म के मारे तो नहीं उठा रही हो? जो सेन्टर्स पर जाने के लिए तैयार हैं और ऐसा विघ्न-विनाशक बनेंगी, वही उठो बाकी बैठ जाओ। जो 18 वर्ष की आयु से ऊपर हैं और विघ्न-विनाशक होके सेन्टर पर जाने के लिए तैयार हैं, वह खड़े हो जाओ। यह सब विघ्न-विनाशक निमित्त सेवाधारी हैं? (हाँ जी) फोटो निकालो। अभी दादियों को यह कैसेट देना, फिर आप नोट करना - कौन-कौन हैं? मुबारक हो, मुबारक हो। कुमारियों को बापदादा भी मुबारक देते हैं लेकिन राइट हैण्ड बनना, लेफ्ट हैण्ड नहीं बनना।

(31-01-1998)

कन्याओं से:- आगे कुमारियाँ हैं, पीछे मातायें हैं। बहुत अच्छा। जैसे अभी खड़ी हो गई ना ऐसे याद और सेवा में सदा खड़े रहना। हॉस्टल की कुमारियाँ तो अच्छी पालना में पल रही हैं। ऐसी पालना जो वायुमण्डल के प्रभाव से बचे हुए हो। तो सदा आगे बढ़ रही हो और बढते ही रहेंगे। अच्छा मुबारक हो।

(18-01-2001)

कुमारियाँ नॉलेजफुल बनने वाली हैं ना? सिर्फ कोर्स कराने वाली नहीं बनना। भाषण करने वाली नहीं बनना। साथ-साथ नॉलेज की लाइट-माइट, संकल्प, बोल और कर्म में हो। कुमारियों से तो बापदादा का विशेष प्यार है। क्यों? अपने जीवन का फैंसला कर लिया। कर लिया है या करना है? अच्छी तरह से सोच लिया या वहाँ जाके सोचेंगी? पक्का सोच लिया है तो मुबारक हो। देखो इतने हैण्डस तैयार मिलेंगे आपको। जो कुमारियाँ ट्रेनिंग कर रही हैं वह हाथ उठाओ। कितनी संख्या है? (80) जो अभी सेवा में नहीं लगी हुई हैं, सेन्टर नहीं सम्भालती हैं, वह हाथ उठाओ। गिनती करो, आधे हैं। अच्छा इतने हैण्ड तो मिलेंगे ना। राइट हैण्ड या लेफ्ट हैण्ड? राइट हैण्ड बनेंगे ना! अच्छा है। कुमारियाँ हैं ना तो बापदादा कुमारियों को सेन्टर का घर भी देता है और वर तो मिला ही है। हमेशा घर और वर दो चाहिए। कुमारियों को वर तो मिल गया, अभी घर भी मिलेगा, सेन्टर मिलेगा। कुमारों को भी मिलता है। कुमार समझते हैं हम पीछे क्यों। पीछे नहीं आगे हो। कुमारों के बिना भी सेवा कहाँ चलती है। कोई भी सेन्टर पर देखो, अगर हार्ड वर्कर कुमार नहीं हो तो बहनें कुछ नहीं कर सकती। दोनों ही जरूरी हैं। इसीलिए पाण्डवों का भी नाम है तो शक्तियों का भी नाम है। दोनों का नाम है।

(04-11-2001)

कुमारियों से:- कुमारियाँ हाथ हिलाओ। कुमारियाँ भी बहुत हैं। अभी साधारण कुमारियाँ तो नहीं हो। अभी आप सभी सु-कुमारियाँ बन गई हैं, श्रेष्ठ कुमारियाँ बन गई हैं। कुमारियों के लिए बापादादा को एक दिल में उमंग हैं, सुनायें! कुमारियाँ सुनेंगी? कुमारियों के लिए गायन हैं - 21 पीढ़ी तारने वाली हैं, तो बापदादा कहते हैं, इस वर्ष में हर एक कुमारी 21 छोड़ो लेकिन एक-एक कुमारी एक-एक वारिस क्वालिटी निकाले, हो सकता है। है हिम्मत? कितनी कुमारियाँ होंगी? (लगभग 1000) तो इस वर्ष में हजार वारिस तो पैदा हो जायेंगे। (हाँ जी) इनएडवांस मुबारक हो। अभी वारिसों की माला बनायेंगे। मिक्स माला तो आता

रहता है। अभी वारिसों की माला बनायेंगे। ठीक है? पहले यह ट्रेनिंग दादियों से लेना कि वारिस किसको कहा जाता है? वारिस क्वालिटी की क्वालिफिकेशन कौन-सी है? समझा। तो इस वर्ष में एक-एक, एक वारिस निकले, फिर बापदादा वारिसों की माला बनायेंगे। इस वर्ष में कोई नवीनता करेंगे ना! तो वारिस पैदा करेंगे। दिल्ली भी करेगा, तो सब करेंगे। करना ही है? और करना क्या है? यही तो करना है। अभी देखेंगे जो भी वारिस तैयार करे वह मधुबन में अपना समाचार लिखना, दादी वारिस आ गये। ठीक है कुमारियाँ? हाँ जी तो कहो।

(31-12-2001)

अभी कुमारियों की सेरीमनी है। बहुत अच्छा लग रहा है। उठ जाओ। गुलदस्ता हिलाओ। बैठ जाओ। सभी ने देख लिया। कुमारियों के ऊपर तो बापदादा को सबसे ज्यादा नाज़ है। कुमारियाँ और डबल फारेनर्स कुमारियाँ 110 निकलें, यह बापदादा को बहुत अच्छा लग रहा है। पदम-पदम-पदम गुणा मुबारक है, कुमारियों को। अच्छा। कुमारियों से बापदादा का वैसे पर्सनल विशेष प्यार है। क्यों? कारण बापदादा समझते हैं कि विदेश में रहते कुमारी सुकुमारी बन गई, बच गई, कितनी बातों से बच गई। तो कुमारियों का बचना, बापदादा को बहुत अच्छा लगता है और देखो कुमारियों से विशेष प्यार है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि कुमारी को पहले-पहले सबसे जल्दी दहेज मिलता है सेन्टर। इसमें देखो कितनी टीचर्स हैं सेन्टर्स सम्भालने वाली, इसमें जो कुमारियाँ सेन्टर सम्भालने वाली हैं, वह उठो। आपको तो वर, घर, दहेज सब मिल गया। तो विशेषता है ना कुमारियों की! बापदादा को खुशी होती है, एक-एक कुमारी को क्लास में अपना परिचय देना है, मैं कौन! और पक्की स्टैम्प लग जायेगी ना! तो बापदादा को कुमारियों का संगठन बहुत प्यारा लगता है। एक-एक कुमारी कितने परिवारों का कल्याण करेगी। इन्डिया में कहते हैं कुमारी वह जो 21 कुल का कल्याण करे। बापदादा कहते हैं कुमारी, ब्रह्माकुमारी वह जो आत्माओं के 21 जन्मों का कल्याण करे। बहुत

अच्छा किया। इनकी टीचर्स कौन हैं? कुमारियों की टीचर्स कौन? डबल फारेनर्स जो भी हैं, उन्हों ने सेवा कराई। बहुत अच्छा किया और बापदादा ने रिजल्ट देखी है, अच्छे उमंग-उत्साह से किया है और कराने वालों ने भी कराया है। इसीलिए पास हो, मुबारक हो।

(24-02-2002)

कुमारियाँः- झलक फलक है? अच्छा है, सभी उठो, खड़े हो जाओ। (कुमारियाँ लाल पट्टा लगाकर बैठी हैं, जिस पर लिखा है एकव्रता) सुन्दर लगता है ना। एकव्रता का अर्थ ही है प्युरिटी की रॉयल्टी। तो एकव्रता का पाठ पक्का कर लिया है! वहाँ जाकर कच्चा नहीं कर लेना। और कुमार ग्रुप उठो। कुमारों का ग्रुप भी अच्छा है। कुमारों ने दिल में प्रतिज्ञा का पट्टा बांध लिया है, इन्हों ने (कुमारियों ने) तो बाहर से भी बांध लिया है। प्रतिज्ञा का पट्टा बांधा है कि सदा अर्थात निरंतर प्युरिटी की पर्सनालिटी में रहने वाले कुमार हैं। ऐसे हैं? बोलो जी हाँ। ना जी या हाँ जी? या वहाँ जाकर पत्र लिखेंगे थोड़ा-थोड़ा ढीला हो गया। ऐसे नहीं करना। जब तक ब्राह्मण जीवन में जीना है तब तक सम्पूर्ण पवित्र रहना ही है। ऐसा वायदा है? पक्का वायदा है तो हाथ हिलाओ। टी.वी. में आपके फोटो लिक रहे हैं। जो ढीला होगा ना उसको यह चित्र भेजेंगे। इसलिए ढीला नहीं होना, पक्का रहना।

(25-10-2002)

कुमार-कुमारियाँः- कुमार और कुमारियाँ, तो आधा हाल कुमार-कुमारियाँ हैं। शाबास कुमार-कुमारियों को। बस कुमार-कुमारियाँ ज्वाला रूप बन - आत्माओं को पावन बना देने वाले। कुमार और कुमारियों को तरस पड़ना चाहिए, आज के कुमार और कुमारियों पर, कितने भटक रहे हैं। भटके हुए हमजिन्स को रास्ते पर लगाओ। अच्छा, जो भी कुमार और कुमारी आये हैं उनमें से इस सारे वर्ष में जिस आत्माओं को सेवा में आप समान बनाया है वह बड़ा हाथ

उठाओ। कुमारियों ने आप समान बनाया है? अच्छा प्लैन बना रही हैं। यह हॉस्टेल वाली हाथ उठा रही हैं। अभी सेवा का सबूत नहीं लाया है। तो कुमार और कुमारियों को सेवा का सबूत लाना है। ठीक है!

(14-11-2002)

कुमारियों से:- कुमारियाँ उठो - कुमारियाँ भी बहुत हैं। जो सेन्टर पर रहती हैं वही नहीं, जो सेन्टर पर नहीं रहती हैं, वह उठो। तो इन सब कुमारियों का लक्ष्य क्या है? नौकरी करनी है या विश्व की सेवा करनी है? ताज सिर पर रखना है या टोकरी रखनी है? क्या रखना है? देखो, सब कुमारियों को रहमदिल बनना है। विश्व की आत्माओं का कल्याण हो जाए, कुमारियों के लिए गायन है 21 कुल का उद्धार करने वाली, तो आधाकल्प 21 कुल हो जायेंगे। तो ऐसी कुमारियाँ हो? जो 21 कुल का कल्याण करेंगी वह हाथ उठाओ। एक परिवार का नहीं, 21 परिवारों का। करेंगी? देखो आपका नाम नोट होगा और फिर देखा जायेगा कि रहमदिल है या कोई हिसाब-किताब रहा हुआ है? अभी समय सूचना दे रहा है कि समय के पहले तैयार हो जाओ। समय को देखते रहेंगे तो समय बीत जायेगा। इसीलिए लक्ष्य रखो कि हम सभी विश्व कल्याणी रहमदिल बाप के बच्चे रहमदिल हैं। ठीक हैं ना? रहमदिल हो ना! रहमदिल और बनो। थोड़ा और तीव्रगति से बनो। कुमारियों को तो बाप का बहुत सहज तख्त मिलता है। देखेंगे नये वर्ष में क्या कमाल करके दिखाती हो।

(30-11-2002)

कुमारियों से:- कुमारियाँ भी बहुत हैं लेकिन कौन-सी कुमारियाँ हो? 21 जन्म तारने वाली कुमारियाँ हो या बंधन वाली कुमारियाँ हो? कुमारी वह जो आत्माओं के 21 जन्म श्रेष्ठ बनाये। कुमारियों की यह महिमा है। अगर बंधन भी है नौकरी का या संबंध का, तो भी कुमारी शक्ति है। अपने योग की शक्ति से अपने

को निर्बन्धन बना सकती है। बापदादा यह नहीं कहते कि नौकरी नहीं करो, लेकिन नौकरी करते हुए डबल नौकरी, सेवा करो। फारेन की यह विशेषता है, बापदादा ने फारेन में यह विशेषता देखी है। जॉब भी करते, सेन्टर भी सम्भालते, इसलिए बापदादा ऐसे बच्चों को डबल मुबारक देते हैं। सरकमस्टांश हैं तो बापदादा मना नहीं करते, लेकिन बैलेन्स। तो ऐसी कुमारियाँ हो? सेन्टर खोलें, सेन्टर सम्भालेंगी? इतनी कुमारियाँ मिलेंगी! सेन्टर खोले? हाथ उठाओ जो हाँ करती हैं, ऑर्डर करें सेन्टर खोलो, जायेंगी सेन्टर पर? थोड़े हाथ उठा रहे हैं। देखना टी.वी. में आपका फोटो आ गया। अच्छा। हिम्मत वाली है। हिम्मत से बाप की मदद मिलती है। अच्छा, मुबारक हो। सेन्टर पर आने की मुबारक हो।

(15-12-2002)

अहमदावाद से ट्रेनिंग की कुमारियाँ आई हैं:- कुमारियाँ क्या सोच रही हैं? कुमारियाँ तो बहुत लक्की हैं। सरेण्डर हुई और दीदी कहलाई। और देखो कितना भाग्य है जो टीचर बनने से बापदादा के मुरली सुनाने का तख्ता मिलता है। गुरू की गद्दी मिलती है। बापदादा टीचर्स को कहते ही हैं गुरूभाई हैं। तो ऐसे बनेंगी ना! अभी ट्रेनिंग कर रही हैं, या पूरी कर ली? पूरी हो गई। अभी सेन्टर्स पर रहती हैं, मुबारक हो। देखो ऐसी टीचर्स बनना जो सभी कहें टीचर है तो यह! निःस्वार्थ सेवाधारी टीचर। टीचर्स तो बहुत हैं लेकिन आप ऐसी टीचर बनना, निःस्वार्थ सेवाधारी। निर्माण और निर्मलचित्त। ऐसे बनेंगी ना! उमंग अच्छा है। उमंग भी है, उत्साह भी है, सफल होंगे नहीं लेकिन हुए पड़े हैं।

(17-03-2003)

बापदादा को खुशी होती है और इस ग्रुप में सभी की संख्या अच्छी आई है। कुमारों की संख्या भी अच्छी आई है। देखो, कुमार अपने हमजिन्स को जगाओ। अच्छा है। कुमार यह कमाल दिखावें कि स्वप्न मात्र पवित्रता में परिपक्व

हैं। बापदादा विश्व में चैलेन्ज करके बताये कि ब्रह्माकुमार यूथ कुमार, डबल कुमार हैं ना। ब्रह्माकुमार भी हो और शरीर में भी कुमार हो। तो पवित्रता की परिभाषा प्रैक्किल में हो। तो ऑर्डर करें, आपको चेक करें पवित्रता के लिए। करें ऑर्डर? इसमें हाथ नहीं उठा रहे हैं। मशीनें होती हैं चेक करने की। स्वप्न तक भी अपवित्रता हिम्मत नहीं रखे। कुमारियों को भी ऐसा बनना है, कुमारी अर्थात पूज्य पवित्र कुमारी। कुमार और कुमारियाँ यह बापदादा को प्रोमिस करें कि हम सभी इतने पवित्र हैं जो स्वप्न में भी संकल्प नहीं आ सकता, तब कुमार और कुमारियों की पवित्रता सेरीमनी मनायेंगे। अभी थोड़ा-थोड़ा है, बापदादा को पता है। **अपवित्रता की अविद्या हो क्योंकि नया जन्म लिया ना। अपवित्रता आपके पास्ट जन्म की बात है। मरजीवा जन्म, जन्म ही ब्रह्मा मुख से पवित्र जन्म है। तो पवित्र जन्म की मर्यादा बहुत आवश्यक है।** कुमार कुमारियों को यह झण्डा लहराना चाहिए। पवित्र हैं, पवित्र संस्कार विश्व में फैलायेंगे, यह नारा लगे। सुना कुमारियों ने। देखो कुमारियाँ कितनी हैं। अभी देखेंगे कुमारियाँ यह आवाज फैलाती हैं या कुमार? ब्रह्मा बाप को फालो करो। **अपवित्रता का नाम निशान नहीं, ब्राह्मण जीवन माना यह है। माताओं में भी मोह है तो अपवित्रता है। मातायें भी ब्राह्मण हैं ना। तो ना माताओं में, ना कुमारियों में, ना कुमारों में, ना अधरकुमार-कुमारियों में। ब्राह्मण माना ही है पवित्र आत्मा। अपवित्रता का अगर कोई कार्य होता भी है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहुत कड़ी है। ऐसे नहीं समझना यह तो चलता ही है। थोड़ा बहुत तो चलेगा ही, नहीं। यह फर्स्ट सबजेक्ट है। नवीनता ही पवित्रता की है। ब्रह्मा बाप ने अगर गालियाँ खाई तो पवित्रता के कारण। हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। अलबेले नहीं बनो इसमें। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेण्डर है, चाहे सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है, इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियाँ कहाँ भी हो, मधुवन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट,**

संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है। गीत गाते हो ना - पवित्र मन रखो, पवित्र तन रखो..... गीत है ना आपका। तो मन पवित्र है तो जीवन पवित्र है इसमें हल्के नहीं होना, थोड़ा कर लिया क्या है! थोड़ा नहीं है, बहुत है। बापदादा आफीशियल इशारा दे रहा है, इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब-किताब अच्छी तरह से लेंगे, कोई भी हो। इसलिए सावधान, अटेन्शन। सुना - सभी ने ध्यान से। दोनों कान खोल के सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृष्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति दृष्टि क्या है! क्योंकि समय सम्पन्नता का समीप आ रहा है, बिल्कुल प्युअर बनने का। उसमें यह चीज तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है।

(15-11-2003)

इन्दौर कन्या छात्रावास की कुमारियों से:- कुमारियाँ अभी कमाल करेंगी या सिर्फ डांस करेंगी? अभी जितनी छोटी उतनी कमाल करके दिखाओ। छोटी कुमारी चैलेन्ज करे। अनुभव के आधार से चैलेन्ज करे तो सब लोग प्रभावित हो जाते हैं। अच्छा है अपने जीवन को सेफ तो कर लिया है। दुनिया के संग से बच गई हो। अभी आपस में ऐसे प्लैन बनाओ। कोई सेवा का नया प्लैन सोचो, छोटे होते भी कमाल का प्लैन बनाके दिखाओ। कर सकते हैं। देखो, जब स्थापना हुई तो छोटी-छोटी कुमारियों ने ही तो कमाल की ना। आप भी कोई कमाल का प्लैन बनाओ। अच्छा है। संग अच्छा है, वातावरण अच्छा है, सेफ्टी भी है, समय भी है, अभी प्लैन बनाना। ठीक है ना। बनायेंगी प्लैन? ऐसा प्लैन बनाओ जो बड़े तो बड़े रहें और छोटे सुभानअल्ला हो जाएं।

(15-1-2003)

कुमारियाँ से:- (कुमारियाँ उठो) कुमारियाँ भी हैं तो ब्रह्माकुमारियाँ भी हैं। वैसे भी कुमारी हैं और ब्रह्माकुमारी तो हैं ही। तो कुमारियाँ क्या करेंगी?

कमाल करके दिखायेंगी? अभी बापदादा सेवा के राइट हैण्ड हैं। राइट हैण्ड हो ना! अच्छा है कुमारियों को देख करके बापदादा बहुत खुश होते हैं कि यह कितनी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनेंगी। विश्व कल्याणकारी बनेंगी। बहुत अच्छा।

(05-03-2004)

इन्दौर हॉस्टेल तथा सभा में उपस्थित सभी कुमारियों से:- बहुत कुमारियाँ आई हैं, उनमें से हैण्डस कितने निकलेंगे? कुमारियाँ बापदादा के राइट हैण्डस बन सकती हैं। गोल्डन चांस है। तो कितनी संख्या है! मालूम है, कितनी कुमारियाँ हैं। (5-6 सौ) इन्हों का नाम नोट करना और यह रिजल्ट देखना कि इतनी सारी कुमारियों में से राइट हैण्ड कितनी बनी! हाथ उठाओ, सेन्टर पर रहने वाली नहीं उठाओ। जो राइट हैण्ड बनेंगी वह हाथ उठाओ। इन्हों का वीडियो निकालो। क्योंकि आप लोगों को मालूम है कि सेन्टर खोलने के निमंत्रण बहुत हैं लेकिन हैण्डस कम हैं। तो आपकी मांगनी है। इसलिए कुमरियों को जल्दी से जल्दी सेवा के राइट हैण्ड बनना चाहिए। जो छोटी-छोटी कुमारियाँ हैं उनकी बात छोड़ो लेकिन जो सेवा कर सकती हैं उन्हों को समय के प्रमाण जल्दी तैयार हो जाना चाहिए। दहेज आपका तैयार है, सेन्टर दहेज है, वर तो है ही ओर दहेज भी तैयार है। तो तैयारी करो। करेंगी ना! हाँ, बड़ी-बड़ी तो निकल सकती हैं। जो समझती हैं जल्दी से जल्दी निकल सकती है, वह हाथ उठाओ। देखो, कितनी कुमारियाँ हाथ उठा रही है। वीडियो निकल रहा है। अच्छा - मुबारक हो, इनएडवांस मुबारक हो।

(02-11-2004)

कुमारियों से:- एक-एक कुमारी 100 ब्राह्मणों से उत्तम गाई है। तो चेक करना जो गायन है हर एक कुमारी को कम से कम 100 ब्राह्मण जरूर बनाने पड़ेंगे। बनायेंगे? बनाना है। हाँ तो हाथ हिलाओ। कितने समय में बनायेंगे? समय

नजदीक है ना, तो आप बताओ कितना समय चाहिए? रिजल्ट भेजनी पड़ेगी। (एक साल में) एक साल! आपको एक साल कलियुगी दुनिया में रहना है! चलो आपके मुख में गुलाबजामुन। तो 6 मास में 50 बनाना, एक साल में 100, तो 6 मास में 50, 6 मास के बाद रिपोर्ट भेजना, पसन्द है? क्या नहीं कर सकते हो, जो चाहो वह कर सकते हो। अच्छा है कुमारियों का ग्रुप अच्छा है। बापदादा कुमारियों को देख विशेष खुश होता है क्योंकि कुमारियाँ सेवा में सहयोगी नम्बरवन बन सकती है। अच्छा। बहुत अच्छा किया है।

(07-03-2005)

इन्दौर-नडियाद हॉस्टेल की कुमारियाँ भी हैं:- नडियाद की थोड़ी हैं। नडियाद की कुमारियाँ ठीक हैं। स्व-उन्नति, सेवा की उन्नति दोनों ही हो रही हैं? अच्छा है, कुमारियाँ ट्रेनिंग करती हैं और ट्रेनिंग की कुमारियाँ आई हैं ना! नडियाद वाली भी आगे आ जाओ। अच्छा - इन सभी कुमारियों ने चाहे नडियाद में हैं, चाहे मधुबन में हैं, अभी तो मधुबन की हैं ना। तो सभी ने लक्ष्य पूरा रखा है? लक्ष्य क्या रखा है? सफलता मूर्त बनने का। समस्या नहीं बनना है, समाधान मूर्त बनना है। वायुमण्डल के प्रभाव में नहीं आना है। अपना प्रभाव वायुमण्डल के ऊपर डालना है, इतनी ताकत भरी है। आपको वायुमण्डल की मदद नहीं मिले तो क्या करेंगी? अपना वायुमण्डल दिखायेंगी? इतनी ताकत है? फिर तो ताली बजाओ, मुबारक हो। बहुत अच्छा, देखो आपका चित्र तो इसमें (वीडियों में) आ रहा है, फोटो निकल रहा है। तो बापदादा हर मास आपके निमित्त से रिपोर्ट लेगा। मुबारक भी देगा, क्योंकि सफलता मूर्त, सफलता के अधिकारी हैं। तो सफलता के अधिकारी बनना है ना। अच्छा है, अभी एक बात की तो मुबारक है जो हिम्मत रख करके आ गई। तो आपके हिम्मत के कदम पर बापदादा की पदमगुणा मदद है ही है। दिलशिकस्त नहीं होना, दिलखुश। अगर कोई भी समस्या आवे ना, तो उसी समय बाप के आगे रख देना, अपने दिल में नहीं रखना। बाबा आप लो, हम

तो समाधान स्वरूप हैं। ठीक है? अच्छी हिम्मत वाली हो, और हिम्मत सदा रखती रहना।

(15-11-2005)

इन्दौर होस्टेल की कुमारियां:- सभी कुमारियां 100 ब्राह्मणों से उत्तम गाई जाती हैं। साधारण कुमारियां नहीं, ब्रह्माकुमारियां। तो हर एक ब्रह्माकुमारी 100 ब्राह्मणों से उत्तम गाई जाती है तो आप कुमारियों ने कितने स्टूडेन्ट तैयार किये हैं! वारिस नहीं पूछ रहे है, वारिस पीछे पूछेंगे, स्टूडेन्ट कितने तैयार किये हैं या अपने को ही तैयार कर रहे हैं? बोलो, आपकी टीचर कहाँ है! (हॉस्टल की टीचर, करूणा बहन, शकुन्तला बहन) आगे आओ। अच्छा कितने स्टूडेन्ट तैयार हुए हैं। (कई कुमारियां, ब्रह्माकुमारियां बनी हैं, उनके माता पिता भी ज्ञान में आ जाते हैं) कितने स्टूडेन्ट बने हैं, एवरेज बताओ। अच्छा है, कुमारियां तैयार होके सेन्टर सम्भालेगी ना, कि नौकरी करेंगी? जो सेन्टर सम्भालने के लिए तैयार हो रही हैं, वह हाथ उठाओ। यह बहुत हैं। तो इन्हों की ट्रेनिंग कब पूरी होगी! (अभी पढ़ाई चल रही है) कब तक पढ़ेगी? जिसका ग्रेजुएशन पूरा हुआ है वह हाथ उठाओ। 3-4 हैं, यह 3-4 ही सेन्टर सम्भालेगी या नौकरी करेंगी या दोनों करेंगी! (ओम प्रकाश भाई ने सुनाया - अभी तक लगभग 450 कुमारियां ऐसी हैं, जो पढ़कर सेन्टर सम्भाल रही हैं) फिर तो अच्छा है। अच्छा है, हैण्डस तो बनते हैं, तो टीचर्स को मुबारक हो। आप जो भी आई हो, वह पुरुषार्थ में संतुष्ट हो? अपने पुरुषार्थ में संतुष्ट हो, पढ़ाई में संतुष्ट हो? हाँ या अभी नई नई हैं! खुश रहती हैं, संतुष्ट रहती हैं? अच्छा हैण्डस तैयार करो क्योंकि समय कम है, सेवा बहुत है। सेवा बहुत-बहुत रही हुई है। आपका गीत भी है, समय की पुकार का प्रोग्राम भी करते हो ना, तो समय की पुकार टीचर्स की बहुत है। इसलिए जल्दी-जल्दी तैयार करो। अच्छा - खुश रहना और खुशी से उड़ती रहना।

(16-11-2006)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414007497, +919414150607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com